यह बस्ती यह लोग

उप

लेखक
हरिदत्त शर्मा

प्रकाशक
नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़
दरीबा कलाँ, दिल्ली।
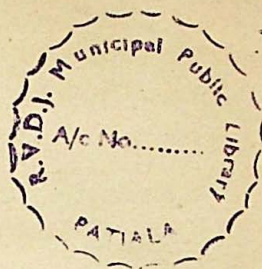
समर्पण

अपनी स्व० ममतामयी मातामही

की पुण्यस्मृति में

सादर समर्पित

जिन्होंने

मुझे जीवन में सबसे पहली बार यह सिखाया कि हाथ परमात्मा का स्वरूप हैं, और काम उसकी भक्ति का सुंदर प्रतिरूप।

व्यक्तित्व-दर्शन

श्री हरिदत्त शर्मा से मेरा परिचय साहित्यिक से अधिक एक व्यक्ति के रूप में है और इस व्यक्ति को मैंने एक कक्षा में बैठे हुए विद्यार्थी से लेकर आज तक देखा है, जबकि वह सामाजिक जीवन के हर विभाग में तीव्र अनुभूति लेकर अपने तौर पर इस सामाजिक रंगमंच के एक समर्थ एवं उद्‌बुद्ध पात्र बन चुके हैं और इतना कहूँगा—कि एक अध्येता हैं। "यह बस्ती यह लोग" के पात्रों में उनके जीवन की वह विभिन्न अनुभूतियाँ संश्लिष्ट हैं, जो अनेक मोड़ों से गुजरते हुए उन्हें प्राप्त हुई हैं।

बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि शर्मा जी को जो कि एक प्रबुद्ध पत्रकार और तरुण राजनीतिज्ञ के रूप में अपने आसपास के एक सुपरिचित व्यक्ति बन चुके हैं—विरासत में कर्मकाण्ड मिला था। एक कर्मकाण्डी की हैसियत से उन्हें समाज के अंधविश्वासों और जर्जर प्रायः सामाजिक परम्पराओं को निकट से अध्ययन करने का और सामाजिक सत्यों का निरूपण करने का पूरा-पूरा अवसर मिला है।

सम्भवतः उनका अन्तरस्थ मानव उस स्थिति से कभी सन्तुष्ट नहीं रह सकता था। उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा के बल पर समाज में एक चेतन नागरिक की हैसियत से अपना स्थान खोज लेने की कोशिश की। इस तरह आज की उपलब्धियों से वर्षों पूर्व उनकी यह रथ-यात्रा प्रारम्भ हुई थी, जिसमें उल्लेखनीय और अनुल्लेखनीय अनेक घटनाएं अन्तर्हित हैं। दिल्ली के जीवन में उन्हें लोगों ने सर्वप्रथम एक पत्रकार तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के रूप में जाना। आज वह बौद्धिक विकास की उस मंजिल पर हैं जहाँ उनके लिए अनेक रास्ते खुले हुए हैं। नेता, सामाजिक कार्यकर्त्ता, पत्रकार, विचारक किसी भी सरिणि से उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति हो सकती है और समर्थ रूप में हो सकती है। परन्तु इस

अनिर्णीत विकास युग में जहाँ जीवन-सत्यों का निरूपण अभी होना है, उन्होंने साहित्य को ही अभिव्यक्ति का साधन स्वीकार किया—यह एक हर्ष का विषय है।

अनेक बार व्यक्ति को अधिक निकट से जानने की स्थिति में यदि कोई होता है तो उसके कृतित्व का उचित आकलन करना सहज नहीं होता। सम्भवतः यह दोष मेरा भी बने कि मैं इस दुर्बलता से अपने को ऊपर न उठा सकूं। पिछले प्रायः २५ वर्षों से हमने दुनिया को साथ-साथ एक नजर से और एक ढंग से देखा और सुना है, और सम्भवतः दृष्टिकोण भी एक ही रखा है। वह धरती भी एक ही है जिस पर हमने जन्म लिया है। पर इस एकता में जो अनेकता रही है शायद उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में मिलेगी। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि साहित्यिक अभिव्यक्ति के पथ पर अग्रसर होने से पूर्व साहित्यकार को जो कुछ अर्जित करना होता है, सामाजिक संघर्ष के माध्यम से, उस अनुभव की सम्पदा से ये पूरी तरह सम्पन्न हैं और पूरे हक के साथ इस क्षेत्र में प्रविष्ट हैं।

महावीर अधिकारी

अपनी बात

"यह बस्ती, यह लोग" कपड़ा मजदूरों के आन्दोलन की गौरवमयी गाथा है। रात-दिन परिश्रम करने के बाद भी ये लोग गंदी बस्तियों और आर्थिक दुरवस्था में रहते हैं। ये अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। भारत में कपड़ा मजदूरों के आन्दोलनों का बड़ा ज्वलंत इतिहास है। ऐसे ही एक ऐतिहासिक आन्दोलन की कहानी पाठकों की सेवा में अर्पित है। घटना सत्य है, पात्र काल्पनिक।

उपन्यास के नारी-पात्र नारीत्व की सबल भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। नारी का हीन रूप उनमें नहीं।

इस उपन्यास की पांडुलिपि को प्रकाश में लाने में मेरे मित्र श्रीकृष्ण गुप्त का बड़ा हाथ है। मेरे व्यस्त जीवन में लिखने-पढ़ने का अवकाश कम है। उन्होंने इस पांडुलिपि को मेरी अलमारी से निकालकर मुझे इसके प्रकाशन के लिए कृतसंकल्प कर ही दिया। प्रकाशक नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़ भी मेरे साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने उल्टी-सीधी लिखी पांडुलिपि लेकर तथा मेरी व्यस्तता जन्य अनेक असुविधाएं उठाकर भी इसके प्रकाशन की शीघ्र व्यवस्था की।

दिल्ली में गंदी बस्तियों के सुधार के प्रथमव्रती मेरे कृपालु मित्र श्री हरस्वरूप शर्मा और इस कार्य में उनके सहयोगी श्री जमनादास 'अख्तर,' डा० शेरसिंह अनहल, श्री वंसीलाल चौहान, सदस्य नगरनिगम, श्री रघुनाथ प्रसाद और श्री धनराज सहगल भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने मुझे गंदी बस्तियों के सुधार कार्य में लगाकर वहां की दयनीय स्थिति देखने का अवसर दिया। इसके बाद इस जीवन को देखने का अवसर कलकत्ता, कानपुर और बम्बई आदि उद्योग प्रधान नगरों में भी मिला। कपड़ा मजदूरों के जीवन का आर्थिक और राजनीतिक पक्ष मैंने

गुरु राधाकिशन, सदस्य नगर निगम, कामरेड रामचन्द्र शर्मा, बाबा रामचंदर, जगदीश प्रसाद शर्मा, चंद्रप्रकाश शर्मा, बनतासिंह आदि कर्मठ मजदूर कार्यकर्ताओं के सान्निध्य में देखा है। इस सम्बन्ध में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महामंत्री श्री ब्रजमोहन भी धन्यवादार्ह हैं।

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड द्वारा प्रकाशित 'समाज कल्याण' के संपादक श्री महावीर अधिकारी, प्रसिद्ध पत्रकार श्री फतहचंद शर्मा 'आराधक' और ख्यातनामा लेखक श्री हंसराज 'रहबर' के प्रति भी मुझे कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहिए, जो मेरे टूटे-फूटे साहित्यिक और सांस्कृतिक कर्मों में मेरे अनन्य कृपालु सहयोगी रहे हैं।

पोलैंड के राजदूत की पत्नी डा० एलिज़ा बेथ काटशूही, श्री ग्रेस डा० हसन तथा श्रीमती मनमोहिनी सहगल एवं श्रीमती जे. एन. सहाय को भी मुझे धन्यवाद अर्पित करना चाहिये, जिनके साथ गंदी और मजदूर बस्तियों में जाकर मैंने नारी-मंगल-कार्यों का अवलोकन किया है।

लेखन-कार्य बड़ा कठिन है, यह मुझे नहीं आता। महलों और झोंपड़ों की कशमकश की यह कहानी यदि पाठकों को पसन्द आई और युग की गतिशील शक्तियों की इससे कुछ अर्चा हुई, तो मैं अपने इस छोटे प्रयत्न को सार्थक मानूंगा।

अन्त में दीन-हीन जनता की उठती-उभरती शक्ति को मेरा प्रणाम। यह शक्ति लोकप्रिय है, देवप्रिय है :

बोसे मेरी निगाह के, हूरों ने ले लिये।
देखा था इक यतीम को कल मैंने ख्वाब में।

—हरिदत्त शर्मा

१

★★★★

"हलो, हां जी। मैं श्यामकिशन।"

"लाश पोस्ट मार्टम को गई। मजदूर और दूसरे लोग भी मिल गेट से चले गये। अब कोई खतरा नहीं।"

"जी नहीं, झगड़ा नहीं कर सके।"

"मैं क्या हूँ, सब आपका आशीर्वाद है।"

"हाँ जी, कोई बात हुई तो मैं फ़ौरन आपको सूचना दूंगा। मिल की हिफ़ाज़त का पूरा प्रबन्ध कर दिया है।"

"जी हां, जी हां, अच्छा जी, नमस्ते श्रीमान् सेठ जी।"

फोन बन्द करने के बाद मैनेजर श्यामकिशन इस फोन वाले कमरे के पिछले हिस्से में बने तीसरे कमरे में चला गया। इस कमरे में लगी खिड़कियां यदि बन्द रहें तो यहां दिन में भी अंधेरा हो जाता है। कमरे के बीचाबीच सिर्फ एक तख्त पड़ा है, जिस पर एक मुलायम गद्दा बिछा है। इस पर मैनेजर आवश्यकता अनुभव होने पर आराम करता है। तख्त के सामने वाली दीवार पर दो बड़े-बड़े चित्र हैं। इसमें एक लक्ष्मी-गणेश का है। दूसरे चित्र में एक खूंखार शेर की हाथियों के झुंड से लड़ाई दिखाई गई है।

श्यामकिशन ने कमरे में आकर स्विच दबाकर रोशनी की। लक्ष्मी-गणेश के चित्र को कुछ देर तक देखता रहा और फिर धीमे-धीमे बोला "मैं लक्ष्मी का धन और गणेश का बुद्धि वैभव लूंगा।" महत्त्वाकांक्षा की

चमक उसके चेहरे पर आ गई। इसके बाद उसकी दृष्टि दूसरे चित्र की ओर गई। शेर शान से पर्वतों जैसे डील-डौल वाले हाथियों के सामने विजय-भावना से भरा खड़ा है। देखकर श्यामकिशन हौसले से भर गया: पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी : (सिंह जैसा साहसी पुरुष ही लक्ष्मी को प्राप्त करता है।) वह मुस्कराया, फिर हँसा और मुक्का तानकर बोला, 'शंकर, संभल कर रहना। श्यामकिशन का दाव लगते ही चारों खाने चित्त आओगे।"

विजय-भावना से वह बाहर आया। अगले कमरे में आकर उसने एक अलमारी खोली और एक बोतल निकाली। पैग लगाया और कमरे में टहलने लगा। इतने में फ़ोन की घंटी आई तो उसने अगले कमरे में फ़ोन सुना और दूसरी तरफ़ के व्यक्ति को आ जाने की आज्ञा दी।

थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति मैनेजर के कमरे में आया। उसका क़द लम्बा था, शरीर दुबला-पतला। निगाहों में ख़ामोशी थी और पेशानी पर परेशानी। फिर भी उसने चेहरे से इन भावों को हटाने की कोशिश करते हुए मैनेजर को अभिवादन किया।

"आओ, वीरभानुजी।" श्यामकिशन ने उसके चेहरे की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। फिर पूछा, "क्या रिपोर्ट है ? मिलगेट पर कौन-कौन बोला था ?"

"आदमी तो लगाये थे, अभी रिपोर्ट नहीं ले सका। आध घण्टे में रिपोर्ट देता हूँ।" वीरभानु उठने लगा।

"बैठो, बैठो" श्यामकिशन के पतले होठों पर हँसी खेल गई।

"अभी सेठ जी का फ़ोन आया था, तुम्हारी बड़ी तारीफ़ कर रहे थे।"

श्यामकिशन ने देखा कि वीरभानु झेंप गया है। उसने इससे एक नई कहानी अंदाज़ी और फ़ौरन कहा, "सेठ जी कहते थे कि दंगे पर वीरभानु गुप्त ने बड़ी अक़्लमन्दी से क़ाबू पा लिया।"

"वाह, मैंने क्या किया ? वह तो आपने ही नियंत्रित किया था और फिर पुलिस भी आ गई थी।" वीरभानु ने अपने घुटनों में दोनों हाथ छिपा कर दोनों पंजे जकड़ लिये।

"यह बात नहीं, सेठ जी ग़लत नहीं कह सकते।" श्यामकिशन ने पंजों की हरकत भांप कर तीर छोड़ दिया।

"सेठ जी का शाम फ़ोन आया था, मैंने उन्हें बता दिया था कि मैनेजर साहब ने स्थिति का मुक़ाबला साहस से किया है।"

"ठीक" श्यामकिशन की मुस्कराहट भरी वाणी में व्यंग्य था। उसने फिर अंगड़ाई ली, जमुहाई ली, मानों प्रसंग बदला हो और धीमे से आदेश दिया : "लाला कण्टकराम जी "कण्टक" को बुला लाओ।"

"अभी रामधन को भेजता हूँ।" वीरभानु ने अपने पद की प्रतिष्ठा करनी चाही।

"तुम्हीं जाओ, उन्हें आदर से लाना है। मेरी कार ले जाओ।" वाणी में आदेश की पुट बहुत कम थी; आग्रह उभर आया था।

वीरभानु चला गया। वह सोचता जा रहा था : "आदमी है या क्या है ? रिन्द है पूरा। सेठ जी भी बड़े वैसे हैं कि सब कुछ बता दिया। खैर, लगा हूँ किनारे से कभी तो लहर आयेगी। मैं अर्थशास्त्र और राजनीति में फर्स्ट क्लास एम. ए. और यह कुल मैट्रिक। मैं सहायक मैनेजर और यह जनरल मैनेजर। सरासर अंधेर।" वीरभानु के जाने पर श्यामकिशन हंसा : "पागल ! श्यामकिशन के मुंह लगने चला है। एक ही झटका दिया तो नीचे आया।"

वह उठ खड़ा हुआ। देखा—घड़ी में सवा आठ बजे हैं। वह चहल कदमी करने लगा और बीच में ही अचानक वह "वाह" कह कर रुक गया। उसने चुटकी बजाई और झट टेलीफ़ोन के पास पहुँचा।

"गिरीश जी हैं।"

',देखिये, मैं श्यामकिशन बोल रहा हूँ।"

"इधर तशरीफ़ लाइयेगा।"

"मोटर भेज रहा हूँ। सुनिये, साथ में मेरा बयान है, आपके जहन में यह हमारा पक्ष साफ कर देगा। टाइपिस्ट भी भेज रहा हूँ। देखिये खबर बनाकर पन्द्रह-बीस कापी टाइप करा लीजिये।"

"जब आयेंगे तब सारी बात बताऊंगा। यों ही सर दर्द। अच्छा मोटर भेज रहा हूँ।"

श्यामकिशन फ़ोन करके बैठा ही था कि नौकर ने आकर कहा, "साहब, आपका अन्दर खाने पर इन्तजार है।" श्यामकिशन ने घड़ी देखी—आठ-पच्चीस। कहा, "आज हम सिर्फ दूध लेंगे और देखो, रसोइये से कहना कि कुछ पकौड़ियां तैयार कर ले। उसके बाद चाय के लिये पानी रख ले। दो-तीन मेहमान आ रहे हैं। रामधन को मेरे पास भेजते जाना।"

रामधन आया, आदेश हुआ कि मेहमानों के लिये अच्छा बढ़िया चाय का प्रबन्ध कर ले।

रामधन जा ही रहा था कि हुक्म हुआ, "हमारे ड्राइवर को भेजते जाओ और हमारे टाइपिस्ट बाबू को भी।"

टाइपिस्ट और ड्राइवर आये और श्यामकिशन ने उन्हें समझा-बुझा कर गिरीश जी के यहां भेज दिया। वह अपने कमरे में चहल-क़दमी करने लगा। उसे बारम्बार वही ख़याल आ जाता था। वह चाहता था कि चहल-कदमियों से वह ख़याल छितरा जाय, पर ख़याल था कि तीर की तरह गड़ा था, हटाये न हटता था। उसने पैर पटका: "आख़िर हुआ क्या ? एक आदमी ही तो मरा है। नहीं, नहीं उसने शिकार किया है।" उसे शेर और हाथियों की लड़ाई वाले चित्र का ध्यान आ गया। वह जोश में भर गया : उसने हाथी का शिकार किया है। और तब वह अन्दर गया और उसने कई पैमाने चढ़ा लिये। शराब ने उसके विजय-भाव को और बढ़ा दिया। वह हंसने लगा, कहक़हा लगाकर हंसने लगा : "हाथी कब शेर का मुक़ाबला कर सके हैं ? काले-कलूटे मज़दूर, बेऔक़ात कहीं के ?

वह चहल-क़दमी करते-करते थक गया और फिर बैठ गया। बैठे-बैठे उसे ध्यान आया, सेठ जी के संकेत का। यदि उसने इस स्थिति को काबू कर लिया और मज़दूर आंदोलन को दबा दिया, तो उसके डायरेक्टर बनने की बड़ी संभावनाएं हो सकती हैं। इन संभावनाओं के रंगीन स्वप्नों में वह विहार करने लगा। उसका कितना उज्ज्वल भविष्य है !! बस मौक़ा है और बहादुर लोग मौक़ा अपने हाथ से नहीं जाने देते। उसे 'कण्टक' जी का ध्यान आया और ध्यान आते ही उसे कण्टक जी की प्रतीक्षा गहरी हो आई। एक-एक पल भारी गुज़रने लगा। वह दर्वाज़े तक जा पहुंचा और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि वीरभानु कण्टकजी को लेकर आ रहा है। खुशी की इन लहरों में डोलते हुए भी वह यह न देखना चाहता था कि वीरभानु के चेहरे पर ऐसा भाव है जैसे वह कोई क़िला फतह करके आया हो।

श्यामकिशन मुस्कराया और यही मुस्कराहट करवट बदल कर कंटक जी के स्वागत में फैल गई। उसने आगे बढ़कर कंटक जी से हाथ मिलाया: "आइये कंटक जी।" कंटक की औपचारिक हँसी कुछ ढीली पड़ गई। वह बायें हाथ से अपना दायां हाथ चुपचाप दाबने लगा। उसे आश्चर्य था कि दुबले-पतले आदमी का इतना मजबूत हाथ ! यह कंटक की पहली कूटनीतिक हार थी, जिसे श्यामकिशन की बराबर फैलती हुई मुस्कराहट अभिव्यक्त कर रही थी। कंटक इसे ताड़ गया, वह फौरन अधिक तेज़ी से मुस्कराया, मैनेजर की मुस्कराहट इस मुस्कराहट के सामने फीकी पड़ गयी। श्यामकिशन मुस्कराता तो रहा पर यह झेंप की मुस्कराहट हो गयी थी। वीरभानु इन मुस्कराहटों को सिर्फ़ स्वागत की मुस्कराहट ही समझ रहा था और इन मुस्कराहटों को अपने चेहरे पर समेटने की कोशिश कर रहा था। "तशरीफ रखिये" कोच की ओर श्यामकिशन ने सविनय इशारा कर दिया।

कंटक जी मुस्कराते हुए बैठे।

"कहिये कंटक जी मज़े में हैं।" श्यामकिशन की मुस्कराहट और गहरीं हो गई।

"मेहरबानी" ठण्डे लहजे से कंटक जी ने कहा। इधर का ठण्डा लहज़ा उधर की गर्मी को निगल गया।

"घर पर सब ठीक ?" प्रश्न स्वाभाविक था।

"जी, आपकी कृपा।" उत्तर जैसे व्यंग्य हो उठा।

श्यामकिशन ने घंटी बजाई, नौकर आया। आदेश हुआ कि चाय लाई जाय।

कंटक जी ने कहा, "मैनेजर साहब बड़ा तकल्लुफ़ बरतते हैं।"

"वाह, तकल्लुफ़ की भी खूब कही। लीडर क्या रोज़ रोज़ आते हैं।" श्यामकिशन मुस्कराया और वीरभानु ने मुस्कराहट को बल दिया, और फिर वातावरण में हँसी छागई।

इसी बीच जब चाय आई तो कंटक जी पकौड़ों को देखकर बोले, "तो आपको मेरी रुचि का मालूम है।" और मेज़बानों के कहने की प्रतीक्षा किये बिना उन्होंने पकौड़ों पर हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया। श्यामकिशन ने चाय का कप बनाकर दिया, तो शुक्रिया के साथ कंटक जी ने उसे ग्रहण किया। कंटक जी ने चाय 'सिप' करने के बाद कहा, "खूब चाय है।"

"आपके भाषण की तरह।" श्यामकिशन ने मौक़ा पाकर कह ही दिया।

कंटक जी हंस पड़े, लेकिन इस हंसी में वह अंदरूनी झेंप मिटा रहे थे। बोले, "मैं तो मीटिंग में आ भी नहीं रहा था।"

"नहीं, नहीं, क्या हुआ ? आये तो अच्छा ही किया। न आते तो सारी लीडरी विजय ले जाता। फिर इसके अलावा वह भाषण भी ग़लत करता है।" श्यामकिशन ने चाय को और भी पुरलुत्फ़ कर दिया। उसने वीरभानु को खिसक जाने का इशारा किया।

कंटक जी ने कहा, "श्यामकिशन जी, आपसे तो हमारी खुली बात

है। आपके विरुद्ध तो मैं बोल ही नहीं सकता था। मैं तो बोला तब जब विजय ने ज़हरीला भाषण दिया। वह न बोला होता तो मैं हर्गिज़ न बोलता।" कंटक जी के भावों में कड़वाहट आगई, जिसे उन्होंने चाय की मिठास और उससे भी अधिक रसगुल्ले की मिठास से दूर किया।

श्यामकिशन ने इसे भांप कर गुड़ जैसी और बात कही : "आप आपही हैं, वह वही है। वगुले और हंस का क्या मुकाबला ? विजय ने अपनी संस्था के पतन की बात कही। कंटक जी, अगर आप बुरा न मानें तो कहूँ कि यदि कोई और संस्था होती तो विजय को ऐसे भाषण पर फौरन निकाल देती। आखिर, अनुशासन भी तो कोई चीज़ होता है। हम तो आपकी संस्था के साथ रहे। हमेशा मुँह मांगा चंदा दिया। ऐसे ही वक्त होते हैं, जब हम आप लोगों से हमदर्दी की आशा करते हैं।"

"आप चिंता न करें, विजय के इस भाषण की शिकायत मैं प्रदेशीय और अखिल भारतीय नेताओं से करूँगा। ज़िला में भी इस सवाल को उठाऊँगा। इन लोगों ने समझ क्या रखा है।" कंटक जी ने गुलाबजामुन को मुँह में रख लिया।

"आपके दूसरे लोग भी ऐसे ही हैं। जितने वक्ता आपकी पार्टी के बोले, सबने हमें पानी पी पी कर कोसा।"

"अजी, क्या वक्ता, क्या न वक्ता ? न मौक़ा देखते हैं, न महल। बोलने चल देते हैं। जी चाहता है कि इनकी अधिक से अधिक बखिया उघेड़ी जाय। श्यामकिशन जी, मैं आपके साथ हूँ। बस अबके ज़िले पर तो पूरा कब्ज़ा कर लेना है। रुपया लगेगा, लगो।" कंटक जी ने तीर मारा, जिसे श्यामकिशन ने सँभाल लिया, "अजी, रुपये का क्या है ? हाथ का मैल है।"

× × ×

कोठी के मेन गेट के पास ही गिरीश को देखकर मैनेजर उठा।

"कंटक जी, अभी आया, क्षमा करें।"

श्यामकिशन दर्वाज़े की ओर बढ़ गया।

"हलो, गिरीश जी" श्यामकिशन ने तपाक से हाथ मिलाया और हाथ में हाथ डालकर एक अन्य कमरे में ले गया। गिरीश को एक कोच पर अपनी बग़ल में बैठाकर और मित्रों की भाँति कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"बोलो, क्या लोगे ? चाय या कहवा ?"

"मैं अभी कहवा लेकर आया हूँ। तकल्लुफ न करें।" गिरीश ने उत्तर दिया और घड़ी की ओर देख कर कहा, "देखिये ६-१० हो गये। यह रही खबर।"

श्यामकिशन ने ख़बर पढ़ी—"वाह, क्या बात पैदा की है ? तबियत चाहती है कि तुम्हें अपने दिमाग़ में बन्द करलूँ।"

गिरीश ने हँसते हुए कहा—"ऐसा न सोचें। दिमाग़ बड़ी नाज़ुक जगह है।"

श्यामकिशन भी हँस पड़ा। "भाई, बहुत अच्छे। ख़बर ज़ोरदार हो गई।"

श्यामकिशन ने जेब में से चाँदी का सिगरेट केस निकाला, गिरीश को सिगरेट पेश की, स्वयं भी एक सिगरेट मुँह में लगाई और सुलगाई।

"अच्छा देखिये,—एक इलाके के नेता हैं कंटक जी।"

"हाँ, हाँ मैं जानता हूँ उन्हें—वह ऐतिहासिक महापुरुष।"

श्यामकिशन ने मुस्कराते हुए कहा—"जी, वही। उनका एक वक्तव्य आप तैयार करदें। यह वक्तव्य हमारे पक्ष में होगा—दंगाइयों की निंदा, पुलिस और मिल का बचाव और यह कि मृतक रघुनाथ कम्यूनिस्ट था।"

"अच्छा जनाब, टाइपिस्ट बुलवाइये।"

टाइपिस्ट बुलवा लिया गया।

"और देखिये—देर हो जायगी हमें, आप अपने सेठ जी की ओर

से सब अख़बरों के दफ़्तरों तथा समाचार ऐजेंसियों को फोन कर दीजिये कि आज की घटना का सही विवरण भेजा जा रहा है।"

"सेठ जी की कोठी से करादूँ फ़ोन ?"

"नहीं, आप ही करदें। काफ़ी होगा।"

टाइपिस्ट आ गया कौर श्यामकिशन फ़ोन करने गया। वह ड्राइंग रूम में आया—कंटक जी ऊँघ रहे थे।

"कंटक जी, आपका वक्तव्य तैयार हो रहा है। अब आपसे हस्ताक्षर कराके उसे अखबारों में भेज देंगे।"

"अच्छा, कहाँ ?" कंटक जी में स्फूर्ति आगई।

"दूसरे कमरे में, मैं अभी आया। आपको कष्ट हो रहा है, क्षमा करें।"

"अजी, काहेका कष्ट।"

श्यामकिशन ने इधर अखबारों के दफ़्तरों को फ़ोन किये, उधर गिरीश ने वक्तव्य तैयार किया। श्यामकिशन लौटकर आया तो उन्हें वक्तव्य तैयार मिला। देखकर बोला—फ़ाइन।

कंटक जी को दिखाया तो प्रसन्न हुए। हस्ताक्षर करते हुए पूछने लगे कि कल सुबह के अखबारों में आ जायगा ?"

"जी हाँ, खयाल तो ऐसा ही है।"

श्यामकिशन वक्तव्य लेकर गिरीश के पास गया।

"यह टाइपिस्ट आपके साथ जायगा, आपको कष्ट तो होगा, आप ये ख़बर और वक्तव्य दिलवा आइये। मेरे अच्छे दोस्त गिरीश जी।" श्यामकिशन ने अनुनय के साथ कहा।

उसने गिरीश के कन्धे पर हाथ रखा, एक और सिगरेट पेश की और उसे अपने ही हाथों सुलगाया।

"मुझे कुछ और काम है, मि० श्यामकिशन ! यह टाइपिस्ट दे आयगा।"

"रहने दीजिये साहब, अच्छा यह बताइये कि आप परिवार सहित कल आ रहे हैं या परसों ? कल शाम आयें तो ठीक रहेगा, परसों तो दीवाली हो जायगी। श्रीमती जी बाज़ार गईं थीं, तमाम खिलौने, बच्चों की साइकिल और न जाने क्या अटरम सटरम ले आईं। कह रही थीं कि साइकिल गिरीश जी के बच्चों को दीवाली की भेंट में देंगे। कल शाम आइयेगा, अपनी मिसेज़ के साथ। गाड़ी भेज दूँगा।"

"अच्छा" गिरीश मजबूर था।

गिरीश को श्यामकिशन मोटर तक छोड़ने आया। चुपके से जेब में कुछ छोड़ा—गिरीश ने महसूस किया कि जेब में कुछ गर्मी आई है, जितनी आहिस्ता से श्यामकिशन ने गर्मी पहुँचाई थी, उतनी ही आहिस्ता से गिरीश ने उसे ग्रहण कर लिया।

मोटर में गिरीश को भेजकर श्यामकिशन ने संतोष की साँस ली। ड्राइंग रूम में आया तो कंटक जी सिगरेट के कश मार रहे थे।

"माफ़ करें, देर हो गई।"

"अजी, काम में हो ही जाती है।"

"मुझे मालूम न था कि आप सिगरेट पीते हैं, वरना शुरू में ही पेश करता।"

"अजी, कुछ नहीं। कभी-कभी पीता हूँ।"

"अब चलूँ ?"

"कैसे कहूँ ?"

दोनों हँस पड़े। श्यामकिशन ने घंटी बजाई। नौकर से कहा कि ड्राइवर को बुलाओ। ड्राइवर आया, उससे कंटक जी को घर छोड़

आने को कहा गया। दोनों ने हाथ मिलाये। हाथों में 'बहुत बड़ी गर्मी' आ गई। नमस्ते हुई।

कंटक जी को सादर विदा किया।

कंटक जी मुस्कराते हुए और जवाहर कट की जेबों में हाथ डाले हुए मोटर में बैठे और मैनेजर मुस्कराता हुआ और हाथ हिलाता हुआ ज़नानख़ाने में चला गया।

बाहर खूब अंधेरा छा गया था और हवा में ठंडक आ गई थी।

२

★★★★

"अख़बार वाला, अख़बाऽऽर—ताज़ा अख़बाऽऽर सब्ज़ी मण्डी की एक सूती मिल में गोली चली।"

"पुलिस की गोली से एक मज़दूर मरा, कई घायल, अख़बाऽऽर वाला।"

"गज़ब हो गया, पुलिस की गोली से गज़ब हो गया, अख़बाऽऽर।"

सारे शहर और विशेषकर मज़दूर-क्षेत्रों में तड़के ही अख़बार बेचने वाले हाकरों ने तरह-तरह की आकर्षक आवाज़ लगानी शुरू कर दीं। अख़बार इस तरह बिकने लगे जैसे हलवाइयों की दुकानों पर ख़स्ता कचौड़ियां बिकती हैं।

अपनी बस्तियों में मज़दूर गोल बांध-बांध कर अख़बार पढ़ने लगे। रघुनाथ की मौत की ख़बर मज़दूर कई-कई बार पढ़ रहे थे, पर ख़बर कुछ ऐसी उल्टी-सीधी थी कि उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह क्या हो गया।

बल्लू कारीगर 'दीन भारत' अख़बार ख़रीद कर विजय के पास ले गया। लो भय्या! रघुनाथ की ख़बर आ गई। बिस्तर में ही बैठे-बैठे विजय एक सांस में ख़बर पढ़ गया, पर निगाह उसकी वहीं जमी रह गईं।

"क्या हुआ, विजय भाई।"

"बल्लू दादा, ख़बर बहुत उल्टी आई है। लिखा है कि

रघुनाथ कम्युनिस्ट था, मज़दूरों ने मैनेजर के दफ़्तर पर हमला किया, पुलिस ने हस्तक्षेप किया तो उस पर भी ईंट-पत्थर फेंके और पुलिस को अपनी रक्षा में गोली चलानी पड़ी, जिससे रघुनाथ नामक कम्युनिस्ट मर गया और दो मज़दूरों को हल्की चोटें आई हैं। देखना बल्लू दादा, वह कण्टक है न, जो कल गेट पर बड़ी-बड़ी बातें बघार रहा था, उसने भी मज़दूरों के ख़िलाफ वक्तव्य दिया है। उसने भी रघुनाथ को कम्युनिस्ट कहा है।"

"हाय दैया, यह क्या उल्टी गंगा बही है। कंटक तो भय्या !...... कांटा निकला पूरा।" बल्लू ने आह भरते हुए कहा।

"हाय रघुनाथ भय्या, यह क्या हो गया। तुम्हारे मरने पर भी ज़ालिमों ने कीचड़ उछाली। इतना अन्धेर !" विजय की आँखों में आँसू आ गये, और वह धीरे धीरे सुबुकने लगा।

"रोते हो भैय्या, बुरी बात। रोना नहीं चाहिये। रोने से क्या बनता है ?......किसी दूसरे अखबार में ठीक खबर आई होगी। मैं दूसरा अखबार लाता हूँ।" बल्लू उठा कि कई कारीगर एक साथ आये। एक के हाथ में 'जन शक्ति' अखवार था, दूसरे के हाथ में "सिद्धान्त" था। किसी एक ने उर्दू का 'अक्ल' ले रखा था और किसी ने 'रोशनी' अखवार। पढ़ कर वे चकरा गये थे—आख़िर अख़बारों को हुआ क्या है ? अखबार वालों ने कहीं भाँग तो नहीं खा ली थी।

"भैया, तुम लोगों के अखबारों में क्या खबर है ?" बल्लू ने पूछा।

"सब में एक ही है।" एक ने उत्तर दिया।

"दीन भारत में तो बड़ी उल्टी आई है।"

"बस जो 'दीन भारत' में है, वही सब में है।" दूसरे ने अपनी एक जेब से 'दीन भारत' निकाला और दूसरी जेब से "जन शक्ति।"

मजदूर फिर से बैठ कर अपने अपने अखबारों से खबर को जोर जोर से पढ़ने लगे।

"भैया, बड़ा गज़ब है । एक एक लैन वोई ।" बल्लू ने कहा ।

विजय इस समय तक फूट निकला था । आँसू बह रहे थे । उसके दिल का बाँध टूट गया था ।

"चुप हो जा, विजय भाई" बल्लू चुप करने लगा । पर चुप करता करता वह भी रोने लगा, सबुकने लगा और फिर दहाड़ने लगा । बल्लू ने अपने जीवन की ७० बरसातें देखी थीं, वे बरसात मानों उसमें समा गई थीं और आज जैसे उनके निकल बहने का दिन आ गया हो ।

'रो मत, बल्लू दादा ! तू तो अपने बेटे धन्ना की मौत पर भी न रोया था । सारे मज़दूर रोये, पर तू चुप रहा ।' एक मजदूर ने आह लेकर कहा ।

"बल्लू दादा, यह क्या है । तू तो कहा करता था कि गरीब को रोना नहीं चाहिये । रोने से उसके दीदे फूटते हैं, वह काम के लायक नहीं रहता । उसे सहना चाहिये ।" दूसरे ने कहा ।

"अरे ऽऽ, मैं क्या करूं ? मुझ से अब चुप नहीं रहा जाता । हमारी किस्मतों में क्या मरना ही बदा है । मैं रोऊंगा, भय्या, आज खूब रोऊंगा । सहने का बखत अब चला गया, अब रोने का वखत आ गया ।" बल्लू सिसक रहा था ।

विजय ने देखा—सब मजदूरों की आँखों में आँसू हैं, यह उसी का अपराध है कि न वह रोता और न कब कब के जुड़े पीड़ाओं के आँसू आज बह निकलते । उसने बल्लू को देखा—वह रोये जा रहा था, आवाज़ मूक हो गई थी, सिर्फ आँसू थे—बूढ़े बाप के आँसू जो इकलौते बेटे धन्ना की मौत पर कहीं अंतर में जा समाये थे ।

"बल्लू दादा, मुझे समझाते समझाते खुद रोने लगे । बच्चों को समझाते, लेकिन खुद बहक गये । चुप हो जाओ दादा ।" विजय ने तसल्ली दी ।

"बल्लू दादा नहीं रोयेगा, 'वह बहादुर है ।" एक अधेड़ उम्र के

मजदूर ने कहा। वह अब तक चुप बैठा था। उसने प्रश्न किया : क्यों दादा ! जब मेरी चन्दो मरी थी, तब तूने क्या कहा था ? कहा था कि नहीं—हम अपनी आँख क्यों फोड़े ?—इन से हम अपना सूत देखेंगे, अपनी मशीन देखेंगे और अपना रास्ता देखेंगे।" "अच्छा भय्या, अच्छा।" बल्लू चुप हो गया, आँखों से आँसू पोंछे, अपने सफेद बालों पर फिर से साफा बाँधा, घनी भौंह और मूंछें ठीक की और चुप बैठ गया—फिर उसकी निगाह ऊपर की ओर उठी, देखता रहा और फिर धीरे धीरे बोला—निर्दयी, बहुत सह लिया, कितना और दुख देगा। कहते हैं तेरे दरबार में देर है, अंधेर नहीं। पर हम तो अब अंधेर ही देख रहे हैं। क्या पैसे वालों की रिशवत से ठगा गया ? देख, हम और नहीं सहेंगे—हद होती है सहने की।" बल्लू ने आँख मींच लीं।

'जिन्दगी के ऊँच नीच देखे हैं बल्लू ने। हृदय से इतना हमदर्द—कुत्ते को भी कोई मार दे तो कुत्ते को पुचकारे और रोटी दे खाने को। तीस साल से तो मैं इसे देख रहा हूँ।" अधेड़ उम्र के मजदूर ने कहा।

"बात बड़ी समझदारी की करता है।" दूसरे ने कहा।

"देखो भय्या, अब हम नहीं सह सकते। अब गरीब के उठने का बखत आ गया है। अगर गरीब अब नहीं उठेगा, तो सब मर जायेंगे।" बल्लू उठ खड़ा हुआ।

सूरज आसमान में ऊपर चढ़ आया था।

विजय और दूसरे मजदूर शंकर की प्रतिक्रिया जानने को मजदूर सभा के दफ्तर में गये। वहाँ पर आज की खबर पर जोरदार चर्चा चल रही थी। मजदूर सभा के कार्यकर्ता और कुछ मजदूर नीचे चटाई पर बैठे जोश में उबल रहे थे। आँसुओं से भीगे वातावरण के बाद विजय और उसके साथियों को जोश की गर्मी आई।

विजय ने कहा—"आज बल्लू दादा ने कहा है कि अब गरीब के

उठने का समय आ गया है। अगर वह अब नहीं उठेगा तो सब मर जायेंगे।"

बल्लू की ओर देखकर जनतासिंह ने कहा—"बल्लू दादा पुराने कारीगर हैं। तजुर्बा उनका बढ़ा चढ़ा है। ठीक है, एकदम ठीक। अब गरीब को उठना पड़ेगा। सारा सरमायेदारी निज़ाम हमारे खिलाफ खड़ा है। एक भारी जद्दोजहद हमारे सामने है।"

'लालहिंद' के जोर से लगाये गये नारे ने सब मजदूरों का ध्यान खींच लिया। कामरेड सीताराम 'लालहिंद' कहें और लोग उसकी ओर मुखातिब न हो जायँ, यह कैसे हो सकता है। उसकी मुट्ठी तनी थी, और अंगूठे के पास की दो उंगलियों के वीच वीड़ी दबी हुई थी। "इन्कलाब आयगा, जरूर आयगा।" कामरेड सीताराम ने ज़ोर से कहा।

अनेक बैठे हुए मज़दूर उठ खड़े हुए और उन्होंने "इन्क़लाब ज़िंदाबाद" के नारे लगाने शुरू कर दिये। कुछ शान्ति होने पर एक मजदूर ने कहा, "कामरेड, क्या खबर लाये?"

"सब जगह मजदूरों का इन्कलाबी जोश उभरा हुआ है। आज समाज का हरावल दस्ता बेईमानों की दुनिया में आग लगाने के लिए उतावला है। मैं आज करीब करीब सब मजदूर बस्तियों में घूमा। मजदूर अखबारों की झूठी खबरों से बिगड़े हुए हैं। वे कहते हैं कि अखबारों के दफ्तर में चल कर आग लगा दो, न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।" कामरेड ने यह कह कर शंकर की तरफ कनखियों से देखा, और फिर बीड़ी में लम्बा कश मारा। लेकिन वह बुझ चुकी थी। उसने फिर से उसे सुलगाया और कश मार कर कहा, "दुश्मनों से बदला लेंगे।" "जरूर बदला लेंगे, लगा दो आग इन कारखानों को और अखबार के दफ्तरों को। क्या पूंजीवादी गोरखधन्धा बिछाया हुआ है?"

"मजदूर इन्कलाबी होता है, वह हमेशा इन्कलाब की बात सोचेगा, और इन्कलाब की ही बात करेगा।" जनतासिंह का जोश रास्ता पाने के लिये उतावला था।

"कोई इन्कलाबी प्रोग्राम बनना तो चाहिये।" एक और मजदूर ने कहा।

"शंकर दादा की तो राय लो।" विजय ने कहा।

सब लोगों की निगाहें शंकर की तरफ जा गड़ीं। वह चुपचाप अखबार पर नजरें गड़ाये था, और गहराई में डूबा हुआ था। विजय की बात को सुनकर उसने गर्दन उठाई। बोला—अखबारों में छपी खबरों का हम आज खंडन भेजेंगे। वे नहीं छापेंगे तो दूसरा कदम उठायेंगे और तब हमारे इन्कलाबी कप्तान कामरेड सीताराम और कामरेड जनतासिंह का कमाल देखने में आयगा। [दोनों कामरेड मुस्कराने लगते हैं, और वह मुस्कराहट सबके चेहरों पर फैल जाती है।] इसमें दो राय नहीं हैं। आज की यह खबर एक षड़यंत्र है। मालिक मजदूरों को तो बदनाम करना ही चाहता है, पर साथ ही साथ वह मजदूर आन्दोलन में फूट भी डालना चाहता है। इस दिशा में उसका यह पहला साबित कदम है। फूट का बीज उसने बो दिया है। वह मजदूर सभा की ताकत पर हमला करता है, साथ ही साथ वह मजदूर यूनियन को भी तोड़ रहा है। उसकी इस चाल का मुकाबला करना होगा। बोर्ड पर इस षड़यंत्र का भांडा ज़रूर फोड़ा जाना चाहिये।"

मजदूरों ने समर्थन में गर्दन हिलाई। कामरेड सीताराम ने कामरेड जनतासिंह से कहा: "देखो, कामरेड इसे कहते हैं मार्क्सी नज़रिया।"

जनतासिंह ने मुस्करा कर गर्दन हिलाई: "होशियारी में दादा यकता है। मजदूरों के लीडर ऐसे वैसे थोड़े ही हैं।"

शंकर ने विजय से कहा, "बोलो भाई, बोर्ड इसी रोशनी में लिखा जाय न ?"

विजय : "बिल्कुल। आज मालिक, पुलिस और सरमायेदारों के एजेंटों की खूब खबर लेनी चाहिये। दरिंदे कहीं के।"

"और ?"

"और कि बोनस की लड़ाई जारी रहेगी।"

"और ?"

"और, तुम्हीं बताओ शंकर भय्या।" विजय ने सहज भाव से कहा। पास में खड़े मजदूर हंस दिये। शंकर भी हंस पड़ा।

"हमारा दुश्मन चालाक है, ताकत वाला है और बेरहम है। जब हम श्मशान घाट पर अपने भाई की अन्त्येष्टि कर रहे थे, उसने हमारी तहरीक की अन्त्येष्टि करने की योजना बनाई और अखबारी खबरें उस योजना की पहली किश्त हैं। शंकर फिर विजय से बोला : विजय भाई, बोर्ड पर इसी चीज को सब से ज्यादा उभारना है।" उसने अंगड़ाई ली, और नल से पानी लाने के लिये बाल्टी उठाई, और फिर विजय से कहा, "आज अपनी यूनियन के बोर्ड के साथ साथ हमारा बोर्ड भी तुम्हीं लिखना।"

"बल्लू दादा, अब गरीब खूब उठेगा। दादा, तुमने तो कितनी ही लड़ाइयाँ देखी हैं। हम कई बार जीते, कई बार हारे। जीत तो हमारी जीत है ही, हार भी जीत है। हर हार हमें नये सबक, और नये अनुभव देकर जाती है।" शंकर के चेहरे पर चमक छा गई।

बल्लू का मौन टूटा, और उसके भुर्रीदार चेहरे पर पिछली लड़ाइयों के इतिहास की कहानियाँ उभर आईं। बोला, "भय्या, यह श्यामकिशन क्या ? ऐसे कई आये, और कई गये। हम वहीं के वहीं क़ायम हैं। हमने अच्छों अच्छों के छक्के छुटाये। जीत हमारी होगी, शंकर दादा। मज़दूर जीतेगा, ज़रूर जीतेगा।"

"कहो भाई जनतासिंह, और सीताराम, तुम्हारा सिलसिला तो सब ठीक है।" शंकर ने पूछा।

दोनों ने गर्दन हिलाई और कहा "अपना तो काम एकदम चौकस है।"

कामरेड सीताराम ने कहा, "मैं तो रात भर मजदूर बस्तियों में ही रहा। लोगों में जोश है। दादा, हड़ताल कामयाब होगी।"

"और विजय, तुम्हारे आदमी तो सब काम पर तैनात हैं ही। हड़ताल मुकम्मिल होगी न?" जनतासिंह ने कहा।

"बिल्कुल। मैं तो रात ही शंकर दादा से बात कर चुका हूँ।"

शंकर : "विजय का काम ठीक है। इनकी यूनियन के कार्यकर्ता खूब जमे हैं। हमारे आदमी भी लगे हुए हैं। अच्छा, विजय, एक बात और। हमारी जाँच कमीशन नियुक्त कराने की माँग भी बोर्ड पर जानी जरूरी है। अखबार तो हमारा पक्ष बिल्कुल गोल कर गये। डिप्टी कमिश्नर यहाँ वायदा कर गया था।"

"तुम वहां जाओ भय्या। हाथ में बाल्टी लटकाये खड़े हो।" बल्लू ने शंकर को नहाने के लिये भेज दिया।

जितनी देर में शंकर नहा-धोकर तैयार हुआ, उतनी देर में बल्लू ने पिछली लड़ाइयों की कहानियों से मजदूरों को हरा कर दिया। सब मज़दूर अपने अपने अनुभव सुनाने लगे। इस बीच में और भी मज़दूर आ गये। वे भी खूब दिलचस्पी से नये संघर्ष के लिये तैयारी कर रहे थे। कामरेड सीताराम ने कहा, 'हर नया आंदोलन हमारे हरावली दस्ते को मजबूत करता है।"

सूरज के प्रकाश से मजदूर सभा का आंगन भर गया था, और उधर मज़दूरों के सीनों में भी नया जोश और नया उत्साह छा गया था।

विजय बोर्ड का मज़मून तैयार कर चुका था।

शंकर नहा कर आ गया था। उसने मज़मून देखा तो खुश हो गया। "फिर दोनों बोर्ड लिखे गये और मज़दूर उन्हें "इन्क़लाब : जिंदाबाद," के" नारे लगाते हुए उठा कर ले गये।

× × ×

यों तो सारी मजदूर बस्तियों में कोहराम मचा था, लेकिन नेहरू बस्ती में शोक और क्षोभ मूर्तिमन्त थे । पुरुष गली में इकट्ठा थे । उनके चेहरों पर कभी विषाद छा जाता था, और कभी वे गुस्से से उतावले हो जाते थे । रघुनाथ की याद जब उन्हें आ जाती, तो उनका दिल रो पड़ता था और आँसू उनकी आँखों में आ जाते । कितना भला था वह । किसी का बुरा उसने कभी सोचा नहीं, हमेशा दूसरों के काम आया । गली में निकलता तो सबको आयु और प्रतिष्ठा के अनुसार भाई, चाचा, ताऊ बुलाता चलाता । बच्चों को देखता तो उसकी आँखों में प्यार आ समाता । औरतों की बहुत इज्ज़त करता । इतना नेक आदमी भी मिल-प्रबन्धकों के इशारे से आई पुलिस की गोली का शिकार बन गया । मज़दूरों का क़सूर सिर्फ़ इतना ही तो था कि वे बोनस की माँग कर रहे थे । अपना हक़ माँगते थे । हक़ के माँगने पर गोली दी गई । यह गोली रघुनाथ के ही नहीं लगी थी, वह हरएक मज़दूर के सीने पर लगी थी । रघुनाथ की मौत सबके लिये चुनोती थी, फिर यह तो नेहरू बस्ती के मज़दूर थे, जहाँ रघुनाथ रहता था, और अपने व्यक्तित्व की सुगंधि से सबको तर रखता था ! यहाँ तो मातम, शोक, क्षोभ और क्रोध होना ही था !!

मकानों के अन्दर औरतें शोक से विह्वल हो रही थीं । उधर सामने के घर से जब एक चीख़ निकली, तो तमाम औरतों के दिल दहला गये और वे उस घर की तरफ़ दौड़ने लगीं । यह सत्या की चीख़ थी, विधवा सत्या की, जिसका सुहाग चंद घंटों पहले अनोखे मिल में लुट चुका था । वह हिन्दू विधवा थी, जिसके लिये रंडापा नरक से भी ज्यादा भयावह होता है । उस पर भी मज़दूर की विधवा, और उस मज़दूर की विधवा, जिसकी मां कई साल से दमे की रोगी थी, और जिसका भाई तपेदिक़ का बीमार; जो अपने गाँव की ज़िंदगीसे एक दम कट चुका था, और जो शहर में अपनी मेहनत बेचने आया था, बावजूद आठ घंटे की सख़्त मेहनत के बाद, जिसके ऊपर महाजन का कर्ज़ भूत की तरह सवार

रहता था, जिसे न जागते चैन था, और न सोते। उसकी विधवा का विलाप किसका कलेजा न दहला देता ?

सत्या ने जिस वक्त अपने पति के मरने की ख़बर सुनी थी, वह ग़श खाकर ज़मीन पर गिर पड़ी थी। बड़ी कठिनाई से उसे होश आया था। उसके बाद उसने घर और मरघट पर जो विलाप किया, वह दिल दहला देने वाला था। रात-दिन मुसीबतों के अंबार में फँसे मज़दूर भी जिनके लिये ग़म ग़म नहीं रहता, ज़ार ज़ार रोने लगे थे। सत्या रघुनाथ की एक एक चीज़ को याद करके बुरी तरह से रोती थी, और बार बार मिल मालिक और पुलिस से प्रार्थना करती थी कि उसे भी उसी गोली का निशाना बना दिया जाय, जिससे कि उसके प्राणों का प्यारा मरा है। उसने अपने विलाप में मर्यादाओं के सब बाँध तोड़ दिये थे। वह बार बार बाहर जाती और कुए की ओर दौड़ती। औरत-मर्द उसे पकड़ते, दिलासा दिलाते, पर उसे दिलासा कैसा ? रघुनाथ के सीने में लगी गोली के घाव तो चिता की अग्नि में झुलसकर सदा लिये शांत हो गये थे, पर सत्या के दिल के घाव तो रिस रहे थे, वे दर्द कर रहे थे। किसके रोके उस दर्द की आहें रोकी जा सकती थीं ?

रघुनाथ की मां का हाल भी बुरा था, उसका एक एक वाक्य कलेजा बींध रहा था। "मेरी लाठी टूट गई, मैं कैसे चलूंगी दैयाऽऽ। मेरी आँखों की जोति चली गई रेऽऽ, मैं कैसे करूँगी मां ऽऽ। तू तो कहवै था कि मैं चंदन की चिता चिनवाऊँगा, अब कौन चिता चिनवावेगा, लाल मेरेऽऽ" सुबुक सुबुककर भभक भभक कर मां रोती थी।

सास-बहू का क्रंदन किसी को चैन न लेने देता था। ग़रीबों की तरह आँसुओं में भी सहयोग करने की बान होती है। नेहरू बस्ती की औरतें रोतीं थीं, ज़ार ज़ार रोतीं थीं। यद्यपि रोने में दिल कटता है, एक आँसू के लिये ही दिल तापकी भट्टी पर चढ़ जाता है, फिर भी उसे रोकर ही सकून मिलता है, तसल्ली मिलती है। रोना जहाँ कुफ्र है, वहाँ सब्र भी, इस बस्ती में रुदन कुफ्र और सब्र दोनों का स्वरूप बना हुआ

था। शहीद रघुनाथ का बेटा—छै: साल का छौना—हक्का-बक्का था। उसका बाप, जो उसे जैसे-तैसे ज़रूर खिलौने और मिठाई लाकर देता था, जो उसके साथ खेलता था, जो उसे प्यार करता था, नज़र नहीं आ रहा था। उसकी दादी और मां जब रोतीं थीं, तो वह भी सहम-सहम कर रोने लगता था; और मां तथा दादी उसे चिपट चिपट कर रोती। उसकी मां रोती "तुम्हें यदु बुलाता है जीऽऽ। आजाओ मेरे नाऽऽथ। मुझे रानी कहकर कौन बुलायेगा रेऽऽ। यदु किसको बाप कहेगा रे।" सास बहू के इस रुदन से विह्वल होकर अपना सर घर की देहली पर फोड़ लेती।

सारा पड़ौस विह्वल था। सब कहते : "ऐसा तो वैरी के साथ भी न करे राम!"

नेहरू बस्ती तो यों ही कारुणिक दृश्य उपस्थित किया करती है। वहाँ पर न पानी का ठीक इंतज़ाम है और न रोशनी का प्रबंध; ऊँची-नीची गलियाँ हैं और नालियों का तो नामो निशान भी नहीं। सबके लिये टट्टियाँ हैं, जिनमें न दर्वाजे हैं और न छत। बस्ती की गलियों में गंदगी बुरी तरह बहती है और उस गंदगी में कीड़े गिजमिजाते हैं। गंदे कुत्ते जहाँ-तहाँ डोलते हैं। ये कुत्ते अपने आदमियों को पहिचानते हैं। सफ़ेद पोश को तो देखते ही, भोंकने लगते हैं। इंसानों की दशा भी जहाँ हैवानों जैसी हो, तो हैवानों का कहना ही क्या ? अनेक बार यहाँ इंसानों और जवानों का फ़र्क करना मुश्किल हो जाता है, और खासतौर से उन मौक़ों पर जब यहाँ लोग फ़ुर्सत के वक्त कंठ के नीचे लाल पानी उतार लेते हैं। खूब ले-दे होती है। उसका फ़ायदा उठाने वाले खूब उठाते हैं। महाजन, इनमें पुलिस के मुख़बिर और मिलमालिक के आदमी शामिल हैं।

यह नेहरू बस्ती अब और भी कारुणिक हो गई थी। नौजवान मज़दूर की मौत ने मेहनत कशों की इस बस्ती को हिला दिया था।" सबके कलेजे मुंह को आ रहे थे। दूसरी बस्तियों के मजदूर यहाँ पर

जत्थे बांध-बांधकर आ रहे थ। रात भर यहाँ पर आदमियों की भीड़ रही, और सुबह से तो और भी बुरा हाल था। शंकर भी रघुनाथ भी मां और बीबी को दिलासा देने आया था, पर यहाँ दिलासा कैसे होता ? यहाँ आग थी, माँ के सीने की आग; बीबी के सीने की आग और बेटे के प्यार की आग, और यह आग कारीगरों के दिलों को झुलसा कर उनकी आँखों में चमकती थी। हड़ताल, पूर्ण और लम्बी हड़ताल, सबकी जुबानों पर थी। "हर ज़ोर जुल्म की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है" ज़बान ज़बान पर गूंज रहा था। एक मजदूर का खून हुआ था, उस मजदूर का खून, जो अपने खून को पसीना बनाकर लोगों के तनों को ढाँपता था। वह कपड़ा मजदूर था, जो साँचे चला चलाकर समाज का नया साँचा बना रहा था। उसी मजदूर की लाश मिल गेट से यहाँ आई थी, और यहीं से उसकी अर्थी निकली थी, जिसके पीछे मजदूर टिड्डी दल की तरह उमड़ पड़ा था। यह अर्थी लाल झंडों और तिरंगे झंडों से सज गई थी। इस मौत ने झंडों और पार्टियों के भेद को तोड़कर अटूट मजदूर एकता कायम की थी। विचारधाराओं की दीवार टूट गई थी और मजदूरों का खून जोश खा खाकर समुद्र की तरह लहराता था। पहले जिस नेहरू बस्ती को देख कर लोग कहा करते थे 'नाम बड़े और दर्शन थोड़े,' उसके आज नाम और दर्शन दोनों बड़े हो रहे थे। रघुनाथ की मौत आम मजदूर के लिये सचमुच में इन्कलाब का संदेश बन गयी थी। और जब सत्या चीखकर कहती थी कि मैं भी उनकी तरह गोली खाऊँगी, तो मजदूरों के ही क्या, और भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते थे। राजनैतिक तौर पर बेशऊर आम लोग मजदूर-राजनीति के महत्त्व से अचेतन रूप में परिचित हो रहे थे।

वैसे तो सभी मजदूर बस्तियों में सफेद पोश पुलिस मौजूद थीं, लेकिन यहाँ पर सफेद पोश और बावर्दी दोनों तरह की पुलिस मौजूद थी; और लोग आज पुलिस से डरते तो क्या ? उनके सामने ही उनकी आलोचना कर रहे थे। बहुत से उनकी ओर थूक कर जाते। कई पुलिस

वाले कहते भी, "हमारा क्या है ? हम तो भाई खुद मजदूर हैं। हुक्म के गुलाम हैं।"

पुलिस का जब यह हाल था, तो सूदखोर महाजन और मिल मालिक के गुर्गे तो वैसे ही डरे हुए थे। पुलिस के मुखबिर भी मुंह लटकाये खड़े थे।

नेहरू बस्ती करुणा, क्रोध और क्षोभ की त्रिवेणी बन गई थी। इस त्रिवेणी में पाप को डुबो देने वाली वेगवती धाराएं थीं, और पुण्योदय के लिये सुन्दर सुखद सुरुचिमय लहर।

सचमुच नेहरू बस्ती नये भारत का तीर्थ बन गया था। शंकर ने अर्थी उठाने के समय आँखों में आँसू भर कर ठीक ही कहा था, "पूंजीपति और उसके एजेंटों ने समझा है कि रघुनाथ की मौत से मजदूर-जीवन का दीपक बुझा है। उसे मालूम होना चाहिये कि ऐसे बुझे चिराग़ जीवन की अमर मशाल बन कर जगमगाते हैं। नेहरू बस्ती शहीद रघुनाथ की इस अमर मशाल से सदा जगमगायगी और हमारी आर्थिक आज़ादी की कहानी इसी मशाल की रोशनी में लिखी जायगी।"

३

★★★★

"संभलकर भय्या।"

"माँ, उधर न जा, बड़ी भीड़ है।"

"मुन्ना, इधर ही रहो।"

अनोखे सूती मिल के सामने बड़ी भीड़ है। औरत, मर्द, बच्चे सभी यहाँ की रोशनी और झाँकियों को देख देखकर मुग्ध हो रहे हैं। यहाँ की सजावट और रोशनी का इतना प्रचार है कि शहर के दूर भागों से भी यहाँ लोग खिंचे चले आ रहे हैं।

लोग कह रहे हैं कि दीवाली हो तो ऐसी हो। एक आदमी ने कहा कि लक्ष्मी तो भाग्यवानों के ही आती है। सेठ अनोखेलाल के पुण्य इतने हैं कि धन के अम्बार लग रहे हैं। सेठ ने अबकी दीवाली पहले से भी अधिक बढ़िया ढंग से मनाई है। पास में खड़े एक मजदूर ने कहा कि ये लोग तो मजदूरों के खून को पी-पीकर मोटे हुए जा रहे हैं। सेठ अनोखे लाल ने ही कोई अनोखे पुण्य थोड़े ही किये होंगे ! हमने क्या पाप किये हैं ? इसकी ताईद में एक दूसरे मजदूर ने गर्दन हिलाई। इस बात का पहले आदमी पर कोई असर नहीं पड़ा, मुंह बिदका कर बोला : "कम्युनिस्ट मालूम पड़ते हो ? नास्तिकों को पाप-पुण्य का क्या पता ?" और यह कह कर वह आगे बढ़ लिया और झाँकियाँ देखने लगा।

मिल के अगले सिरे पर तिरंगा झंडा लहरा रहा है। बीच में चर्खा कातते हुए गाँधी जी का चित्र है। बायें हाथ पर सुदर्शन चक्रधारी

कृष्ण का चित्र है। सुदर्शन चक्र के चलने की ऐसी व्यवस्था है कि वह दूर तक रोशनी फेंकता है।

मिल के अफसर-गेट के आगे एक ऊंचा मंच है, जिस पर लक्ष्मी और गणेश के बड़े चित्र बने हैं। नील समुद्र में उगे अरुण कमल-दलों के बीच चतुर्भुज लक्ष्मी खड़ी हैं। उनकी बाईं बगल में गणेश सिंहासन पर बैठे हैं।

मजदूर-गेट पर खूंखार शेर और हाथियों के युद्ध का चित्र उसी तरह ऊँचे मंच पर बनाया गया है। शेर के मुकाबले के लिये सबसे आगे दो महाकाय हाथी खड़े हैं। उनके पीछे अनेक हाथी लड़ने की मुद्रा में हैं। शेर सीना ताने इन पर हमला करने की घात लगा रहा है।

ये दोनों झाँकियाँ उन्हीं तस्वीरों के आधार पर बनी हैं, जो कि हमने श्याम किशन मैनेजर के कमरे में देखी थीं। इन कलापूर्ण झाँकियों पर रंग विरंगी रोशनी फेंककर इनमें बड़ा आकर्षण पैदा किया जा रहा है।

पिछले सालों की दीवाली और इस साल की दीवाली का अनोखे मिल पर अन्तर रोशनी और झाँकियों में ही नहीं है, बल्कि व्यवस्था में भी है। पुलिस और मिल के वाच एण्ड वार्ड का यहाँ पूरा प्रबन्ध है। सफेद पोश गुप्तचर भी भीड़ में जिधर तिधर लगे हुए हैं। मिल के अधिकारी भी बड़े सतर्क हैं। जब मजदूरों के टोले आते हैं, तो बड़े सशंक हो जाते हैं। वे आपस में खुसपुस करने लगते हैं। एक अधिकारी ने ऐसे ही एक टोले को देख कर कहा—कहीं शंकर बम न फिकवा दे। दूसरे ने कहा कि वह तो छुपा हुआ है। तीसरे ने कहा—ये लोग 'अण्डर ग्राउण्ड' होने पर भी उत्पात खड़ा कर देने में सिद्धहस्त हैं।

ये लोग पुलिस को लेकर के आगे बढ़ गये। सड़क के उस किनारे पर श्यामकिशन मैनेजर मोटर से उतरा, साथ में बच्चे भी थे। दूसरी मोटर से कंटक जी, गिरीश और वीरभानु उतरे। कंटक जी ने अपनी गांधी टोपी को ठीक करते हुए कहा—श्यामकिशन जी, बाकमाल रोशनी है।

ग्रौर ये झाँकियाँ वाह ! श्यामकिशन मुस्कराया। लक्ष्मी-गणेश के चित्र को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान ग्रा गई ग्रौर शेर का चित्र देखकर उसने मन ही मन गुर्राहट की ग्रौर हाथ पीठ के पीछे ले जाकर मुक्का तान लिया।

गिरीश ने पत्रकार की ग्रदा से बालों पर हाथ फेरा ग्रौर कहा—रियली ग्रार्टिस्टिक (वस्तुतः कलात्मक)। श्याम किशन की मंद मुस्कराहट तीव्र हो गई। कंटक जी कुछ थोड़ा सा एक ग्रोर हटे ग्रौर नाटकीय भाव से हाथ ग्रागे लाकर हथेली पर हथेली रखी ग्रौर बोले : 'ग्रांड' (बढ़िया)। गिरीश मुस्कराया। "चांडाल" कंटक जी जोर से बोले। गिरीश ने झेंप कर कंटक जी की ग्रोर देखा। कंटक जी ने तुरुप मारी : "वह विजय जा रहा है।" गिरीश कंटक की तुरुप पर हंसा ग्रौर कंटक जी को तो हंसना ही था। मैनेजर इस हंसी में शरीक हो गया।

वीरभानु ग्रब तक चुप था। मैनेजर के बाईं ग्रोर उसकी लड़की सुकन्या खड़ी थी। वीरभानु को डर था कि उसकी. किसी टिप्पणी पर मैनेजर ग्रनाप शनाप न कह दे। वह जानता है कि एक नवयुवती के सामने भद पिटाने का क्या ग्रर्थ होता है। किन्तु साथ में उसे यह भी ग्रहसास है कि एक नौजवान लड़की के सामने, ग्रौर विशेष कर उस लड़की के सामने जिसके लिये कोमल स्थान हो, कलात्मक रुचि का प्रदर्शन न करना भी कितना बुरा है। वह इसी उधेड़ बुन में था कि श्यामकिशन ने कहा—ग्रोह ८ बज गये चलिये साहब, गार्डन पार्टी का टाइम ग्रा पहुँचा।

दोनों कार चल दीं। ये कार रुकीं ठंडी सड़क की एक विशाल कोठी के सामने, जहाँ की सजावट ग्रपने नमूने की एक ही थी। सब लोग ग्रंदर गए। मिल की शैली पर ही यहाँ सजावट थी, पर यहाँ कोठी के बरामदे में बिजली के बल्वों से बनी सिंहवाहनी दुर्गा की मूर्ति विशेष थी। पुलिस प्रवन्ध के लिये ग्रा चुकी थी।

श्यामकिशन का परिवार तो अंदर चला गया, और ये चारों ड्राइंग रूम में जाकर बैठे।

"श्रीमान् सेठ जी, नमस्ते" एक दुबले पतले पर चुस्त आदमी के प्रवेश करते ही श्यामकिशन और वीरभानु ने खड़े होकर अभिवादन किया।

कंटक जी और गिरीश जी भी खड़े हो गये।

जिस व्यक्ति को अभी श्रीमान् सेठ जी कहा गया था, उसने इशारे से ही अभिवादन स्वीकार किया और कंटक जी और गिरीश की उपेक्षा करते हुए श्यामकिशन से कहा, "अब समय हो गया। मेहमान आने ही वाले हैं। चलो स्वागत के लिये।"

श्यामकिशन उठ खड़ा हुआ। उसने गिरीश और कंटक से कहा—"आप बैठें" कंटक जी और गिरीश को यह कुछ अच्छा न लगा, और असंतोष के भाव उनके चेहरे पर आ गए, जिन्हें श्यामकिशन ने ताड़ लिया।

उसने कंटक जी की ओर इशारा किया : "आप स्थानीय कांग्रेस के नेता ला० कंटक लाल "कंटक।" अपने बड़े हितैषी हैं। और आप हैं गिरीश जी, राजधानी के एक प्रमुख पत्रकार। आप मेरे मित्र हैं।"

छः हाथ एक साथ जुड़ गये। सेठ ने अब उपेक्षा न की, और कहा: "आइये आप भी।"

लान के गेट पर गलीचा बिछा था। गेट के बाहर वीरभानु को स्वागत के लिये खड़ा किया गया। अन्दर की ओर सेठ अनोखेलाल और श्यामकिशन खड़े हुए। साथ में श्रीमती अनोखेलाल, श्रीमती राम-किशन और मिसतारा भी खड़ी थीं। सामने की ओर फोटोग्राफर फोटो लेने के लिये तैयार खड़े थे। देखते देखते मेहमान आ पहुँचे। लान में बैरे चाय, कहवा, फ्रूट जूस से लेकर ह्विसकी तक सर्व कर रहे थे। काजू, बादाम, पेस्ट्री, पनीर से बने पकौड़े, चिकन स्लाइस और अनेक मांस की बनी चीजें मेहमानों में घुमाई जा रही थीं।

कंटक जी को इतना ऊंचा संपर्क जीवन में पहली बार मिला। उन्हें लगा जैसे कि वह एकदम एक छोटे से इलाके की लीडरी से अखिल भारतीय लीडरी के दायरे में आ गये। यहाँ मन्त्री, पार्लियामेंटरी सैक्रेट्री, उपसैक्रेट्री, पुलिस अधिकारी और अन्य बड़े अफसर वहाँ बिल्कुल वैसे ही घूम रहे हैं जैसे कि वह खुदा। यहाँ पूरी आजादी है, जिससे चाहो मिलो। और औरतें जैसे रंग बिरंगे फूलों के गुच्छे हैं, जिनके हाथ पैर लगा दिये गये हैं। कंटक जी को आजादी के फल का स्वाद अनेक तरह मिल चुका था, लेकिन यह फल मन के लिये सब से ज्यादा आनन्ददायक था। गिरीश बन की चिड़िया की तरह यहाँ से वहाँ उड़ा फिर रहा था—उन्हें ईर्ष्या हुई। एक मोटर में साथ आये, लेकिन मैं इस भीड़ में अकेला हूँ, अजनबी हूँ और यह गुलछर्रे उड़ाता है।

"मौका तो ऊँचा मिला, पर लाभ क्या हुआ ?" प्रश्न शूल की भाँति मन को भेद गया। "क्या मैं उस गरीब की तरह हो गया हूँ, जो हीरा पा जाने पर भी उसके सुख से वंचित रहता है ?" कंटक जी जोश में आ गये।

उन्हें दूर पर खड़े एक उपमन्त्री नजर आये, हल्की सी जान पहचान थी; सोचा, मौका परिचय प्रगाढ़ करने का है। उन्होंने एक खास अन्दाज में मन्त्री से हाथ मिलाया और फ़िर इधरउधर गिरीश को देखने को नजर दौड़ाई कि यदि देखते हो तो जान लो, हम भी कुछ कम नहीं। तुम पत्रकार हो तो हम नेता हैं।

"आप तो वहाँ······उस······कमेटी में काम करते हैं।" मन्त्री ने दिमाग पर जोर देकर कहा।

"जी, मैं वाइस प्रेसीडेन्ट हूँ कमेटी का।"

"और सुनाइये, हाल चाल इलाके के ?" मन्त्री ने प्रश्न किया।

"अजी क्या हाल चाल ? हमारे यहाँ तो बिल्कुल अनुशासन नहीं

रहा। बड़ी गड़बड़ है। आप जैसे नेता जब तक मामले को नहीं संभालेंगे तब तक यों ही चलेगा। अनोखे मिल का तो मालूम ही है आपको। ......"जी हाँ" मन्त्री ने बीच में काट दिया और कहा "वैसे इलाके में का तो आपका जोर है" यों तो आपकी कृपा है। अपने से कोई बाहर नहीं मैं आपको सब स्थिति बताऊंगा।"

"अच्छा मिलियेगा।"

"कोठी पर ही आऊंगा।"

इतने में एक विदेशी ने मन्त्री से हाथ मिलाया। कंटक जमे खड़े थे। हाथ कंटक जी के हाथ में भी आया। उस ऊंचे हाथ को पाकर उन्हें जो खुशी हुई, उसे उन्होंने सिगरेट का थाल ले जाने वाले बैरे को पास बुला कर और सिगरेट पेश करके प्रकट किया। उन्हें खुशी हुई कि सिगरेट दोनों बड़े हाथों ने शुक्रिया के साथ स्वीकार कीं। अभी एक बैरा शैम्पेन, स्काच, ह्विसकी और अनेक तरह की शराबों के पैग लेकर हाजिर हुआ। विदेशी ने एक पैग मन्त्री को दिया; उन्होंने हाथ जोड़ लिये। विदेशी ने अनुरोध किया; किन्तु पुनः जुड़े हुए हाथ सामने आये। विदेशी ने बिना परेशानी के एक पैग कंटक जी को दिया और इन हाथों से आई हुई चीज कंटक जी से अस्वीकार न की गई। वह जानते थे— शराब है। अब पैग मन्त्री जी के हाथ में भी था। वह तो "उसी मनहूस" के कारण मना कर रहे थे। पहली घूंट में कंटक जी को विजय की याद हो आई—थोथा चना बाजे घना। वह कितना छोटा है और मैं : कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगुआ तेली; और उन्होंने दूसरी बड़ी घूंट भरी।

मिसतारा इधर उधर तितली बनी घूम रही थीं—शुरू से ही कंटक उसकी आजाद तबियत को देखकर हैरान थे।

"बड़ी शोख, और बड़ी दिलचस्प हैं आप मिस तारा।" ये शब्द किसी ने कहे, किंतु कंटक जी को लगा जैसे उनके ही हैं।

कंटक जी इस 'शोख़ हुस्न' को देखते ही रहे "सोचा, श्यामकिशन से मालूम करूँगा। यह मिस तारा कौन हैं ?"

वह यह सोच ही रहे थे कि मिसतारा उनके ही सामने विराजमान। आँखें अविश्वास करती रह गई कि एक मुलायम गोरा हाथ कंटक जी के हाथों से आकर घुला-मिला, आँखें ढंग से चार भी न हुई कि वह बिदा हो गया। कंटक जी को महसूस हुआ कि उनका हाथ खुरदरा है तभी तो वह हाथ इतनी जल्दी विदा हुआ है।

कंटक जी ने देखा—मिस तारा खिलखिलाती हुई आगे बढ़ती जाती है, जैसे नदी की लहर।

मन्त्री दूसरे मन्त्री से मिलने बढ़े। कंटक जी फिर अकेले रह गये। किन्तु स्काच ने संकोच तोड़ दिया था। वह इधर उधर घूमने लगे और मिलने-जुलने लगे। सेठ जी के रुआब को वह देख हैरान थे। वह वहीं पर खड़े थे। श्याम किशन सेठ के साथ था। जब कोई मन्त्री उनसे हाथ मिलाता तो कैमरों की रोशनी उन पर आ पड़ती। इस समय श्याम किशन कंटक जी को अपने से कई सौ फुट ऊंचा लगा: मैं उस दिन इस महान् पुरुष का कूटनीतिक मुकाबला करना चाहता था—क्या मुकाबला ? शेर और बकरी का क्या जोड़ ?

धीरे-धीरे पार्टी समाप्त होने लगी। कंटक जी को यों दर्द होता रहा जैसे किसी बच्चे को मेले के उखड़ने से होता है।

आखिर में वे ही लोग रह गये, जो एकदम शुरू में आये थे—श्याम किशन और उसका परिवार वीर भानु, गिरीश, और वह खुद।

सेठ जी से विदा ली गई।

विदा समय मालूम हुआ कि तारा सेठजी की बड़ी लड़की है, अभी अमरीका से लौटी है। अंग्रेजी फैशन के कटे बालों से घिरा बेंदी युक्त चेहरा उन्हें लगा मानो चाँद बदलियों के साथ ही धरती पर आ गया है।

कंटक में कविता आ गई थी।

श्यामकिशन ने कोठी से बाहर आकर ड्राइवर से कहा—गिरीश बाबू और कंटक जी को घर छोड़ आओ। वीरभानु, आओ हमारे साथ चले चलो।

जब श्यामकिशन ने कंटक जी से हाथ मिलाया, तो वह हाथ उन्हें सख्त तो महसूस हुआ पर साथ में चिकना और गर्म भी। गिरीश से श्यामकिशन ने कहा—"एंजोयेड वेल" (खूब आनन्द लिया।) गिरीश ने कहा—"येस, थैंक्स" (हाँ, शुक्रिया)।

वीर भानु भी प्रसन्न था; उसे "मोटरकार में सुख की तीव्र अनुभूति हुई।

"दीवाली की यह रोशनी सबको मुबारिक हो"—वीर भानु ने सुकन्या की ओर कनखियों से देखकर कहा।

सेठ अनोखेलाल की कोठी के सामने कुछ आदमी जमा थे, जो जगमग जगती दीवाली की शोभा देख रहे थे।

कोठी से कुछ फासले पर उन मजदूरों को पुलिस घेरे खड़ी थी, जो नारे लगा रहे थे : सेठ अनोखेलाल मुर्दाबाद, श्यामकिशन मुर्दाबाद, शहीद रघुनाथ जिन्दाबाद, हमारे भाइयों को रिहा करो।

श्यामकिशन ने कहा—मरदूद यहाँ भी आ पहुँचे। एक मर गया तो भी चैन न आई।

गिरीश ने कहा—इन लोगों को तो सख्ती से दबाया जाना चाहिये। प्रधानमन्त्री कुछ ढील देते हैं।

डाइवर ने कहा कुछ मजदूर अभी-अभी मिल पर भी गिरफ्तार हुए हैं। एक आदमी कह रहा था।

"दैट्स गुड (यह अच्छा हुआ)। श्याम किशन और गिरीश दोनों के मुँह से एक साथ निकला।

श्यामकिशन ने कहा : आई० जी० की कोठी चलो।

× × ×

श्यामकिशन दंपति बरामदे की बाईं ओर की पौड़ियों से बाग में उतरे।

उतरते ही सामने की ओर गुलाब का पौदा था, जिस पर दो बड़े-बड़े गुलाब के फूल झूल रहे थे। दम्पति की दृष्टि उन पर एक साथ पड़ी और साथ ही आवाज निकली "सुन्दर।"

श्रीमती श्यामकिशन, जिन्हें घर में नौकर चाकर मेमसाहब के नाम से जानते हैं, और बच्चे ममी के नाम से, श्यामकिशन की "प्रिया" है। उसने उनमें से एक फूल तोड़कर पति के कोट के कालर पर लगा दिया, फिर बाँकी नजर से देखकर मुस्करा दी।

यह मुस्कराहट श्यामकिशन को सिर्फ घर में ही मिलती है, इसमें पत्नी का निश्छल प्यार होता है और कूटनीतिक बनावटी मुस्कराहटों से कितनी भिन्न होती है यह, वह गद्गद् हो गया और उसने फौरन दूसरा फूल तोड़कर अपनी पत्नी की वेणी में लगा दिया और कहा, "प्रिया, तुम कितनी सुन्दर लगती हो?"

दोनों मुस्कराये और फिर हाथ में हाथ डालकर बगीचे में घूमने लगे।

"यह कौन गा रहे हैं?"

"सुकन्या और हेमा।"

"बड़ा अच्छा गाने लगी हैं।"

"जी, खूब अभ्यास करती हैं।"

"ये बगीचे के पिछले हिस्से में मालूम पड़ती हैं। चलो, वहीं चलें।"

"चलिये।"

फलदार अमरूद के वृक्ष के नीचे हेमा और सुकन्या गा रही थीं। पति-पत्नी काफी देर तक पहले कुछ दूरी से और फिर पास आकर अपनी पुत्रियों का मनोरम गायन सुनते रहे। फिर पिता के अनुरोध पर हेमा ने वायलिन बजाया और सुकन्या ने गाया। दोनों का रियाज

खूब था। पिता ने दाद दी, "आखिर मेरी बेटियाँ हैं न ? एक्सपर्ट।" माता ने कहा, "हाँ, जी, बस तुम्हारी ही बेटियाँ हैं। हमारी तो कुछ हैं ही नहीं। तुम एक्सपर्ट (दक्ष) हो और ये एक्सपर्ट हैं, बुद्धू हैं तो बस हम हैं।" इस पर सब हंस पड़े।

श्यामकिशन इस वातावरण से विभोर हो गया। कुछ समय के लिये उसे मिल की राजनीति भूल गई। वैसे वह घर आकर मैनेजरी का चोला उतार कर रख देता है, वह एक अच्छा पति और एक अच्छा पिता बनने की चेष्टा करता है। शायद ही वह यहाँ कभी मिल के झमेलों की चर्चा करता हो।

पत्नी ने कहा—"शाम को क्या खाइयेगा ?"

पति—"आज तो जो हेमा और सुकन्या कहें। इनके संगीत के उपलक्ष्य में आज इनका मनचाहा ही तैयार किया जाय। "क्यों बेटी ?"

हेमा और सुकन्या मुस्करा दीं और बोलीं—"हम आज शाम को ऐसा खाना तैयार करायेंगी, जो आपको बहुत पसन्द आयेगा, लेकिन आइयेगा जल्दी। कभी देर कर दें।......हम नहीं, कितनी देर कर देते हैं।"

श्यामकिशन मुस्कराया—"अच्छा, आज जल्दी आयेंगे।"

वह उठ खड़ा हुआ। देखा २॥ बज रहे हैं। वह दफ्तर को चल दिया।

दफ्तर आकर उसने जालिमसिंह मिस्त्री को बुला भेजा। मिस्त्री ने आते ही फरशी सलाम किया और बिना सलाम का इन्तज़ार किये कहना शुरू कर दिया, "हुज़ूर काम ठीक है। हर खाते में मास्टर मिस्त्री इंजीनियर पूरी देखभाल कर रहे हैं। कोई खतरा नहीं।"

"तुम फालतू बहुत बोलते हो। तुमने सब खातों को, उनके मास्टर

और मिस्त्रियों का ठेका कब्र से ले लिया है ? मेरा सवाल सुना नहीं, जवाब देना पहले ही शुरू कर दिया। मैं तुम्हें फिर बताये देता हूँ, मैं चापलूसी पसन्द नहीं करता। मैं चापलूसी न करता हूँ और न करवाता हूँ। काम करता हूँ और काम चाहता हूँ।"

जालिमसिंह उत्तर न दे सका। मन ही मन कहता रहा—अजब आदमी है। परमात्मा तक को खुशामद और चापलूसी पसन्द है, यह कहता है कि चापलूसी नहीं चाहता। नहीं चाहता तो नहीं करेंगे। फिर संभल कर कहा—"हुजूर हुक्म करिये।"

"तुम्हारे खाते का क्या हाल है ?"

"बिल्कुल ठीक, सब कारीगर ठीक काम कर रहे हैं।"

"अगर एक पुर्जा भी टूट गया तो मैं तुम्हें पकड़ूँगा।"

श्यामकिशन ने अपना चाँदी का सिगरेट केस निकाला, और एक सिगरेट खुद ली, एक सिगरेट जालिमसिंह मिस्त्री को पेश की।

जालिमसिंह के मुँह से जब सिगरेट का धुँआ निकलता तो श्यामकिशन गौर से देखता। उसने देखा कि धुँआ उसके मन का सारा मैल बाहर ला रहा है। श्यामकिशन मन ही मन हँसा, वह हँसी जान-बूझकर बाहर ले आया ; जालिमसिंह की जान में जान आई और हिम्मत करके बोला—"हुजूर, यह सारा जिस्म मिल के नमक से बड़ा हुआ है। जालिमसिंह सब कुछ कर सकता है, लेकिन हराम नहीं कर सकता।"

"अच्छा, यह बताओ संघर्ष कमिटी क्या कर रही है ? तुम्हारा आदमी वहाँ क्या कर रहा है ?"

"हजूर, कल ही गिरफ़्तार होने से बाल-बाल बच गया। दाँव तो मेरे आदमी ने बड़ा शानदार फेंका था।"

"हूँ ऽऽ।"

जालिमसिंह झुंझलाया कि अभी यह रिन्द संतुष्ट नहीं, पहले मैनेजर थे, जो एक वाक्य में ही दुहरे हो जाते थे। यह कहता है—हूँ,

साधकर धीमे से कहा "बात यह है, हुज़ूर, राजनीति दुरंगी, तिरंगी, चौरंगी है । कोई दाव लग जाता है, कोई रह जाता है। मैं आज थानेदार के यहाँ मिल की ओर उसे मिठाई देने गया था, वह कहता था कि बस कल शंकर और उसके साथी रही गये और आगे कोई मौक़ा आयगा तो बख्शूंगा नहीं ।"

"वह ठीक जालिमसिंह, लेकिन राजनीति बेवकूफ़ों के खेलने के लिये नहीं। तुम्हारा आदमी गधा है और अगर बुरा न मानो तो कहूँ कि तुम भी गधे हो ।" बात वेग से आई ।

जालिमसिंह सिर्फ़ "जी, हज़ूर' ही कह सका ।

"उसे अनोखे लाइन में झगड़ा करने की क्या ज़रूरत थी ? वही था न तुम्हारा आदमी !" मैनेजर का प्रश्न था ।

"हुज़ूर, वही था ।" चेहरे पर हवाइयाँ थीं ।

"फिर ?"

"कहता है कि मैं संघर्ष कमिटी में इसी मामले पर फूट डलवा दूंगा, शंकर और विजय के खिलाफ़ अविश्वास का प्रस्ताव आयगा । हुज़ूर, एक मौक़ा और मिलना चाहिये ।"

"तुमको या उसको ?"

"उसको·········नहीं नहीं—मुझको, उसको—मुझको" जालिम सिंह घबरा गया, पर जल्दी ही संभल कर बोला—"दोनों को ।"

"अच्छा, जाओ ।"

जालिमसिंह के जाने पर श्यामकिशन बड़ा हँसा : 'सेठ जी और सेक्रेट्री साहब कहते हैं कि जालिमसिंह मिस्त्री बड़ा होशियार है। गधे भरे हुए हैं। अंधाधुंध दर्बार में गधे पंजीरी खायं ।"

टेलीफ़ोन की घंटी बजी । श्यामकिशन ने फ़ोन उठाया : "हलो ।"

"हां, जी । नमस्ते, श्रीमान् सेठ जी ।"

"इस वक्त तक हालत ठीक है । सुबह सारे मिस्त्री मास्टरों को

ताक़ीद कर चुका हूँ। मिस्त्री जालिमसिंह रह गया था। उसे अब बुलाया था। वह कहता है कि मज़दूर ठीक काम कर रहे हैं।

"आदमी ज़रूर होशियार है, पर इतना नहीं, जितना जत-लाता है। मैं कोई इन्तजाम करता हूँ।

"अच्छा जी, बेफ़िक्र रहिये।"

टेलीफ़ोन रख कर श्यामकिशन असमंजस में पड़ गया : बाहर के दुश्मनों को भुगतूँ या घरवालों को। अब मिल में दंगा होने की बात है। मज़दूर खुद दंगा नहीं करेंगे। शंकर यह ग़लत चाल नहीं चल सकता। वह धीर, गम्भीर है और फिर इस चाल से उसका रेत का घरौंदा ढह जायगा। कौन है यह जयचन्द ?

वह टहलने लगा। उसे खयाल आया—वीर भानु ! नहीं, छोकरा है। वह नहीं हो सकता, यह कोई मेरा शत्रु है, प्रतिंद्वन्दी है। पर प्रति-द्वन्दी सिर्फ़ एक है, वह है वीर भानु, जिसे अपनी शिक्षा का घमंड है। किन्तु वह तो छोकरा है।

वह घूमता रहा—यह काम विकट है, विकट मस्तिष्क का सोचा हुआ होना चाहिये। कौन है वह ? घड़ी देखी—३। बजे हैं। हंगामे के लिये समय है। किसी ने मजाक तो नहीं किया ? मज़ाक यानी कि लड़कपन। हां यह तो लड़कपन ही है। फिर वीर भानु ही, है ठीक ! वीरभानु ही ये कांटे बो रहा है।

"आपरेटर, वीरभानु को दो।"

"तनिक यहां आइये।"

वीर भानु आया. श्यामकिशन ने प्रेम से बैठाया : "वीर भानु, मैंने सुना है कि मिल के कुछ गुंडे दंगा करने की सोच रहे हैं। इस समय यदि थोड़ी भी गड़बड़ हो गई, तो सारा मिल फुंक सकता है। मैं इस समय किसी और काम में लगा हूँ। यह तुम्हें देखना होगा कि दंगा न होने पाये।"

वीर भानु ने कहा, "तो.........."

पर वह कुछ न कह सका ।

श्यामकिशन बोला—वीर भानु जी, जल्दी करिये, किसी भी क्षण अनर्थ हो सकता है, दंगा न होने देना, आपकी ज़िम्मेदारी है । मैंने सेठ जी से भी कह दिया है कि वीर भानु स्थिति को देख रहे हैं ।

वीरभानु चिन्तित भाव से उठा और चला गया । श्यामकिशन हँस पड़ा—होश फ़ाख्ता हो गये हजरत के । क्या गंदे खेल खेलते हैं ये लोग ? कायर और बेवकूफ़ कहीं के ?

इसके बाद मैनेजर ने घंटी बजाई और चपरासी को पर्ची लिख कर दी कि स्पिनिंग खाते में जाओ, वहाँ मास्टर को यह पर्ची देना ।

स्पिनिंग खाते से चपरासी के साथ मास्टर ने एक आदमी को भेजा । सर से पाँव तक रुई से भरा वह व्यक्ति लगता था जैसे कोई चलने-फिरने वाला रुई का पौदा हो ! ऐसे पौदे मिल में बहुत देखने में आते हैं । उन्हीं में से यह एक है । इसने बाहर आकर रूमाल से रूई झाड़ी, नल पर आकर हाथ-मुंह धोया । ऐसा लगता था कि रुई के इस चलते फिरते पौदे ने भी शायद अपने को हाथ-मुंह धोने के बाद ही पहचाना हो, क्यों कि उसने कहा, "शायद अब कुछ इन्सान बना हूँ । शरीर से कुशरीर हो जाता है और सूरत से बदसूरत, फिर भी हाय तोबा ! वाह बे ज़िन्दगी !"

वह व्यक्ति मैनेजर के कमरे में आया । श्यामकिशन फ़ाइल खोले बैठा था । वह फ़ाइल देखता रहा । आगंतुक ने महसूस किया कि उसे देख लिया गया है, पर जान-बूझकर उपेक्षा की जा रही है । मैनेजर की फ़ाइल से दृष्टि हटती न थी, आने वाला चुपचाप खड़ा रहने को मजबूर था ।

"हूँ, आ गये आप ?" श्यामकिशन ने व्यंग्य किया और दृष्टि सामने के चेहरे पर जमा दी ।

"भोला है।" धीरे से कहा, जैसे एक भाव ग्रहण किया हो।

"जी,........"

"विजय ?"

दृष्टि में प्रश्न था, आवाज़ में अकड़ और साथ में बहुत हल्की कड़क।

"जी।" सीधा उत्तर था। "जी हुक्म।" स्टेनो टाइपिस्ट बराबर के पार्टीशन से आकर खड़ा हुआ। चेहरे पर शीघ्र ही हुक्म बजा लाने का भाव था।

"तुम्हें नहीं बुलाया गया।"

स्टेनो टाइपिस्ट वापस चला गया। मन ही मन कह रहा था; जान बची और लाखों पाये।

"विजय, बैठ जाओ।"

"मामूली कारीगर हूँ।"

"नहीं, मज़दूर यूनियन के संयुक्त सेक्रेट्री हो और अब संघर्ष कमिटी के सेक्रेट्री।" प्रतिष्ठा दी गई थी, पर व्यंग्य के साथ।

विजय मेज़ की बाईं ओर पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

"आज मिल में कुछ दंगा होगा क्या ?" प्रश्न करके मैनेजर ने उसके चेहरे पर आँखें गड़ा दीं : चेहरा निश्छल था।

"मुझे नहीं मालूम ?" उसी निश्छल भाव से उत्तर आया।

"अफ़वाह थी कि मज़दूर तोड़-फोड़ की सोच रहे हैं।"

"वह आप लोगों की ओर से उड़ाई गई होगी। मज़दूर तोड़-फोड़ नहीं करता, वह जोड़ता है। वह कारीगर है, रचता है, बनाता है।"

"हमारा क्या फ़ायदा ?"

"वह आप ज्यादा जानते हैं। हम तो यह समझते हैं कि आपको 'लाक आउट' का बहाना मिल जायगा। मज़दूर हड़ताल को आखरी हथियार के तौर पर उठाता है।"

"हूँ" मैनेजर कुर्सी पर पीछे की ओर लेट गया। उसे तसल्ली थी कि दंगे के सम्बन्ध में उसका शक ठीक आदमी पर था।

"विजय, तुम्हें क्या कष्ट है ?" उसने पहलू बदला।

"जो सबको।"

"देखो, अभी नौजवान हो। अभी से तरक्की के रास्ते मत रोको। काम ढंग से करोगे तो बढ़ोगे।"

"उसकी मिसाल बल्लू दादा हैं, जो सत्तर साल की उम्र में भी मामूली कारीगर हैं और उम्र के बढ़ने के साथ-साथ उनकी बेइज्जती भी बढ़ती जाती है। इसकी मिसाल और भी हैं, जिन्हें अभी ज्यादा नुकसानी के कसूर पर निकाला गया है। पचहत्तर पचहत्तर साल के बूढ़े जिन्होंने आधी सदी मिल में काटी है इस आधी सदी में दुनिया तरक्की करती-करती अणु युग तक आ गयी, पर ये लोग दिमागी तौर पर तो क्या बढ़ते, पेट की भूख भी पूरी न कर सके। बल्लू का..............."

"तुम अच्छा भाषण करने लगे हो।"...

"मैं तो बात का सिर्फ जवाब दे रहा हूँ।"

"लड़ाका नौजवान मज़दूर हो, जोश दिखा रहे हो।" मैनेजर ने चुटकी ली, "मालूम है मिल में घाटा है।"

"तुम झूठ बोलते हो......

श्यामकिशन ने झेंप कर विजय की ओर देखा। ये शब्द उसके नहीं थे, कमरे के बाहर से आये थे। वह तमतमाता हुआ बाहर गया, लेबर आफ़िसर एक मज़दूर को डाँटता हुआ जा रहा था।

श्यामकिशन झुँझलाया और मन ही मन बोला : "कैसे बदतमीज़ हैं ये लोग।" प्रकट भाव से बोला : "फिर कहता हूँ। एकान्त में मेरी बात पर ग़ौर करना। श्यामकिशन ने ज़िंदगी देखी है। अब जा सकते हो।" श्यामकिशन खड़ा होकर दाईं हाथ की ओर खड़ी अलमारी की ओर मुड़ा। अलमारी के किवाड़ों में लगे आइने में देखा कि विजय खड़ा हो गया है, चेहरे पर उसके खुशी है, सीना उभर आया है; उसने अवस पर फ़ौरन

जेब से रूमाल निकाल कर जोर से फेरा। धीमे से कहा : "भोला नहीं, मरदूद है। कंटक ठीक ही कहता है।"

"जी..."

"कुछ नहीं, जा सकते हो।"

विजय ने नमस्ते की, जो ग्रहण नहीं की गई। फिर भी विजय बड़प्पन अनुभव कर रहा था। वह चला तो उसे महसूस हुआ वह तेज़ चल रहा है। खाते में लौटा तो लगा जैसे वह दिल में ज्यादा हौसला लेकर वापस आया है। मज़दूरों ने उसके इस वीरभाव को देखा तो समझ गये कि वह पाला मार कर आया है। वे घड़ी की ओर देखने लगे कि कब छुट्टी हो तो कब उससे बात करें।

विजय अपनी मशीन पर काम करने लगा और गुनगुनाने लगा :

गांधी जी ने सबक़ दिया है, नहीं जुल्म को सहना,
पाप शाप को धकिया करके, सच्ची-सच्ची कहना।

४

****

"यार, यह शंकर बड़े कमाल का आदमी है। देखो न, पुलिस को क्या झाँसा दिया ? बापूनगर में पुलिस सुबह दस बजे आई, डेढ़ घण्टे तक इन्तज़ार करती रही कि कब जलसा हो। हार झखमारकर चली गई, जलसा हुआ दोपहर बारह बजे; और यार, लाउडस्पीकर भी अगले ने बूढ़े कारीगर की छत पर लगवाया। क्या नाम है उसका ?" एक मज़दूर ने बहुत खुश होकर कहा।

"बल्लू दादा कहते हैं उसे। बड़े जीवट का आदमी है।" जनतासिंह ने उसी भाव से उत्तर दिया।

"जलसा बड़ा कामयाब रहा। बच्चे बूढ़े औरतमर्द सबने भाषण सुने। प्यारे, शंकर बोलता भी खूब है। मज़दूर की जिन्दगी और जहोजहद की सच्ची तस्वीर उतार देता है।" पहला मजदूर बोला।

"भई, बड़ा पुराना आदमी है। मैं इस मिल में बीस साल से हूँ,— पता नहीं बचपन से यहीं काम करता है क्या ? काम से थकता नहीं, जातू हो, बदली वाला हो, कोई भी हो; सबकी मदद को तैयार रहता है। बड़ा सीधा, मज़दूरों के यहाँ जाकर ऐसे रोटी खा लेता है, जैसे उनके ही घर का आदमी हो।" जनतासिंह ने शंकर के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दिया।

"मैं अहमदाबाद, बम्बई, ग्वालियर और ब्यावर की कपड़ा मिलों में रहा हूँ। बहुत कम आदमी ऐसे देखे हैं।" पहले ने ताईद की।

"भइया, मैं तो मज़ाक में कह दिया करता हूँ कि शंकर अकल में

दाना है, शराफ़त में देवता, फुर्ती में घोड़ा, हिम्मत में शेर और काम में गधा है।

"क्या मतलब ?"

"कितना ही काम कराओ उससे । थकता नहीं।" और खाने में, प्यारे इन्सान है। बड़ी थोड़ी खुराक है उसकी।"

"तुमने तो यार कविता सी जोड़ ली।"

दोनों मज़दूर हंस पड़े ।

इतने में वहाँ पर विजय आ गया। साथ में कामरेड सीताराम भी था। कामरेड ने ज़ोर से कहा, "लाल हिन्द।"

दोनों ने उसी ज़ोर से हँसते हुए कहा, "लाल हिन्द।"

कामरेड ने कहा—"सुना है, तुम्हारे यहाँ का जलसा बड़ा सफल रहा।"

पहला मजदूर—यहाँ तो यार, मज़ा आ गया।

जनतासिंह—प्यारे, शंकर ने समाँ बांध दिया। सब लोगों ने अपने अपने घरों से ही उसका भाषण सुना। सरकारी पाबन्दी कुछ न कर सकी।

कामरेड—तू डाल डाल, हम पात पात। पुलिस की चाल थी कि गिरफ्तारियाँ हों, लेकिन शंकर ने वह शह चली कि पैदल से शाह पिट गया। सुरजावल, अनोखेलाइन, नेहरू बस्ती और तुम्हारे बापू नगर, चारों जगह ऐसे ही जलसे हुए। हल्दी लगी न फिटकरी, रंग चोखा ही चोखा। सिर्फ लाउडस्पीकरों का ही खर्च आया, और वह भी शंकर ने किसी मिल के अफसर से ही लिया था।

विजय : पुलिस और श्यामकिशन ने वह मुंह की खाई कि भाई याद करेंगे। कंटक जी भी बड़े झेंप रहे हैं। कहते थे कि विजय, तू भी कम्युनिस्टों से मिल गया है। कांग्रेस और नेहरू जी के नाम पर बट्टा लगा रहा है। कम्युनिस्टों और गैर-कांग्रेसियों के साथ मिलकर तूने संघर्ष कमेटी बनाई है। शंकर को छिपाये छिपाये घूमता है।

पहला मजदूर—तुमने क्या कहा विजय भाई ?

विजय : मैंने कहा कि कांग्रेस का लक्ष्य तो किसान-मजदूरों की सेवा रहा है, और नेहरू जी तो खुद मजदूर-आंदोलन से बाबस्ता रहे हैं। फिर जब पुलिस की गोली ने कांग्रेसी और गैर-कांग्रेसी की तमीज नहीं की. तो हम कैसे करें ? रघुनाथ कौन कम्युनिस्ट था ? कांग्रेसी आंदोलनों में उसने सजायें काटीं, और शंकर की ज़िंदगी का एक बड़ा भाग कांग्रेसी संघर्षों में बीता है। कितने बलिदान हैं उसके। उसे कहर की नजरों से बचाना हमारा कर्त्तव्य है। और फिर कौन वह खिलौना है, जिसे हम जेबों डाले फिरते हैं। वह तो घूमता ही है। हिम्मत हो तो पकड़ लो।

उसी मजदूर ने फिर कहा : शंकर को पुलिस क्यों पकड़ना चाहती है ?

कामरेड सीताराम—इसलिये कि श्यामकिशन की उसके सामने पेश नहीं आती, इसलिये कि वह मजदूरों की हिमायत करता है और मिल-प्रबन्धकों की बेईमानी का पर्दाफाश करता है, इसलिये कि वह सच्चाई के साथ है और झूठ का दुश्मन है।

विजय : कामरेड ने ठीक कहा है। उस पर यह आरोप है कि वह मजदूरों को हिंसा और हड़ताल के लिये भड़काता है, जब कि हकीकत यह है कि उसने दोनों को दबाया। रघुनाथ की मौत से मजदूर इस कदर भड़का हुआ था कि मिल में आग लग जाती और हड़ताल कई महीने तक चलती। शंकर ने सिर्फ एक दिन की सांकेतिक हड़ताल कराई और मजदूरों को समझाया कि अपने गुस्से को तंजीम में लाओ। उसे बखेरो मत, उसे समेटो; और समय आने पर उसका प्रयोग करना।

कामरेड : लम्बी हड़ताल चलती, खूब चलती। मज़दूरों में जोश था, और अब भी है। डिप्टी कमिश्नर ने गोली वाले दिन वायदा किया था कि गोली-काण्ड की जाँच कराई जायगी, लेकिन अब तक भी कुछ नहीं हुआ। मिल मालिक ने दीवाली पर क्या कुछ कम किया। मजदूरों

के खून से चिराग जलाये, उनके मांस को चूंट चूंट कर मिठाइयाँ बाँटी, हमारे भाई गिरफ्तार कराये। मारे और रोने भी न दे।

कामरेड सीताराम को गुस्सा आ गया था। उसकी आँखें लाल हो आईं। नथुने फूल गये, उसने कहा: हम चुप बैठेंगे ? चले हैं शंकर को गिरफ्तार करने। उन्हें मालूम नहीं कि मजदूर आन्दोलन कहाँ का कहाँ आ गया। सरमायेदारी की हर चोट उसकी अपनी मौत का बुलावा है। रघुनाथ के खून ने लाल झंडे को और ज्यादा सुर्ख किया है।

वातावरण में गर्मी आ गई थी। सभी की भौंहें तन गई थीं। विजय ने कहा—बलिदान कभी वृथा नहीं जाते। वे रंग लाते ही लाते हैं। राष्ट्रों का निर्माण शहीदों के खून से ही हुआ है:

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पँ मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।

बाकी कामरेड, सब्र रखो, जिस तिरंगे झंडे की छाया ने देश को राजनैतिक आजादी दी है, वह आर्थिक आजादी भी देगी। भगवान् के दरबार में देर है, अंधेर नहीं है।

कामरेड सीताराम ने सर्द आह भरी। बोला: मैं तुम्हारी बात के आखिरी हिस्से से सहमत नहीं हूँ। फिर भी तुम्हारा हमारा साझा मोर्चा है। सरमायेदार के विरुद्ध सबको मिल जुल कर लड़ना है। शंकर दादा की लाइन मौजूदा वक्त के लिये सही है।

इस बीच बल्लू दादा भी आ गया था। उसने विजय और कामरेड की बात चीत के अंतिम भाग सुने थे। बोले—भय्या, पंचों मिल कीजे काजा, हारे जीते न आवे लाजा। इसके अलावा मजदूर तो कभी हारे ही नहीं। वह तो शुक्ल पक्ष के चाँद की तरह बढ़ें ही बढ़ें हैं। बात सीधी करो, काम सीधे करो, नतीजा ठीक। उस दिन जलसे में वह क्या गावे था, जिसकी शंकर ने मखौल उड़ाई थी, क्यों विजय भाई।

विजय: कामरेड सुनायंगे।

कामरेड (हँसकर)—वह उर्दू का शायर था, गाता था :

मैं ऐसा इन्कलाबे जहाँ चाहता हूँ,
आस्माँ के ऊपर जमीं चाहता हूँ।

शंकर दादा ने कहा था कि उस इन्कलाब में तो मजदूरों का भी बेड़ा ग़र्क हो जायगा।

सब हँस पड़े। बल्लू दादा बड़ी देर तक हँसता रहा, पट्ठा आस्मान के ऊपर जमीन चाहवै था।

जनतासिंह (हँसकर)—ऐसे शायरों को तो पूरन गुरु के अखाड़े में छोड़ दिया जाय, पट्ठों को रोज आस्मान के ऊपर जमीन नजर आ जाय, जब पूरन गुरु के चेले नये नये दाँव लगाकर अखाड़े में आस्मान दिखायें।

खूब हँसी हुई।

पहला मजदूर—क्यों बल्लू दादा। शंकर भाषण देकर कहां फरार हो गया ?

बल्लू—वह परकँच कबूतर थोड़े ही है, जो काबुक में बन्द रहे। वह तो भय्या, फुदकती चिड़िया है, दाना चुगा और उड़ गई।

बल्लू ने सवाल को साफ उड़ा दिया और हंसी के क़हक़हों में बात के रुख़ को मोड़ दिया। बोला : क्यों, कामरेड, आजकल तो श्यामकिशन बड़ा सिर पटकता होगा। अखबारों में अब तो हम जैसों के भी बयान छपते हैं।

कामरेड—हाँ, दादा, अब तो हमारा पहलू खूब उभर कर आ रहा है। अखबारों के दफ्तरों में भी मजदूर-हमदर्द हैं। उस दिन रघुनाथ की मौत की वजह से शंकर दादा उनसे मिल नहीं पाये थे। अगले दिन मिल लिये तो छपने लगे।

बल्लू—तुम तो उस दिन अखबारों में आग लगाने को तैयार थे।

कामरेड—दादा, शऊर एक दिन की चीज नहीं। रफ्ते-रफ्ते आता है।

बल्लू—कामरेड, तुम तो बड़े ही होशियार हो रहे हो।

विजय (मुस्कराकर)—मार्क्सी नजरिया है न ?

बल्लू दादा और मजदूर हँस पड़े और कामरेड झेंप गया।

कामरेड के झेंप जाने से वातावरण सूना हो जाता, लेकिन इसी वक्त मिस्त्री जालिमसिंह दो तीन कारीगरों के साथ बापू नगर में आ गया। आते ही कामरेड की कमर पर हाथ मारा और बोला—"बस देख लिया कामरेड, तुम्हारा इन्कलाब। बड़ी डींगें मारते हो। पुलिस का इतना हौवा बैठ गया। तुम्हारी संघर्ष कमिटी ने तो तय किया था कि चार जल्से अलग अलग बस्तियों में १० बजे सुवह से १ बजे दोपहर तक होंगे। लेकिन हुए वे बारह बजे दोपहर से ३ बजे दोपहर ढले तक, और वे भी छतों से।"

कामरेड जब तक जवाब दे, तब तक मिस्त्री के साथ आये कारीगरों ने शोर मचा दिया कि ये लोग तो चार सौ बीस हैं। रघुनाथ को मरवा दिया और अब औरों को मरवायेंगे।

कामरेड ने कहा—वाह जालिमसिंह, आज तुम इन्कलाब के पैरोकार बन आये। तुम्हें दरअसल अफसोस यह है कि शंकर दादा ने तुम्हें आज और मजदूरों की गिरफ्तारी और दमन का मौका नहीं दिया। इससे तुम्हारे श्यामकिशन के यहाँ मातम छाया हुआ है। आज अगर गिरफ्तारियाँ हो जातीं, सिर फूट जाते तो मिल-प्रबन्धकों के घर घी के चिराग जलते। मनचीता नहीं हुआ, तो बस्तियों में विरोधी प्रचार के लिये चले आये। उस दिन तुम्हारी मजदूर-हमदर्दी कहाँ गई थी, जिस दिन रघुनाथ के गोली लगी थी। उस दिन तो छिपे फिरते थे। अगर हम गलत थे, तो बताते मजदूरों को। जालिमसिंह, मजदूर, पाँतों में दरार डालकर उल्लू सीधा करना चाहते हो।

बल्लू दादा—देखो मिस्त्री जी, अपनी घी की रोटी की खातिर

दूसरों की सूखी मत छीनो । क्यों जुल्म करते हो ? मेरी क्या उमर है, मुझे इस उमर में धकिया दिया । भगवान् का भी खौफ खाओ ।

जालिमसिंह—बल्लू तू तो अपनी ले बैठा । मेरी बात तो कामरेड से है और विजय से है । लीडर हैं ये, शंकर के गुण गाते फिरते हैं । उसे छिपाते फिरते हैं । पर्दे के पीछे क्यों जाते हो ? मैदान में आओ ।

जालिमसिंह के साथ आये एक कारीगर ने कहा—मैदान में यह क्या खाकर आयेंगे ? इन्हें तो गाल बजाने आते हैं । शंकर भी यों ही जबान चलाता है, एक धौल मारूँ तो कलेजा मुँह को आ जाय । इस कारीगर ने अपने पुट्ठे दिखाकर अपनी चौड़ी छाती का करिश्मा दिखाया ।

यह हरकत सबको बुरी लगी, उन्हें तैश आ गया । तू-तू मैं-मैं हो गई । जनतासिंह ने अपनी कमीज निकाल कर रख दी और उस कारीगर की गर्दन दबा ली : "किसी और को समझा होगा । मुझें धौंस देगा तो हड्डी हड्डी चबा जाऊंगा । मैंने दसों मिलों का पानी पिया है । बड़ा पहलवान बनता है, सेठ अनोखेलाल के बादाम खाकर और पूरन गुरु के अखाड़े में जोर करके ।"

विजय और बल्लू ने छुटा दिया । कामरेड सीताराम ने कहा : "ज़ालिमसिंह, गुंडागर्दी नहीं चलेगी । आगे बहुत गुंडागर्दी होली है । शंकर को जब तुमने पिटवाया था, मालूम है तुम्हें क्या हश्र हुआ था । सेक्रेट्री और श्यामकिशन शहर छोड़ कर भाग गये थे ।"

ज़ालिमसिंह खिसियाना हो गया और अपने आदमियों को लेकर चलता बना ।

इसी वक्त बस्ती के मज़दूर बच्चे जलूस निकालते हुए आ पहुँचे । वे नारे लगा रहे थे : "नहीं चलेगी, नहीं चलेगी : तानाशाही नहीं चलेगी ।" "इन्क़लाब ज़िंदा बाद ।" एक बच्चे ने फिर गाना गाया :

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है ॥

इसके बाद बच्चों ने फिर नारे लगाये : मज़दूर आंदोलन : ज़िंदाबाद। शहीद रघुनाथ : ज़िंदाबाद। शंकर दादा : ज़िंदाबाद।

इस जलूस में बल्लू दादा भी शामिल हो गया, और वह भी खूब नारे लगवाने लगा।

बस्ती के लोग इस जलूस का आनन्द लेते रहे। बल्लू को देखकर एक ने कहा—शंकर दादा ही पहले काफ़ी थे, अब बल्लू दादा भी जब मैदान में आ गये तो बस अब जीत में देरी कहां ?

बल्लू दादा ने लोगों को बातें करतेदेख कर कहा—मेरी बात करो हो, भय्या। मैं भी अब बच्चा हूँ, बालक बानर एक सुभाऊ।

× × ×

शहर के उपनगर रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा में कुछ आदमी इधर उधर बैठे हुए हैं। किसी ने सिगरेट सुलगाई हुई है, कोई पान चबा रहा है। कोई स्टाल पर गर्म चाय का लुत्फ़ ले रहा है, कोई किताब या अखबार में मस्त है, तो कोई जेब में हाथ डाले चहल क़दमी कर रहा है।

हल्की हल्की सर्दी पड़ रही है, और रात के ९ बजे हैं। गाड़ी के आने में अभी पौन घंटा है। इसी समय एक साहब बहादुर स्टेशन पर आये, साथ में नौकर है, जो एक छोटा सा झोला लिये है। साहब बहादुर आते ही उधर गये, जहाँ थोड़ी-सी चहल पहल है। वहाँ उन्होंने ज़ोर से नौकर को डाटा, "तुम बड़े वैसे आदमी हो, यह छोटा झोला ले आये। बिस्तर नहीं लाये। रास्ते में सोने की दिक्कत रहेगी।"

नौकर ने काँपते हुए कहा, "हुज़ूर, माफ़ करो, आगे से ऐसी ग़लती न होगी।"

साहब ने यह भाँप कर कि इर्द-गिर्द के लोगों ने इस बात-चीत को सुन लिया है, फिर तनिक आहिस्ता से कहा, "देखो घर पर होशियारी से रहना है, कभी कुछ हानि हो जाय।"

इसके बाद वह घूमने लगा। पीछे पीछे नौकर था। नौकर को ज़ोर से कहा—सुनो, फिर पूछा, "क्या चल रहा है ?"

"मैंने आज ही संघर्ष कमिटी की मीटिंग बुलाई थी। सारी समस्याएं रखी थीं। मिल प्रबंधकों के हथकंडों से सब लोग बड़े नाराज़ थे। पुलिस, मिल-एजेंट और गुंडे मज़दूर बस्तियों में बड़ा रौब ग़ालिब कर रहे हैं। हम भी मुँह तोड़ जवाब दे रहे हैं। आम मज़दूरों को राज-नीतिक समझ भी देते रहते हैं; लेकिन तुम्हारी बड़ी याद होती है। ......और हाँ, बहुत से मज़दूर हड़ताल करने पर भी ज़ोर देते हैं।"

"और ?"

"मज़दूर यूनियन में विजय को कंटक के आदमियों का मुक़ाबला करना पड़ रहा है। वे कहते हैं कि तुम संघर्ष-कमिटी से नाता तोड़ लो, पर विजय अड़ा हुआ है। श्यामकिशन भी उसे कई बार बुला चुका है और तरह-तरह से बहकाता सिखाता है।"

"और ?"

"अपने आदमी सब ठीक हैं। हम मज़दूरों में खूब हौसला भरते रहते है। जनतासिंह खूब लगन से काम कर रहा है......

"मार-धाड़ तो नहीं करता।"

"नहीं। अब तो बड़ा गंभीर है। कभी कभी ताव खा जाता है। कहता है कि दादा का डर है, वरना मार मार दुश्मनों के परखचे उड़ा दूँ।"

साहब हँस पड़ा।

इसी समय एक आदमी इनके पास आगया। नौकरनुमा व्यक्ति ने कहा, मैं तो घर पर अकेला रह जाऊँगा। साहब ने डाटना शुरू कर दिया—"अकेले क्यों रह जाओगे ? इतना अड़ौस-पड़ौस जो है।"

वह आदमी आगे निकल गया। नौकरनुमा व्यक्ति ने कहा, "हम पूरे तौर पर लगे हैं। वल्लू दादा से बड़ी मदद मिल रही है। उसका मज़दूरों पर अच्छा असर पड़ता है। एलिज़ाबेथ अस्पताल से छः घायल मज़दूर अच्छे होकर आ गये हैं, चार और रह गये हैं। तुम्हारी हिदायत के अनुसार हम उन्हें गेट पर ले गये थे, उन्होंने अपनी समझ के अनुसार टूटे-फूटे शब्दों में कुछ बोला था।"

"शाबाश, अच्छा देखो, मज़दूर यूनियन पर अब कंटक जरूर अपना प्रभाव कर लेगा और मजदूर आंदोलन में अधिक से अधिक फूट डालने की चेष्टा करेगा। अब दो काम किये जा सकते हैं। मजदूर एकता के लिये विजय को आगे रखो। और सब मांगों के साथ रघुनाथ की मौत के मुआवज़े की मांग को भी खूब उठाया जाय। इस मांग से मजदूर यूनियन के प्रभाव के मज़दूरों को बहुत लगाव है। वह उन्हीं के ग्रुप का था। इसका विरोध कंटक के पैरोकार भी नहीं कर सकेंगे। अगर करेंगे तो स्वयं अपने मुँहों पर कालिख पोतेंगे।

"सत्या मज़दूर आंदोलन में धीरे-धीरे आ रही है। उससे मिलते रहो। उसे जलसों में ले जाओ, उसे मंच पर बैठाओ, उसके भाषण भी कराओ। धीरे धीरे अच्छा बोलने लगेगी।"

"बीड़ी की तलब हो आई। सुलगा लूँ क्या?"

"अब तक जो स्टेशन पर वातावरण बनाया है, उसे मिटाओगे क्या? लो, ये छालियाँ खालो।······संघर्ष-कमिटी की मीटिंग करते रहो और सब विचारधाराओं के प्रतिनिधियों से संपर्क रखो। विजय और तुम राजनैतिक दलों से भी मिलते रहो, तथा अन्य ट्रेड यूनियनों से भी। मैं भी समय मिलने पर ज़रूरी लोगों से मिल लेता हूँ। लेकिन ज्यादा तो नहीं मिल सकता।"

"अच्छा"

"इसके अलावा मैं एक काम और कर रहा हूँ। वह है मज़दूरों में सांस्कृतिक जागरण का। इसकी शुरुआत तुम जानते हो, इस साल के शुरू में ही कर चुके थे, लेकिन अब इसे बड़े पैमाने पर करना चाहिये। ऐसे मजदूरों की अभी कमी नहीं जो किसी भी ट्रेड यूनियन के कामों में दिलचस्पी नहीं लेते, वे गाने-बजाने, नाटक, कवि-सम्मेलन आदि के कार्यों में अवश्य दिलचस्पी लेंगे। हम मजदूरों में से ऐसी कई मंडलियाँ तैयार करेंगे, जो ऐसे प्रदर्शन करती रहेंगी। हर मजदूर बस्ती में हम बच्चों और बड़ों के लिये एक-एक स्कूल खोलेंगे और सबसे बड़ी बात यह, एक बड़ा पुस्तकालय रघुनाथ के नाम पर चलायेंगे। इन कामों के लिये मजदूर बस्तियों में माहौल पैदा करो, ऐसे मज़दूर ढूँढ़ो जो इन कामों में दिलचस्पी लें। हम मजदूरों का एक छोटा क्लब भी चालू करेंगे। इसके लिये मैं छात्रों, लेखकों, पत्रकारों, मास्टरों, वकीलों, वैद्यों और डाक्टरों से बात-चीत कर रहा हूँ। इस तरह के लोग जब बस्तियों में जाना शुरू कर दें तो उन्हें तुम्हारी तरफ़ से मदद मिलनी चाहिये। मैं भी थोड़ा बहुत करता रहूँगा।"

"अच्छी बात।"

"शुरू में मेहनत तो पड़ेगी, लेकिन इससे मज़दूर संगठन मजबूत हो जायगा। आगे को मज़दूरों में से ऐसे सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यकर्ता निकलते रहेंगे जो अपनी गाड़ी खुद खींचने लगेंगे।...... इस समय भी कार्यकर्ताओं की कमी नहीं हैं, आंदोलन के कारण काफ़ी कार्यकर्ता मिल जायेंगे। उन्हें ढूँढ कर उनकी रुचि के अनुसार काम देने की बात है।......मालिक ने दंगल चालू कर रखा है। हम भी दंगल चला सकते हैं, खेल-कूद का प्रबंध कर सकते हैं। पहले हम कभी कभी ऐसा करते रहे हैं, लेकिन ज़रूरत इन्हें नियमित बनाने की है। पिछले दिनों के संकीर्णतावादी दौर में हमने बड़ी हानि उठाई है। उस हानि को अब पूरा करना है तथा काम आगे बढ़ाना है।"

"लेकिन ज़रूरत है सियासी समझ की"

"मैं समझता हूँ तुम्हारा मतलब। जब लोगों में उत्साह आयगा तब वे आगे भी सोचेंगे—अच्छी तरह से सोचेंगे। सियासी समझ बनाना बच्चों का खेल नहीं। बिना अच्छे आधार के जो समझ बनती है, वह टूट जाती है।......अच्छा देखो इंजीनियर महेन्द्रसेन से मिलते रहना।"

"महेन्द्र सेन से ?"

"हाँ।"

"वाह, यह खूब आदमी पकड़ा है, दादा।"

"उनसे बड़ी मदद मिलेगी और हाँ, एक बात का ध्यान रखना कि किसी भी व्यक्ति से राजनीतिक संकीर्णता मत बरतना। संकीर्णता में इन्कलाब नहीं, इन्कलाब उचित उदारता में है।......अरे देखो, तुम हमारा हैट छोड़ आये, जाओ जल्दी जाओ।........."

"अच्छा हुजूर।"

एक सिपाही उधर आ निकला था।

"अच्छा, चलो तुम। पैसे तो काफी हैं संघर्ष कमिटी के पास।"

"हां, दो महीने तक आंदोलन चल सकता है, अगर और भी चंदा जमा न हो। आपको जरूरत है ?"

"नहीं, काम चल रहा है। सत्या के यहां खाने-पीने का सामान भिजवा देना।"

"मेरा हैट कमरे में खूंटी पर टंगा है। जल्दी जाओ। तुम हो बेवकूफ़।" साहब ने ज़ोर से डांटा। दूसरा व्यक्ति झपट कर गया। सिपाही उसे देखता रहा, कुछ दूर वह आगे बढ़ा। पीछे लौटा तो साहब भी नहीं था।

सिपाही के मन में संदेह पैदा हो गया। वह कुछ सोचने लगा, इतने में उसने देखा पुलिस की दौड़ आ रही है। वह आगे बढ़ा। उससे एक पुलिस अफ़सर ने पूछा—यहां शंकर तो नहीं आया था। सूट में था।

"नहीं हुज़ूर; यहाँ सूट पहने कोई आदमी नहीं आया।" सिपाही ने तपाक से कहा, पर मन ही मन उसे बड़ा मलाल हुआ कि शिकार निकल गया।

स्टेशन का कोना-कोना छाना गया लेकिन वहां कोई हाथ न आया।

अंधेरे में वह व्यक्ति दूर निकल गया था, उसने तो अपना साफ़ा उतारा, बालों में कंघी की, बीड़ी सुलगा कर कश खींचा—अब वह एकदम सीताराम था। वह मन ही मन हँसा—बड़ी मजेदार मुलाकात रही शंकर दादा से।

५

****

अनोखे काटन मिल के सामने वाले दुराहे पर एक लम्बी-चौड़ी दुकान है। इसके एक खन में चायख़ाना है, जहाँ अधिकांशत: मज़दूर चाय पीते हैं। दूसरे खन में नमकीन और मिठाई तैयार होती है, और तीसरे खन में पान, सिगरेट, और बीड़ी की दुकान सजती हैं और चौथे ख़न में बिसातख़ाने का सामान है।

दस साल पहले इस ऊँची दुकान का मालिक एक छाबड़े में बीड़ी सिगरेट लेकर बैठता था। धीरे-धीरे वह बढ़ता गया। जब छाबड़ा लगाता था, तब तो उसका कोई नाम भी नहीं जानता था। कुछ समय के बाद वह मौजूदा दुकान के पहले मालिक की मिन्नत करके एक फट्टा लगाकर बैठ गया था। उस दुकानदार का थोड़ा-बहुत दुकान का काम कर दिया करता था। बाद को मामूली-सा किराया भी देने लगा। पान बीड़ी की दुकान चल पड़ी तो इस व्यक्ति का नाम बीना हो गया। कुछ और वक्त गुज़रा तो दुकान में और भी रौनक आगई। उस रौनक को देखते हुए लोगों ने उसे बीनी लाला पुकारना शुरू कर दिया और बाद को जैसाकि बीनी लाला बताता है कि "भगवान् की किरपा हुई तो बारह बरस के दलीदर धुल गये। सनीचर की दसा हटी तो भगवान् ने छप्पर फाड़ कर दौलत दे दी" तब बीनी लाला बीनराम लाला हो गये। और फिर जो बात बनी तो लाला ने मौजूदा दुकान को जड़-मूल से ही ख़रीद लिया। उसकी होशियारी से प्रभावित होकर लोग उसे लाला प्रवीण राम कहने लगे। ठीक ही है : पैसे तेरे तीन नाम। परसा, परसी, परस

राम। इन्हीं लाला प्रवीण राम ने दिन छिपने से पहले ही एक कहानी छेड़ी हुई है। छज्जे के नीचे तख्त पर पालथी मारे हुए बैठे हैं और चारों तरफ़ अपनी दृष्टि से उचित स्थानों पर लोगों को जगह दी हुई है।

हाथ में छड़ी ऊपर उठाकर उसे झटके से नीचे करते हुए लाला प्रवीण राम ने कहा—"मगर नहीं। मैं नहीं माना, मैंने डिप्टी साहब से कहा—हुजूर! मैं भी इज़्ज़त रखता हूँ, मेरे भी बाल-बच्चे हैं। टेका वालों का खानदान छोटा-मोटा नहीं, जहाँ भी जाओगे हुज़ूर, खान दान की बड़ाई मिलेगी। सेठ निहालचंद ने बीच बाजार में मेरी टोपी उछाली। कैसे समझौता करूं? रुपये अगर ले लिये तो दो चार दिन के, मगर इज्जत तो पुश्त दर पुश्त चलेगी।" डिप्टी साहब ने कहा—भाई परवीनराम तेरी बात सोलह आने ठीक।"

"तू ही बता, बल्लू, मैंने कुछ गलत कहा क्या? इन्सान की इज्जत ही होती है।"

"बिल्कुल जी, इज्जत गई तो सब कुछ गया।" बल्लू ने जबाब दिया।

"मेरा भी यही कहना है कि मजदूरों की लड़ाई इज्जत की लड़ाई है। हमारा भाई मरा, हमारे आठ भाई अभी अस्पताल में हैं, आज दो आये हैं, और साहब हमारे लीडर गिरफ्तार! मार भी लो और रोने भी मत दो।" "काली कमीज पर काला सूटर पहने हुए एकतिरासन के एक मजदूर ने कहा।"

खाते में तो अब मास्टर मिस्त्री हाथ भी उठाने लगे हैं, मैंने सुना है। एक दूसरे मजदूर ने कहा।

"हाँ, कोशिश की थी मास्टर ने। मजदूरों ने कह दिया, मान जा, यों ही मत करना, चाँदने में नहीं सुनेगा तो अंधेरा भी होता है।"

जितने लोग बैठे थे, सब हँस पड़े।

"अजी, हम तो यह कहते हैं कि कोई एक मारे तो दस मारो। बल्कि यों ही क्यों, कोई घूरे भी तो धप्प से एक धौल दो। क्यों सुनें किसी की? किसी का दिया खाते हैं, मेहनत करते हैं और रोटी खाते हैं।" लाला प्रवीणराम जो इस समय पैरों के नीचे कम्बल दबा कर लोट गये थे, उठ बैठे।

"अपना भी यही उसूल है।" एक मजदूर ने अपनी मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

"रिसाल, तेरी बात और है भाई। तू तो दादा है। तुझसे तो एक दफा को श्यामकिशन भी डर जाये।" ला० प्रवीणराम उसे एक तरह से लांछित कर रहा था, किन्तु शब्दों का जोड़ ऐसा बैठा रहा था कि रिसाल बुरा न माने। उसे रिसाल की कैफ़ियत मालूम है—वह डकैतों में रह चुका है। कई दफा लाला की दुकान के सामने कई लोगों के चाकू मारे पर कुछ न हुआ। गवाही कौन दे, बदमाश के सामने? लाला के उस पर पचास रुपये चाहते हैं, मगर मजाल क्या माँग ले। उसने एक बार रुपये माँगे थे तो रिसाल ने कह दिया था कि जब कहीं हाथ पड़ेगा, तभी दे दूंगा। माँगने की ज़रूरत नहीं, माँगने पर जूत मिलता है, और उसने हाथ में जूता निकाल कर दे दिया था।

आज की बैठक भी लाला ने इसीलिए लम्बी चलाई थी कि रिसाल आ बैठा था और उठने का नाम न लेता था। लाला को डर था कि आज यह कुछ सवाल करेगा, और मना किस तरह की जायगी? अपने मन में वीरता का संचार करने के लिये ही आज वह निडरता का नाटक रच रहा था और साथ में रिसाल पर धौंस भी बैठा रहा था।

इसी बीच वल्लू ने कहा—"अच्छा, चले लाला परवीनराम।"

"चले जाना भाई, अभी तो आठ बजे होंगे। लम्बी रात होती है। चारपाई पर भी तो पड़े रहोगे।" लाला जानता था कि बैठक में से जहाँ एक चिड़िया उड़ी, सब फुर्र से उड़ जायेंगी, और फिर रह जायगा लाला और रिसाल।

लाला ने कहा—शंकर कहाँ है ? दिखाई नहीं दिया कई दिनों से।

"मालूम नहीं तुम्हें।" एक व्यक्ति ने मफ़लर ठीक करते हुए कहा।

"ना बाबू जी, मुझे नहीं मालूम।" लाला ने सरल भाव से कहा।

"कई दिन हुए वह तो पकड़े जाने से बच गया, विजय के साथ ही था। फरार है।" बाबूनुमा इस व्यक्ति ने कहा।

"कहाँ काम करते हो, भई ?" रिसाल ने पूछा।

"इसी मिल में, बाइंडिंग खाते में क्लर्क हूँ।"

"क्लर्क होकर भी यार यों ही रहते हो। अच्छे कपड़े पहनो।" रिसाल ने अपनी धज दिखानी चाही। बढ़िया फ्लैनेल का कुर्ता था, उसके ऊपर बढ़िया गर्म कपड़े की जवाहरकट, सर पर साफा था। हाथ में छोटा सा डंडा।

क्लर्क : "भैया, हम भी मजदूरों जैसे ही हैं। तनख्वाह में फर्क ही कितना है। बल्कि बुनते के मजदूर से कई दफा कम ही पैसे मिलते हैं।"

लाला प्रवीणराम का प्रसंग खत्म हो गया था, वह उसे दुबारा लाना चाहता था। बोला—"रिसाल की बात ठीक है। आदमी को ढंग से रहना चाहिये। और फिर जब तुम बाबू हो, तो बाबुओं की तरह रहो। हमारे रिसाल को देखो। नाम को मजदूर है, पर रहता है लाला और बाबुओं से भी अच्छी तरह। क्या बात है ? हौसला है। काल भी एक बार को आ जाय तो उसे भी हरा दे। शंकर भी हौसले वाला आदमी है। छक्के छुड़ा रखे हैं उसने भी। ऐसे ही लोग कुछ करते हैं दुनियाँ में।"

रिसाल तपाक से बोला—"शंकर का हौसला और है, और हमारा और। वह लीडर है। हम हैं खिलाड़ी। सौ आदमियों के गोल में छोड़ दो, इसी डंडे से काई सी फाड़ दूँगा।"

लाला ने गर्दन से दाद दी : "भैया रिसाल, यह बात ठीक है, पर शंकर भी कम खिलाड़ी नहीं। भगतसिंह की पार्टी में रहा है।"

बल्लू ने कहा : "अजी मैं एक किस्सा सुनाऊँ शंकर का। एक बार......।"

"मैं भय्या, अभी आया, पेशाब कर आऊँ।" लाला उठा, उसने सोचा यहाँ से भाग निकलने का सब से अच्छा मौका है। रिसाल अब उलझ चुका था। लाला ने इशारे से नौकर को बुलाया और कहा कि मैं चला। थोड़ी देर में दरी और तकिया उठा लेना।

लाला झट प्रेमपुरी में से निकल कर अपने घर की ओर गया। वहाँ आगे एक औरत अपने मर्द से कहती जा रही थी—"तू शंकर के पास मत जाया कर, न उसे बुलाया कर। देख मैं पकड़वा दूँगी उसे। मुझे बुरा लगता है मरा! रंड संड कहीं का। न जाने कितने घर बर्बाद कराये हैं उसने।"

लाला ने ध्यान से सुना। मर्द कह रहा था—"शोर न मचा। सड़क पर ऐसी बात नहीं करते। शंकर को तो तू खैर पकड़वा ही देगी, पर मुझे यकीन है कि तेरे इस ढंग से मुझे जेल जरूर हो जायगी।"

"तू पकड़ा जाय तो मैं तो छूटूं इस जंजाल से। रात दिन तेरा फिकर मुझे खाये जाता है। बच्चों को दो जून रोटी मिलती हैं, उससे भी जायेंगे।" उस औरत ने कहा।

लाला ने झपटकर उनकी बराबर आना चाहा पर अपने भारी शरीर के कारण वह आ न सका, तब लाचार होकर आवाज दी—सुनना भैया। उसने सोचा था कि मैं इनसे दुकान से सौदा पत्ता खरीदने की बात से शुरू करके अपना मतलब हल कर लूँगा। लेकिन जब दोनों ने मुड़कर देखा तो वह उन्हें पहचान गया—"कहो, मरदमानस को क्यो यों सड़क पर डांटा जाता है? घर में ले जाकर चाहे इस पर डंडे बरसा,

लेकिन सड़क पर कुछ मत कह। यह है मरद, इसकी इज्जत बाजार में है। लोगों में आँखों का लिहाज, उधार पत्ता इसकी इज्जत पर ही है।"

"देखो न लाला, सड़क पर उल्टी सीधी बात करती चलती है।" उस व्यक्ति ने कहा।

"गलत काम करती है। गलत को सही मैं नहीं कह सकता, चाहे जान चली जाय। मेरी एक दफा कलक्टर साहब के यहाँ पेशी थी। वहाँ मुझ पर गलत बात कहने को बड़ा जोर डाला गया, मगर नहीं। मैंने साफ कह दिया—कुछ हो जाय, झूठ नहीं बोल सकता। बात इन्साफ की करूँगा। लेकिन भैया, यह भी ठीक ही कहती है। बाल-बच्चों वाला आदमी है। सोच संभल कर चल। भैया, राजनीति फिर भी होती रहेगी। बुरा वक्त जा रहा है, देखता नहीं कितनी बेकारी है। तेरी मिल का ही एक मजदूर कल बता रहा था कि जाबर जरा जरा सी बात में सस्पेंड कर देने के चक्कर में हैं। तुझे तो पता होगा ही, तू तो शंकर का चेला है, पचहत्तर आदमी वाइंडिंग खाते से निकाल दिये थे छः महीने हुए। आज एक मजदूर आया था, वह कह रहा था कि बहुतेरी लिखा पढ़ी चली है, मामला मजदूर सभा ने अदालत में दे रखा है, मगर अभी कुछ नहीं हुआ।" लाला ने दुरंगी चाल खेली।

"अजी रात दिन रोती हूँ, मानता नहीं। बस इसे तो शंकर ही शंकर है······।"

"बकवाद न कर, क्यों करती है ऐसी बात। सौ दफा कहा कि सड़क पर मत कर ऐसी बात, पर नहीं मानती।" वह आदमी झपटने लगा, औरत को भी तेज चलना पड़ा।

लाला पीछे रह गया। घर के पीछे पहुँचे तो एक स्वस्थ अप-टू-डेट व्यक्ति उधर से बाजार जा रहा था। दोनों ने नमस्ते की। उस व्यक्ति ने पूछा—"कहो लाला जी! कोई नई!"

"नई और बिल्कुल नई। अन्दर आ जाओ।'

दोनों अन्दर गये। लाला ने धीरे से कहा—"सामने अनोखे लाइन

में परली तरफ़ एक मज़दूर खानदान रहता है। झपटोगे तो रास्ते में ही मिल जायेंगे। मजदूर की बीवी खूब लम्ब तड़ंग मरद मार औरत है। उसके मालिक का नाम मुझे याद नहीं, उसका मालिक शंकर के पास जाता है और शंकर उसके पास। पक्की खबर है। पुलिस से भाग कर उसके ही पास छुपा है। वह या तो वहीं मिल जायगा या औरत से पता चल जायगा। बैयरवानी है, डरावेंगे, धमकावेंगे या दस बीस रु० का लालच दें गे तो सब उगल देगी।" लाला ने खुश होकर सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर के कन्धों पर दोनों हाथ रख दिये।

इन्सपेक्टर ने युक्ति से प्रेम प्रदर्शित करते हुए लाला के हाथ उतार दिये और कहा—"धन्यवाद लाला जी। चलूँ फिर उस औरत से मिलने का प्रोग्राम बनाता हूँ।"

"अजी सुनो तो एक नई और सुनो। वह रिसाल है न, जानते होगे बदमाश है। मिल में है।.........

"हाँ हाँ, बहुत अच्छी तरह" इन्सपेक्टर ने दिलचस्पी दिखाई "अभी मेरे पास बैठा था, शायद अभी दुकान पर हो। वह भी शंकर से मिलता जुलता है। बदमाशों की मदद से ही तो मफरूर होते हैं, वरना हम जैसों की कहाँ हिम्मत कि किसी को पनाह दे सकें।" लाला ने निशाना छोड़ा।

"अच्छा, रिसाल मदद दे रहा है। उसे तो भुगत लूँगा।"

"अगर उसे भुगत लोगे तो बस काम भी हो जायगा।" लाला मन ही मन खुश हुआ, फिर बोला—"चाय पीकर जाओ।"

"अब नहीं, फिर कभी" इन्स्पेक्टर चलने लगा।

"अजी सुनो तो सही, अब तो काम ज़्यादा हो गया है। मेहनत बढ़ गई है, खर्च बढ़ गया है। कुछ सरगना मजदूरों को चाय भी मुफ्त पिलाता हूँ। पैसे बढ़ने चाहियें, वरना फिर मैं काम छोड़ दूंगा। कोयलों की दलाली में खामखां हाथ काले करूँ।"

जरूर लो, पैसे बढ़ा देंगे। बेफिक्र रहो। ऐसी कच्ची बातें न किया करो, लाला जी।" इन्सपेक्टर ने हंस कर कहा और लाला प्रवीणराम भी हँस पड़ा।

जब इन्सपेक्टर चला गया, तब वह घर में घुसा। देखते ही सुन्न हो गया—उसका लड़का कुलीनराम चुपचाप खड़ा बात सुन रहा था। "क्यों, तू क्या कर रहा था यहाँ ?" प्रवीणराम ने संभलकर अपने लड़के को डाँटा।

'यह तो पता तब चल जायेगा जब तुम्हारे मकान पर मजदूरों के हमले कराऊँगा। दुकान में क्या कम आमदनी है, जो अब यों ज़लालत पर उतर आये। आगे शंकर भैया, शंकर भैया, और पीछे गिरफ्तारी की बात। मैं तमाम दुनियाँ में मुंह काला कराऊँगा।" कुलीनराम चीखने लगा।

"ओ, क्या करता है, जाड़ों की रात है, दुनिया सुनेगी। मेरी इज़्ज़त का ख़याल कर, लाख रुपये की इज्ज़त है मेरी। मैंने बेटा, कुछ नहीं कहा उससे। तुझे भरम हुआ है।" लाला बेटे को समझाने लगा।

"जाओ बैठो, आगे से कभी ऐसा देखा तो मुझसे बड़ा दुश्मन कोई नहीं होगा तुम्हारा।" लड़का बाहर निकल आया।

लाला अन्दर चला गया। मन ही मन कह रहा था—तू तो मेरा जन्म-जन्म का दुश्मन है। मेरी नहीं किसी कसाई की औलाद है ससुर।

× × ×

रात का घोर सन्नाटा। कोठी के बाहरी बरामदे की लाइट बुझा कर श्यामकिशन घूमने लगा। उसे कंटक जी की बातों पर हँसी आ निकली। आदमी जोरदार है, क्या भूत सवार हुआ है ? कहता है कि कवि-गोष्ठी कराओ, संगीत सम्मेलन कराओ और मिस तारा से उद्-घाटन कराओ। कहता है कि इन आयोजनों से मजदूर भी हमारी तरफ

खिचेंगे और·········। दूसरा कारण साफ नहीं कह पाता है। पागल ! चलो, हमें क्या ? इसी माया से चलता है तो इसी से चले। मैंने उससे उस दिन कहा—मुझे दुनिया में दो चीजें प्यारी हैं; रुतबा और दौलत, तो उसने कहा कि मुझे तीन : रुतबा, दौलत और औरत। यह कह कर वह खूब हंसा। मुझे उसने विश्वास दिलाया कि मजदूर यूनियन पर उसका कब्ज़ा होकर रहेगा।······

आहट से ध्यान टूटा, अंधेरे में कोई अंधकार का साकार रूप आ रहा है।

"आ गये ?"

"जी"

श्यामकिशन ने आगन्तुक को, जिसने कम्बल से अपने को खूब ढक रखा था और मुँह पर ढाटा बांध रखा था, अपने अन्दर के कमरे में ले गया। इस व्यक्ति ने कम्बल और ढाटा उतार दिया। श्यामकिशन ने कमरे में बगैर रोशनी किये ही उस व्यक्ति को बड़े प्यार से बैठाया और खाने-पीने के लिये पूछा। आगंतुक व्यक्ति ने हाथ जोड़ दिये।

"क्या खबर लाये ?"

"ज़ालिमसिंह का आदमी फेल हो गया है। कंटक के आदमी थोड़ा-बहुत चल रहे हैं, लेकिन न के बराबर। मजदूरों का संगठन रोजाना फौलादी होता जा रहा है।"

'खुलासा करो।"

"ज़ालिमसिंह के आदमी की संघर्ष कमिटी में कोई नहीं सुनता। सब समझ गये हैं कि वह फूट परस्त है। वह जरूरत से ज्यादा अक्लमंद है।"

"बिल्कुल ठीक।"

"कंटक के आदमी भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं, शंकर के आदमियों ने उनकी बड़ी पोल खोली है और सबसे ज्यादा विजय और उसके आदमी उनका पर्दाफाश कर रहे हैं।"

"ठीक।"

"श्रौर"

"वीरभानु श्रापके सख्त खिलाफ चल रहे हैं, मिल में दंगे का षड्यन्त्र उस दिन उन्हीं का था, जो श्रापने रोक लिया। दफ्तर के बाद श्रधिकांश समय चीफ इंजीनियर के साथ रहते हैं। मेरा श्रादमी लगा है, एक दो दिन में श्रौर कोई खबर देगा। एक बात श्रौर है, भद्दी है, कहो तो कहूँ ?"

"कहो, मैं बुरी से बुरी बात सुनने को तैयार हूँ।"

"चीफ़ इंजीनीयर ने कल श्रपनी बीवी से कहा कि वीरभानु जनरल मैनेजर की लड़की सुकन्या से प्यार करता हैं। हँस कर कह रहा था कि वीरभानु का कहना है कि मैं एक दिन मिल का मैनेजर बनूंगा श्रौर श्यामकिशन का दामाद भी। श्रौर श्राप सेक्रेट्री साहब से भी मिलते रहें।"

"हूँ ऽऽ। यह मजाल ?"

श्यामकिशन का दिमाग भन्ना गया। उसे महसूस हुश्रा कि उसे गश श्रा जायगा। पर वह संभला, उसे इतनी कमजोरी नहीं दिखानीं चाहिये।

शंकर कहाँ है ?" उसने संभल कर पूछा।

"वह एक जगह श्रौर एक वेश में नहीं रहता। कभी साधु बनकर मजदूर बस्तियों में डोलता है, कभी श्रप-टू-डेट साहब बन जाता है, कभी खद्दर की पोशाक में काँग्रेसी नेता बन जाता है, श्रौर कभी कुछ। उसे पकड़ तो लिया जाय, लेकिन यह श्राम ख़याल है कि उसके पास पिस्तौल श्रौर बम के गोले रहते हैं ...."

"मजदूरों की बस्तियों के श्रलावा भी कहीं जाता है !"

"हाँ, मिल के कई बाबुश्रों श्रौर श्रफसरों से भी उसके सम्पर्क हैं।"

"श्रफसर कौन हैं ?"

"चीफ इंजीनियर महेन्द्र सेन से उसके गहरे सम्बन्ध हैं।"

"हूँ ऽऽ। घर में इतना बड़ा चोर। इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।" मैनेजर की आँखों में गुस्सा छा गया। ये आँखें यदि रोशनी में देखी जातीं तो बड़ी भयावह हो जातीं। ग़नीमत है कि अंधेरा है।

"और वीरभानु से भी संपर्क है उसका।"

"सीधा नहीं! महेन्द्र सेन की ही मार्फत हो सकता है।"

"तुम इतने अच्छे भेदिया हो! शंकर को पकड़वा नहीं सकोगे? मैं तुम्हें बहुत इनाम दूँगा। यकीन है मुझ पर?"

"यक़ीन है, तभी तो इतना काम कर रहा हूँ। शंकर की मुझे खुद फिक्र है। कुछ सुराग है कि परसों वह सुरजावल आयेगा झुटपुटे में विजय के यहाँ।"

"मुझे पैसों की ज़रूरत है।"

"हाँ, हाँ, अपने पैसे ले जाओ।" श्याम किशन ने छोटे नोटों की एक गड्डी जेब से निकाल कर उसे दे दी।

इस रहस्यमय व्यक्ति ने नोटों की गड्डी संभाली और पूछा—"जाऊँ?"

"हाँ।"

इस आदमी ने पुनः ढाटा बांधा, कम्बल ओढ़ा और चुपचाप निकल गया।

मैनेजर बाहर आया, उसने बरामदे में रोशनी की। अपनी टार्च ली और बगीचे में उतर गया। उसका अंतर गर्मी से झुलस रहा था; "वीरभानु तुम!! मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊँगा। शंकर इतना खतरनाक नहीं, जितना कि तुम हो। मैं तुम्हें लड़का समझकर छोड़ देता था, पर तुम आस्तीन के साँप निकले। पर अब तू न दीन का रहेगा, न दुनिया का।"

वह बहुत देर तक बाग में घूमता रहा, ठंडी हवा चल रही थी।

लेकिन उसे गर्मी महसूस हो रही थी, उसे खयाल हुआ कि भावनाओं में नहीं बहना चाहिये, मुझे अब दो-दो दुश्मनों से निबटना है। उसने दोनों मुक्के तान लिये : "है किसी में ताब जो मेरे मुकाबले आये, शंकर जेल जायगा चाहे जो हो, और वीरभानु या तो शहर छोड़ जायगा, या फिर........" थोड़ी मानसिक शांति होने पर वह बरामदे में आया। घड़ी में दो बजे थे : "ठीक उसके भी तो दो शत्रु हैं।" फिर उसने चौकीदार को आवाज लगाई। वह ऊँघ रहा था।

श्याम किशन ने जोर से दूसरी आवाज़ दी। वह घबरा कर उठने लगा तो धड़ाम से गिर पड़ा।

उठकर आया, "जी, हुज़ूर।"

"तुमने वह कहावत सुनी होगी : "सोते का कटरा और जागते की कटिया।"

"जी हुज़ूर।"

"फिर यों ऊँघते क्यों हो ?"

"मैं चलता हूँ, होशियारी से सब कुछ देख लो। खूब सावधान रहो, अगले महीने से हम तुम्हारे पैसे बढ़ा देंगे।"

चौकीदार में चुस्ती आ गई।

श्याम किशन ज़नानखाने में चला गया, उसे बहुत देर तक दो की गिनती का ध्यान रहा, उसके जीवन में शुरू से ही दो शत्रु रहे। बमुश्किल तमाम वह एक शत्रु से छूटा था। रघुनाथ उसके लिये सर दर्द बन गया था। वह गया तो यह वीरभानु आ गया। सोचते-सोचते वह करवटें बदलता रहा। तीन का जब घंटा बजा तो उसे कुछ तसल्ली हुई और वह सो गया।

६
****

"सूरज छिप रहा है।" वीर भानु ने पश्चिमी क्षितिज की ओर इशारा करते हुए कहा।

"आशाओं का सूरज ?" महेन्द्र सेन ने मज़ाक किया।

"हमारी आशाओं का नहीं, हमारे शत्रुओं की आशाओं का सूरज।" वीर भानु ने मुस्कराते हुए तपाक से कहा।

फिर दोनों हँस पड़े।

चहल क़दमी करते हुए दोनों आगे बढ़ गये। वीर भानु गुनगुना निकला : उनकी लबों की नाज़ुकी का क्या कहिये।

एक पंखुड़ी गुलाब की सी है॥

महेन्द्रसेन ने कहा—"दर्दे दिल का दौरा हो चला ?"

"जी, वह तो हर समय चलता है।" वीर भानु ने आह ली।

"वाह, हाँ साहब आख़िर प्रेमी का दिल है।" महेन्द्रसेन ने हँसकर कहा।

"क्यों साहब, आप हमारे प्रेम की मज़ाक बनाते हैं ?" वीरभानु मुस्कराया।

"आप अपनी आहों के साथ खुद मज़ाक करते हैं ?" महेन्द्रसेन ने कहा।

"कैसे ?"

"आप सुकन्या से प्यार नहीं करते।"

"ऐसा न कहिये।"

"ठीक कह रहा हूँ, ग्राप श्यामकिशन से प्रतिद्वन्द्विता में हार रहे हैं, इस कसर को ग्राप सुकन्या का प्यार जीतकर पूरा करना चाहते हैं।"

"ग़लत।"

"मिस्टर वीर भानु, जिगरी से कुछ छिपाया नहीं जाता, वास्तविकता क्यों नहीं मान लेते ? मैं नाटक करने से थोड़े ही इंकार करता हूँ। खूब नाटक किए जाग्रो।"

"मैं नाटक कर रहा हूँ, प्रेम का केवल ग्रभिनय कर रहा हूँ ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। देखिये साहब, नाट्यकला का मर्म यही है कि ग्रभिनेता समझे कि वह ग्रभिनय नहीं, बल्कि यथार्थ जीवन में से गुज़र रहा है।" महेन्द्रसेन के चेहरे पर गहरी मुस्कराहट ग्रा गई।

"मैं पागल हो जाऊँगा, महेन्द्रसेन ! मुझे मत सताग्रो। मैंने सुकन्या के प्यार में ग्राँसू बहाए हैं, रात-रात भर नहीं सोया हूँ। चाँदनी रातों में मैंने सुकन्या के सौन्दर्य से चाँद को दीप्त देखा है......।"

"कविता का ग्रब ग्रच्छा ग्रभ्यास हो गया है। मिल की खटखट में क्यों रहते हो ? कहीं जाकर नदी-तट पर न्यारा बंगला बसाग्रो ग्रौर वहाँ काव्य-सृजन करो।" महेन्द्रसेन जोर से हँसा।

"निर्दय, तुम इन्जीनियर हो, विज्ञान को तुमने ग्रपने हृदय की सारी सम्पदाएं सौंपदी हैं। मेरे प्रेम में ग्रविश्वास करते हो। तुमने कभी प्रेम नहीं किया, न करते हो ग्रौर न कर सकोगे।" क्रोध ग्रौर क्षोभ के प्रवाह में वीर भानु "ग्राप" कहना भूलकर तुम पर उतर ग्राया।

उत्तर में महेन्द्रसेन हंसा, खूब हँसा; फिर बोला—"मेरी बात की सचाई समय प्रकट करेगा।"

"मैंने ग्रापको सहृदय समझकर ग्रपने प्रेम का रहस्य बताया था, ग्रब देखा कि ग्राप प्रेम-तत्व से कोरे हैं, इसलिए ग्रापसे चर्चा बेकार है।" वीर भानु ने प्रसंग को समाप्त करते-करते भी हमला कर दिया।

"आज बैठक में भी चलना है, वीर भानु जी ! काफी दूर निकल आए। कार खड़ी कर आए हैं अजीतगढ़ के सामने। आओ, लौटें।" महेन्द्रसेन ने कहा।

बिना कुछ कहे वीरभानु लौटने लगा। उसे बैठक की चिन्ता सताने लगी। न जाने वहाँ क्या होगा, बोला : "महेन्द्रसेन जी, आज सेठ जी न जाने क्या-क्या विषय रखेंगे ?"

"आज मेरी बर्खास्तगी का निर्णय होगा ?" महेन्द्रसेन ने लापरवाही से कहा।

"क्यों ?" सशंक भाव से वीरभानु ने कहा।

"आप न डरें। आप अभी नहीं जाएँगे।"

"आज आपको हुआ क्या है ?"

"जो कुछ कह रहा हूँ, ठीक कह रहा हूँ। सचाई समय पर प्रकट होगी।" महेन्द्रसेन गंभीर हो गया था।

"क्यों साहब, हममें क्या सुर्खाव के पर लग रहे हैं जो हम रोक लिए जाएंगे और आपके कौन से पुण्य क्षय हो गये हैं जो आप हटा दिए जायेंगे।" वीर भानु उस प्रश्न पर प्रेम के प्रश्न से अधिक केन्द्रित हो गया। उसे सेन की यह बात बड़ी विचित्र लग रही थी।

महेन्द्रसेन चुप रहा।

"आपसे किसने कहा ?" वीरभानु ने उसी प्रश्न को दूसरी तरह से छेड़ दिया।

"मेरे एक सूत्र ने।" सेन ने बात छोटी करनी चाही।

"आपका यह सूत्र कहाँ है, साफ बताओ पहेली न बुझाओ।" वीरभानु ने बहुत अनुरोध किया।

"अन्तिम समय में क्या छुपाऊं आपसे ? मेरा यह सूत्र शंकर है ?"

शंकर के नाम ने वीरभानु को आश्चर्य चकित कर दिया : "आपने आज भांग तो नहीं खाली, इंजीनियर साहब !"

"हो सकता है।"

"शंकर ?" फिर शंका ग्राई।

"हाँ !" स्पष्ट उत्तर था।

"शंकर ने ग्रापसे क्या कहा ?"

"यही कि मुझे नौकरी से ग्रलग करने का षड्यन्त्र किया गया है।"

"शंकर को कैसे पता चलता है ?"

"जैसे श्यामकिशन को पता लग जाता है।"

"हूँ ऽऽ।……मतलब यह है कि जोट बराबर की है ?"

"एक क्रान्तिकारी है, ग्रौर दूसरा षड्यन्त्रकारी।"

"पर हैं तो बराबर ?"

"मैं एक प्रतिक्रियावादी ग्रौर क्रान्तिकारी की तुलना नहीं कर सकता। गंगुग्रा तेली राजा भोज से बढ़चढ़ गया है।"

"शंकर तो ट्रेड यूनियन वादी है, क्रान्तिकारी नहीं।"

"शंकर को ग्राप केवल तीन वर्ष से जानते हैं।"

"ग्रौर ग्राप ?'

"दस वर्ष से। वह इस समय पंतालीस वर्ष का है ग्रौर मजदूरों के वर्ग में पिछले तीस साल से है। चन्द्रशेखर ग्राजाद ग्रौर भगतसिंह की पार्टी में था वह, उसने जनता का निकट से ग्रध्ययन किया है ग्रौर उसका ग्रध्यापन भी; उसने गलतियाँ की हैं, हारा है, पर ग्रपनी भूलों को उसने ग्रपना, पाठ बनाया है। ये ही क्रांतिकारी के गुण हैं।"

"लीडर" वीरभानु के चेहरे पर प्रशंसा उभर ग्राई।

"पर वह लीडर मजदूर वर्ग ग्रौर जनता को मानता है। व्यक्तिवादिता को, उसके गलत प्रभावों को कुचलता है।" व्याख्या ग्राई।

"जब वह मजदूरों को नेता मानता है तो पढ़े-लिखों का महत्व उसकी निगाह में कम ही होगा।" शंका उभर ग्राई।

"क्यों ? ज्ञान के प्रति उसको निष्ठा है, प्रीति है, ग्रौर प्रतिष्ठा की

भावना है। मैं तो उसके सम्पर्क में जहाँ अशिक्षित देखता हूँ, वहाँ शिक्षित भी।"

"तो आप शंकर के भक्त हैं।"

"शंकर भक्ति का कायल नहीं, मैं उसका दोस्त हूँ।"

"तो यों आप मिल में शंकर के गुर्गे रहे—आई मीन फिफ्थकालमिस्ट, मेरा पाँचवें दस्ते के व्यक्तियों से तात्पर्य है।"

"जी, दरींचेशक (निःसन्देह)। मैं इसे यों कहूँगा कि मैं मजदूरों का हमदर्द रहा और रहूँगा भी।"

अब वह अपनी गाड़ी के पास पहुँच गये। महेन्द्रसेन ने गाड़ी ड्राइव करनी आरम्भ की और वीर भानु पास की गद्दी पर, गाड़ी जब चली तो वीरभानु ने फिर शंकर की चर्चा छेड़ दी और कहा: "यह बताइये कि शंकर में आपने क्या विशेषता देखी?"

"अपने उद्देश्य में अपूर्व लगन और उसके लिये संगठन का भाव। आपने देखा कि अब हड़ताल में क्लर्क भी भाग लेते हैं, पिछले दिनों उन्होंने मजदूरों की हमदर्दी में सांकेतिक हड़ताल में भाग लिया, ऐसा क्यों? शंकर क्लर्कों से भी बराबर मिलता है और इस तरह मिलता है कि उन पर आंच न आए। मुझे मालूम हुआ कि फोल्डिंग खाते के एक बाबू से आज वह सुबह तीन बजे मिला। हर आन्दोलन में क्लर्क मजदूरों के साथ जाएंगे।"

"आप मेरे भविष्य के लिये अच्छे सूत्र हो रहे हैं। आगामी जनरल मैनेजर मैं ही हूँ।"

"आप निकाले जायेंगे, निश्चिन्त रहें।"

"मैं जनरल मैनेजर भी बनूंगा और श्यामकिशन का जामाता भी।" वीर भानु ने गम्भीरता से कहा और महेन्द्रसेन हँस पड़ा।

"तुम मेरी बात पर क्यों हँसा करते हो?" वीरभानु ने तनिक चिढ़कर कहा।

"तुम शेख चिल्ली जो हो" महेन्द्रसेन और भी हँस पड़ा।

"जाओ भी।" वीरभानु चिढ़ गया।

"जाओ भी नहीं की बात नहीं, यदि तुम अक्लमन्दी से चलो, तो तुम्हारा काम बन सकता है। तुमने ठीक कहा था कि मैं वैज्ञानिक हूँ और वैज्ञानिक सदा हिसाब किताब से चलता है, और तुम हो प्रेमी, जो आधा पागल होता है।" महेन्द्रसेन फिर हंस पड़ा।

वीरभानु ने कहा : गाड़ी रोको। और दोनों उतरकर सड़क के किनारे की बेंच पर बैठ गये। वीरभानु ने कहा : "बोलो क्या किया जाय ?"

महेन्द्रसेन : "तुम सेक्रेटरी से मिला करो, वह एक माह से जो नहीं आ रहे हैं, उसका कारण उनकी बीमारी नहीं, बल्कि सेठ जी और श्यामकिशन के ढंग से चिढ़ है। वह नहीं चाहते कि श्यामकिशन को इतना प्रोत्साहन मिले। वह इस इन्तज़ार में हैं कि श्यामकिशन कब फेल हो ?"

"अच्छा !"

"जी, इसी को तो कहते हैं वृन्दावन।"

दोनों खूब हँसे।

"मैं समझ गया, अब मारा पापड़ वाले को।"

जंगल का शून्य उनके क़हक़हों से गूंज गया।

"सुकन्या के ज़रिये उनके घर में तो मैंने सुरंग लगा ही ली है।" वीर भानु और भी खुश हो गया।

"फिर वही बात, उधर को मत सोचो।" महेन्द्रसेन ने हल्की सी डांट दी।

"अच्छा गुरु जी, जैसे कहोगे वैसे करेंगे।" वीरभानु ने हँसकर कहा और फिर दोनों चल दिये।

चांद निकल आया था। वीरभानु ने कहा : "लो, इन्जीनियर, मेरी आशाओं का चांद निकल आया।"

× × ×

श्याम किशन नौकर से मालिश करा रहा था।

आज सुबह के चार बजे से ही उसने अपना काम शुरू कर दिया था। महेन्द्र सेन, वीरभानु, क्लर्क एसोसियेशन के पदाधिकारियों, मिस्त्री जालिमसिंह, कई कारीगरों तथा पूरन गुरु तक उसने बातें की थीं। 'कंटक' जी, गिरीश जी और पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट से भी उसने सम्पर्क स्थापित किया था। मिस तारा से भी प्रार्थना कर चुका था कि वह अपनी गतिविधियाँ तेज़ कर दें।

उसने अपने प्रशासन के चारों चूल अच्छी तरह देख लिये थे। शत्रु की चालों को परख कर उनको तोड़ के जाल बिछा दिये थे। अपने पक्ष की न्यायता की कहानियाँ अखबारों के लिये तैयार करा दी थीं।

तेल मालिश करा कर वह लड़ाई के दूसरे दौर के लिये तैयार हो रहा था।

मालिश के बाद नहा धोकर और खाना खाकर जब उसने सिगरेट में कश मारा तो धुएँ में से झाँकती हुई उसे सेक्रेटरी की शक्ल दिखाई दी, और वह बोला—तुम इतने दिन तक कहाँ रहे? ध्यान में ही नहीं आये। इस घर पर तो ध्यान ही नहीं था।

उसे भेदिये पर गुस्सा आया। उसने भी इस घर का कोई हवाला नहीं दिया, फिर उसे खयाल आया कि भेदिये ने उस रात को ज़िक्र किया था पर अपनी भावनाओं की बहक में वह उस मुद्दे को भूल गया था।

उसने घड़ी देखी—२॥ बजे हैं। उसने सेक्रेटरी को फ़ोन मिलाया।

"नमस्ते जी, मैं श्यामकिशन बोल रहा हूँ।"

"मैं आपके पास आना चाहता हूँ।"

उसने गाड़ी मँगवाई और वह सेक्रेटरी की कोठी पर पहुँच गया। नगर के अत्यन्त शान्त, पूर्ण स्निग्ध और सुचारु वातावरण में यह कोठी बनी थी। श्यामकिशन उस कमरे में चला गया, जहाँ सेक्रेटरी बैठा हुआ था।

इस कमरे में वह पहले कई बार आया था, लेकिन आज वह इस

कमरे की शान से अभिभूत हो गया, लम्बी-चौड़ी भव्य मेज पर चारों ओर घूमने वाली कुर्सी पर बैठे भारी भरकम सेक्रेटरी ऐसे लगे, जैसे साक्षात् विष्णु बैठे हों। सुसज्जित और सुगन्धित कमरे में सेक्रेटरी सिगरेट भी सुगन्धिपूर्ण पी रहे थे। सेक्रेटरी ने बैठे ही बैठे कहा : "आओ भाई श्यामकिशन।"

"नमस्ते जी", वह कुर्सी पर बैठ गया, उसने सेक्रेटरी की ओर देखा तो सेक्रेटरी की आँखों में व्यंग्य खेल रहा था। श्यामकिशन ने उस व्यंग्य के प्रभाव को अपने चेहरे पर विनय के भाव लाकर दबाना चाहा, किन्तु बिन जाने ही वह उस 'व्यंग्य' का उत्तर भी देने लगा :

"इधर इतनी व्यस्तता रही कि आ ही न सका। बुजुर्गों के दर्शन होते रहते हैं तो ठीक ही रहता है।"

सेक्रेटरी हंस पड़ा, श्यामकिशन को लगा, जो कुछ उसने कहा है उसे स्वीकार नहीं किया गया। उसने खुद अनुभव किया कि वास्तव में उसका एक-एक शब्द झूठ है। वह मन ही मन झेंप गया। फिर उसने सेक्रेटरी की ओर देखा : स्वस्थ, साठा सो पाठा की कहावत का साक्षात स्वरूप। "अब तो आपका स्वास्थ्य अच्छा है ?"

"हाँ, पहले से ठीक हूँ।" सेक्रेटरी मुस्करा दिया। इस मुस्कराहट में गहरा व्यंग्य था।

"आपकी बीमारी के कारण आपको पहले कष्ट नहीं दिया। आपको मालूम है कि मिल में बड़ा हंगामा चल रहा है। आज रात को श्रीमान् सेठ जी के यहाँ बैठक है उसी सिलसिले में।"

"हाँ, आज की बैठक का मालूम है।" संक्षिप्त और सधा उत्तर आया।

"आप आइयेगा।"

"श्रीमान् सेठ जी जो काम सौंप देंगे, वही करने लगेंगे।" वाणी में आत्म-विश्वास था और साथ ही अपनी ओर से पहल कदमी करने में अरुचि।

"बात यह है कि मुझे मालूम हुआ है कि चीफ इंजीनियर महेन्द्रसेन मजदूरों से मिला हुआ है, शंकर से उसके सम्बन्ध हैं और एक ओर मजदूरों को भड़काता है और दूसरी ओर वीरभानु को उकसा रहा है।"

सेक्रेटरी ने सिगरेट में कश मारकर और कुर्सी पर अपने को ढीला छोड़कर कहा—"वीरभानु को कैसे ?"

"वीरभानु को अपनी शिक्षा-दीक्षा का घमण्ड है। उस घमण्ड को वह हवा दे रहा है।" श्यामकिशन ने बात को संकेत से समझना चाहा।

"ठीक।"

श्यामकिशन इस 'ठीक' शब्द को अच्छी तरह से ग्रहण न कर सका। सेक्रेटरी की ओर देखा तो वह मुस्करा रहा था।

"चाय लोगे या कहवा ?" सैक्रेटरी ने प्रसंग बदल दिया।

"कहवा।"

घंटी बजी, चपरासी आया और आदेश हुआ—दो कहवे, जल्दी।

कहवा आने तक सेक्रेटरी आराम से सिगरेट पीता रहा, और श्यामकिशन हर कश में एक नई कहानी अंदाज़ रहा था। उसे लगा जैसे सेक्रेटरी अनुभव कर रहा है कि उसकी उपेक्षा का समय व्यतीत हो गया, वह स्थिति को क्षणों में संभालने की क्षमता रखता है।...और ये कश, उसे खुद को यह महसूस करा रहे हैं कि, महत्वाकांक्षा में अपने से बड़ों का सम्मान करना न भूलना चाहिये।

कहवा आया, दो कप दोनों के सामने पेश किये गये। सेक्रेटरी ने वातावरण में ताज़गी लाना अपना कर्त्तव्य समझा।

"श्यामकिशन जी, तुम बड़े होशियार हो। सब ठीक ही होगा। तुम तो साहसी हो, बात क्या है ? इससे कहीं बड़े आन्दोलन तुमने तोड़े हैं।"

"वह ठीक है जी, लेकिन घर के दुश्मन बड़ी खराबी कर रहे हैं।"

"घर में दुश्मन तो पहले भी थे।"

"इतनी खुली हरकतें न थीं।"

"हरकतों का कारण ढूँढ़ो।"

'असमय की महत्वाकांक्षाएं।"

सेक्रेटरी के भावों से श्यामकिशन को अनुभव हुआ कि वह हँसना चाहते हैं, पर हँसी को रोकने की चेष्टा कर रहे हैं। वह समझ गया कि उत्तर उस पर भी फिट हो रहा है। उसने कब चेष्टा नहीं की कि वह सेक्रेटरी न हो जाय ? उसे फिर सूत्र हाथ लगा कि असमय की महत्वाकांक्षा खलती है, फलती नहीं।

"श्यामकिशन, मैंने तो शुरू से ही तुम्हारा समर्थन किया है।"

"जी।" श्यामकिशन पूरा आश्वस्त न था, उसे लग रहा था कि सेक्रेटरी में कहीं कुछ है, जो बातचीत के स्वाभाविक प्रवाह में भी नहीं निकल पाया।

सेक्रेटरी श्याम किशन के भाव को ताड़ गया, वह उसकी योग्यता से प्रभावित था, पर वह उसकी कमज़ोरी भी जानता था, "ऐसी कमज़ोरियाँ जो उसे कमीनेपन तक ले आती थीं।" सेक्रेटरी की धारणा थी कि यदि वह उन्हें छोड़ दे तो सोने का आदमी हो जाय। उसने चाहा कि वह उसे इस समय बताये लेकिन उसने सोचा कि उसे एक और टक्कर लगनी चाहिये, ताकि वह अच्छी तरह संभल सके।

सेक्रेटरी ने श्यामकिशन के चेहरे की ओर देखा। उसे एक दम धूर्त्तता नज़र आई। उसने सोचा—यह धूर्त्तता टूटनी ही चाहिये। उसने कहा : "महेन्द्रसेन और वीरभानु तो मेरे पास कई बार आए हैं, पर कोई ऐसी तोड़-फोड़ की बात तो नजर नहीं आई।"

श्यामकिशन हतप्रभ हो गया। दुश्मन अब उससे तेज चल निकले हैं। वह यह न पूछ सका कि वे क्या-क्या कहते थे ?

वह अभिवादन करके उठा और सीधा अपनी कोठी की ओर चला।

वह इस नई हार के क्षोभ को दाबकर विजयी होने की नई चालों को सोच निकालने का यत्न कर रहा था। अपने अन्दर की कमी को बाहर लाने के लिए वह अपने मानस को मथ रहा था। इसी समय

उसकी मोटर जब लाला प्रवीण राम की दुकान के सामने से गुज़री तो लाला अपने किसी गाहक से कह रहा था—"भैया, आस्मान का थूका मुँह पर ही आता है।"

श्यामकिशन ने जेब से रूमाल निकाल कर अपने मुँह को पोंछ लिया।

७

****

धूप ढल चुकी है और सुबह की पाली के मज़दूर काम से लौटने लगे हैं। सुरजावल में थोड़ी-थोड़ी चहल-पहल शुरू हो गई है। रात का खाना तैयार करने के लिए औरतें पानी के लिए अपने बर्तन लेकर म्युनिसिपल नलके पर इकट्ठा हो गई हैं। उधर खाली वर्तनों की टकराहट और इधर पूरी बस्ती में एक नलका होने के कारण पानी की क़िल्लत ने औरतों की वाणी को शह दे दी है।

उधर सार्वजनिक टट्टियों के पास ज़मीन के खाली टुकड़े पर बच्चे खेल रहे हैं। किन्हीं के हाथों में शराब की ख़ाली बोतलें हैं, जिनमें वे पानी भरकर शराब पीने का नाटक कर रहे हैं। किन्हीं के हाथ में छोटी चिलमें हैं, जिनमें घास-फूँस जलाकर अपने को सुलफ़ैया दरसा रहे हैं। कोई बीड़ी और सिगरेट के टोटों को इकट्ठा किए हुए हैं और कभी बीड़ी और कभी सिगरेट के टोटों को जला कर कश मारते हैं। कोई सिगरेट के खाली डिब्बों में कंकड़ भरे हुए है और अपने माथे पर पन्नी चिपका कर राजा बने हुए हैं। ये बच्चे आपस में बातचीत करते हैं तो इनके मुँह से गालियाँ यों निकलती हैं जैसे इस बस्ती से दुर्गंधि, जहरीली दुर्गंधि। कुछ बच्चे हाथों में डण्डे लेकर एक दूसरे पर वार करने का उपक्रम भी करते हैं। यहाँ पर जो बुजुर्ग आते हैं, उनमें से अधिकांश को बच्चों की ये हरकतें अस्वाभाविक नहीं

लगतीं। इसलिये वे इन्हें डाटें भी क्या ? इन बच्चों में से कभी-कभी कोई यह कह बैठता है : बे, देखते रहना कि कहीं शंकर दादा न आजायें।

लोग बैठे हुए गप-शप हाँक रहे हैं। बीड़ियों का दौर चल रहा है। इनमें से कुछ तो काम से लौटे हैं और कुछ रात की पाली में जाने से पहले थोड़ी बहुत दिलजोई करने के लिए आ बैठे हैं। सामने की तरफ बैठे हुए उस नौजवान रसिया मजदूर ने, जिसकी जुल्फों से तेल चू रहा है, अपने एक साथी की तरफ देखते हुए कहा—"प्यारे, कल हमने एक बाइसकोप देखा 'जमाने की हवा।' क्या पूछते हो ? मज़ा आगया। उसके एक साथी ने कहा—"क्या खास बात थी उसमें ?"

"डाकुओं के खेमे में जब सेठ के कोड़े पड़ते थे और उसको कई-कई दिन तक रोटी नहीं दी जाती थी तो प्यारे मज़ा आ जाता था।"

तीसरे मजदूर ने कहा—"गाने कैसे थे ? कोई गाना याद हो तो सुनाओ।" इतने में कामरेड सीताराम जनतासिंह के साथ आ गया। सब ने कहा कि "आओ, कामरेड बैठो।" एक मजदूर ने तपाक से कहा —"लेकिन एक शर्त है। सियासत और तहरीक की बातें न हों।" दूसरे मजदूर ने कहा—"कामरेड का जवाब नहीं है। जब देखो तब सियासी समझ का ढोल बजाते घूमते हैं।" रसिया मजदूर ने कहा "अभी सड़क से एक मोटर गुजरी है। उसमें कुछ साहब बैठे थे। कामरेड, तुम्हें वह मोटर रास्ते में मिली होगी ? कौन साहब हैं वह ?" कामरेड ने कहा—"कौन ऐसा है जो उन्हें नहीं जानता :

जि़क्र उनका जुबान पर आया।
यह कहीं दास्ताँ न हो जाय॥

दूसरे मजदूर ने कहा "वाह कामरेड क्या शेर कहा ? वह तो एक दम हूर हैं।"

तीसरा मजदूर बोला—"मैंने तो उसे कल भी देखा था।"

रसिया मजदूर ने कहा—"उन्होंने तो प्यारे हमें बिस्मिल बना

दिया है।" इस पर सब खिल-खिलाकर हँस पड़े। एक अधेड़ से मजदूर ने कहा—"राजा, इस रास्ते न चलना; इस पर अच्छों-अच्छों के होश फाख्ता हो जाते हैं।"

एक और ने कहा—"यह आग का दरिया है।" कामरेड सीताराम ने इसे यों पूरा किया—"और डूब के जाना है।"

एक मजदूर बोला—"कामरेड अब तो तुम भी रंग में रंग गए। हमें पता न था कि तुम इतने गहरे पानी में हो, अब तक तो सियासत में दम भरते थे, अब शायर भी हो गये हो। कामरेड ने बीड़ी में कश मार कर हँसते हुए कहा—"कम्युनिस्ट संन्यासी तो नहीं होते? वे तो भौतिकवादी होते हैं। उनका नज़रिया तो यह है कि दुनिया में सभी को सुख-सुविधा मिले। जहां तक कविता का सम्बन्ध है कम्युनिस्टों से बड़ा संस्कृति का कौन पैरोकार होगा।" इस पर सब मजदूर कामरेड की ओर देखने लगे, और कामरेड ने फ़ौरन मौका देखकर कहा—"कामरेडों, इसी पर हो जाय चाय।"

"चाय के पैसे कहाँ हैं?" रसिया मजदूर ने कहा।

"तुम लोग इतनी हल्की बातें करते हो? बोनस की लड़ाई जारी है। पैसे ही पैसे लो। और फिर इस बूते पर हुस्न वालों की बातें करते हो? कामरेड ने मात दी। "बोनस की लड़ाई ने एक मजदूर की तो जान ले ली। और पता नहीं, आगे क्या होगा?" दूसरा मजदूर बोला।

"होगा क्या? बोनस मिलेगा। एक दिन मिल हमारी होगी। मजदूरों की ताकत दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। चाय जल्दी मंगा लो, यह बात गलत है।" कामरेड ने तेजी से कहा। "यह अपने नाम के कामरेड हैं, मानेंगे थोड़े ही।" तीसरे ने कहा। बैठे हुए मजदूरों ने मिल-जुलकर चाय मंगवाई। जब चाय लेने एक मजदूर चला तो कामरेड ने कहा: "एक कवेंडर का सिगरेट भी ले आना।"

"इसे कहते हैं उंगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना।" चौथे मजदूर ने मज़ाक की।

"हमसे तो कोई उंगली ही नहीं पकड़वाता।" रसिया मजदूर ने कहा।

"वह आये, दर्द दिया और चले गये।" दूसरे ने बात उठाई।

"उन्हें क्या मालूम कि हम यहाँ तड़पते हैं।" तीसरे ने शह दी।

"आहों में असर होगा तो आयेंगे जरूर।" चौथे ने आशा का संचार कर दिया।

कामरेड हंसकर बोला—पूरी चाँडाल चौकड़ी है।

"हाँ, जी ! हम तो है ही चाँडाल।

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

"प्यारो, हसीनों की दुनिया का यही रंग है।" रसिया मजदूर ने आह भर कर कहा।

"बहुत हो चुकी यार, कौन है वह ?" जनतासिंह ने पूछा।

"प्यारे, तुम्हें क्या ? बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ?" चांडाल चौकड़ी के एक सदस्य ने कहा, और सब हंस पड़े।

"चर्खा बना दूंगा सुअरों का।" जनतासिंह गुस्से में बोला।

"राजा, पहलवानी और होती है, और प्रेम और; बड़े से बड़े पहलवानों का यहाँ चर्खा बन जाता है। ज़्यादा न पूछो। सारे दाँव पेंच भूल जाओगे, दोस्त।" चांडाल चौकड़ी के दूसरे सदस्य ने कहा।

"बता न, बकवास न कर।" जनतासिंह को तैश आ गया।

"खुदा खैर करे, उनका ज़िक्र हो रहा है।"

तीसरे सदस्य ने कहा और कामरेड की ओर देखकर कहा—"कामरेड, सुनाओ न पहले वाला शेर।"

"जनतासिंह, ये जिक्र करते हैं मिस तारा का, सेठ अनोखेलाल की सुपुत्री का, मजदूर इन्कलाब की दुश्मन का।" कामरेड ने व्याख्या की।

"धत् तेरे की।" जनतासिंह हंस पड़ा।

"कामरेड मुँह मांगा चंदा देंगे। इन्कलाब के बाद बस हमारा तो एक काम कर देना और वह यह कि मिस तारा से हमारी शादी करा देना।" रसिया मजदूर ने हँसते हुए कहा।

सब हँस पड़े। दिन की ड्यूटी से थके शरीर जैसे खिल पड़े और रात की ड्यूटी में जाने वाले मजदूरों के दिलों में हरियाली छा गई।

"वाह, यह भी खूब रही हक़ हमारा और लगे भाई छीनने। सब से पहले हम ही उनके नैन-बान से घायल हुए; दवा हमें चाहिये, या तुम्हें।" दूसरे मजदूर ने कहा।

"वाह, बेटा, वाह! खूब नक्शे लेते हो। मैं तो दीवाली के दिन सेठ की कोठी पर हुए प्रदर्शन में शामिल हुआ ही था उस माहरू के कारण।" तीसरे ने अपना हक़ जनाया।

"बेटा, डंडे चल जायेंगे। यों न होगी।" चौथे ने जल्दी से कहा।

"कामरेड, देखा। सूत न कपास, जुलाहे में लट्ठम-लट्ठा। वाक़ई में यह चाँडाल चौकड़ी है। अबे, इन खुरा-फ़ात के लिये तो रिसाल और उसका टोला ही काफी है।" जनतासिंह ने कहा:

"वाह क्या यही सियासी समझ है जनतासिंह की? देखो न कामरेड प्यारे:

मिट्टी की मूरतों में
क्या खूब सूरते हैं।
हक़ इनमें दीखता है,
इसलिये घूरते हैं॥

"अभी उस दिन संघर्ष कमेटी ने एक कवि सम्मेलन कराया

था। वह कवि गा रहा था: इन्सान सुन्दरता और सच्चाई का पुजारी है, पैसे ने इन दोनों को तिजोरी में कैद कर लिया है, इसीलिये गरीब जनता की पैसे वालों से लड़ाई है। गरीब और अमीर का संघर्ष इन्सानियत के लिये है।" रसिया मजदूर का चेहरा यों चमक उठा, जैसे कवि को श्रोताओं से दाद मिली हो।

"वे, बड़ी दूर की कोड़ी लाता है। तुझे तो मिस्त्री जालिमसिंह की जोड़ पर छोड़ दे।" जनतासिंह ने पहले रसिया की ओर तरेरा और फिर मुस्कराया।

"यह बात कही प्यारे, जालिमसिंह का तो मैं मुर्गा बना दूं। प्यारे हम मजदूर हैं, मजदूरों की हर लड़ाई हमारी अपनी लड़ाई है, पर प्यारे, हर वक्त की हाय-हाय अपने बस की नहीं।" रसिया बोला।

"राजा, दिन-रात चक्की में पिसते हैं, हँसी मजाक में दो-चार छन गुज़ार लेते हैं, दिल हरा हो जाता है। कोई गुनाह हम करते नहीं; ज़ुबान की लपालपी ही करते हैं, मस्त रहते हैं। फिक्र से फ़ाका भला समझते हैं।" दूसरा बोला।

"जनता सिंह, समय पर पीछे न पाओगे। शंकर, दादा से पूछना कि जब सन् ४६ में चालीस दिन की हड़ताल हुई थी, हमने कितना काम किया था। रही बात दिलजोई की, उसके बिना अपनी गुज़र नहीं। और अपनी तो भैया, शादी भी 'लव मैरिज' हुई है।" तीसरे ने कहा।

और एक जोर का ठहाका लगा।

"कामरेड को पता है कि उस दिन जब रघुनाथ शहीद हुआ था, हमने प्रदर्शन में कितना हिस्सा लिया था। उससे अगले दिन की सांकेतिक हड़ताल में भी रिसाल के छक्के छुड़ा दिये थे। और अब भी, जो हुक्म होगा, उसे बजायेंगे। बाकी दोस्त, अपनी मस्ती पर जिन्दा हैं, वरना अब तक मिल की मशीनों ने मुर्दघाट पहुँचा दिया होता।" चौथे ने कह कर पहले कामरेड की ओर और फिर जनतासिंह की ओर देखा।

"क्या बात कही है भाई ने! मज़दूर तो जमाने के शुरू से ही

गुलामी की जंजीरों से लड़ रहा है। शोषक उसे बार-बार बाँधता है, मारता है, जमीन पर बिछा देता है, पर मजदूर है कि अपनी लड़ाई लड़े जाता है। उसने कभी हार नहीं मानी। हर लड़ाई में नया सबक सीखता है, आगे बढ़ता है। इसीलिये उसे 'बाजुए क़ातिल' से जोर आज़माने में मज़ा आता है। ज़ुल्म से टकराते-टकराते वह ऐसी मंज़िल पर आ पहुँचा है, जहाँ बस अब निर्णायक लड़ाई हो रही है।" जनता सिंह ने अपना डंडा संभाल लिया।

"क्या विश्लेषण किया है! कितना मार्क्सी नज़रिया है।" कामरेड ने बीड़ी में कश मारा और जनतासिंह की पीठ थपथपाई।

इस वक्त चाय आगई थी। चाय का दौर चला। चाय पर मजदूर-संघर्षों की चर्चा होती रही। जनतासिंह ने कहा : "शंकर दादा बोलते थे कि मैं सन् ३० से मजदूरों की लड़ाइयाँ देख रहा हूँ। जवाहरलाल नेहरू की भी मजदूर-रहनुमाई देखी है और सुभाषचन्द्र बोस की भी। लीडर आये हैं और गये हैं, पर मजदूर बढ़ता ही जाता है। मजदूर आन्दोलन गंगा की धारा है।"

इन मजदूरों ने आगे होने वाली हड़ताल और प्रदर्शन की सफलता के लिये जी जान से जुट जाने का प्रोग्राम कामरेड सीताराम के साथ बना लिया। कामरेड ने कहा कि बस, "अब से ही मैं तुम्हें आगाह करता हूँ। एक बड़ी लड़ाई छिड़ने वाली है।"

"परवाह न करो, कामरेड, रात-दिन एक कर देंगे। आज विजय भी आये थे। हम समझते हैं। नादान नहीं। हम मजदूर हैं। हमें काम चाहिये, हमें दाम चाहिये। काम-दाम न मिलने पर झगड़ा।"

"चाण्डाल चौकड़ी : जिन्दावाद।" जनतासिंह ने कहा।

कामरेड सीताराम ने बीड़ी में कश मार कर कहा, "जनतासिंह, वह दिन आना है, जरूर आना है।"

"सुर्ख सवेरा फूटेगा ही ।
घन दुश्मन पर टूटेगा ही ।।"

"अच्छा, कामरेड भाइयों, लाल हिन्द ।"

सब ने जोर से नारा लगाया "लाल हिन्द" ।

× × ×

विजय को शंकर के पहचानने में कुछ देर लगी। उसने पण्डितों वाला वाना धारा हुआ था। माथे पर त्रिपुण्ड, कानों पर चन्दन, गले में रुद्राक्ष की माला और सर पर पगड़ी तथा गले में पटका। विजय ने हँस कर कहा, "चलो, भला हो श्यामकिशन का, उसने तुम्हें ब्राह्मण-रूप धारण करा दिया।"

शंकर हँस पड़ा। फिर बोला—"सब ठीक-ठाक चल रहा है न ?"

विजय—"हाँ, वैसे सब ठीक है। हम सब लोग काम में जुटे हुए हैं। मजदूरों के मनोबल को हर समय कायम रखते हैं।"

शंकर (मुस्कराकर)—"कंटक जी क्या कर रहे हैं ?"

विजय—"वही ढाक के तीन पात। खूब तोड़-फोड़ करते हैं। लेकिन अभी मजदूरों में कुछ खास पेश नहीं आती।"

शंकर—"फिर भी सावधान रहना चाहिये। दुश्मन कभी कमजोर नहीं होता।"

विजय—"बात ठीक है। हम तो अपनी संस्था में खूब इस चीज़ को ले रहे हैं। मुख्य मन्त्री श्री वाणीविलास से भी मिले थे। वहाँ कंटक ने रंग तो गहरा छोड़ा है, पर हमने भी अपनी तरफ से उन्हें खूब आश्वस्त करने की कोशिश की।"

शंकर—"अच्छा; जनसंघ के असर के मजदूरों का क्या हाल है ?"

विजय—"उनके रंग का आम मजदूर हमारे साथ है, पर उनके नेता वही राग अलापते हैं कि हमारा संघर्ष में विश्वास नहीं, हम तो समन्वय-वादी हैं। मेरी तो दरअसल उनसे बात करने को तबीअत भी नहीं चाहती। सम्प्रदायवादियों से क्या बात की जाय ?"

शंकर (हँसकर)—वह तो ठीक है। पर हैं तो वे भी मजदूर। उनके हमारे हित समान हैं। डूबेंगे तो एक साथ और गिरेंगे तो एक साथ।

विजय—"यह ठीक बात है, पर मेरे बूते का उन्हें समझाना नहीं।"

शंकर—"अच्छा छोड़ो। एक काम तो कर सकते हो कि जो ऐसे मजदूर हैं, जो किसी भी यूनियन से सम्बन्ध नहीं रखते, उनमें से खास-खास लोगों से मिलो-जुलो। उन्हें भी आन्दोलन में लाओ और उनके जरिए जन-संघ के असर के अधिक से अधिक मजदूरों को।"

विजय—"यह ठीक है कि उनसे हम काफी काम ले सकते हैं।"

शंकर—"संघर्ष कमिटी में प्रजा समाजवादी, क्रान्तिकारी समाज-वादी, समाजवादी और फारवर्ड ब्लाक के और बोल्शेविक पार्टी के आएर के मजदूर कैसा काम कर रहे हैं ?"

विजय—"वह तो सब ठीक चल रहा है। हमारा ध्यान इस समय मजदूर वर्ग की अखंड एकता पर है। हम तो हर रंग के मजदूर से मिलते हैं और उन्हें लाइन पर लाने की कोशिश करते हैं। यहीं तक नहीं, शत्रु के शिविर का भी ध्यान रखते हैं।"

शंकर—"शाबाश, ऐसा ही होना चाहिये।"

विजय—"शंकर भाई, आखिर तुम्हारी संगति बैठते हैं। दूसरी संस्था में हुए तो क्या है ?" दोनों हँस पड़े।

शंकर—"विजय, मेरा खयाल है कि हमें बहुत जल्दी ही एक जबर्दस्त प्रदर्शन सेक्रेटरिएट के सामने करना चाहिए। अपना यह विचार मैंने संघर्ष कमिटी के सामने रखने के लिये कामरेड के जरिए

भिजवाया था। पता चला था कि संघर्ष कमिटी ने फैसला तो कर लिया है, लेकिन इस मामले में पूरी ताकत लग जानी चाहिये।"

विजय—"हम तो रात दिन लगे हुए हैं और बहुत जल्दी ही प्रदर्शन होगा। इश्तिहार बंट चुके हैं, पोस्टर कल आ जायेंगे। गेट मीटिंग चल रही हैं। मांग-पत्र बन चुका है, स्वीकार करने से पहले तुम्हें दिखाना था, इसी लिये कामरेड से कह कर तुमसे मिलने का यह प्रोग्राम बनाया है। आज के तीन दिन बाद मिल में हड़ताल होगी, और प्रदर्शन होगा।"

शंकर—"मैंने क्लर्क एसोसियेशन के पदाधिकारियों को संदेश भिजवाया था। सुना है कि वे भी हड़ताल और प्रदर्शन में शामिल होंगे। तुम उनसे मिलना।"

विजय—"भई, यह भी तुम्हारी करामात है। सफेदपोशों को हमारे साथ ले आये हो। मैं तो देखता हूँ कि तुम वर्षों से उनके साथ माथा-पच्ची करते रहे हो, वरना ये क्लर्क हमारे संघर्षों के शत्रु थे। अब तो भैया, हमारे साथ हैं और जहाँ नाम तुम्हारा आ जाय, बस फिर क्या कहने ?"

शंकर—"मेरा क्या है, सब वक्त का तकाजा है। सफेदपोश मजदूर भी तंग है। वह अब महसूस ही नहीं करता, बल्कि मजदूरवर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहता है। देखा नहीं, रघुनाथ की मौत पर बाबुओं की कितनी ही यूनियनों और एसोसियेशनों ने प्रस्ताव पास करके मजदूर आन्दोलन के साथ हमदर्दी जाहिर की थी।"

इतने में बीड़ी में कश मारता हुआ कामरेड सीताराम आ गया। उसकी घबराई हुई शक्ल को देखकर शंकर ने मुस्कराकर पूछा—"क्या बात है कामरेड ? क्यों घबराये हुए हो ?"

"आज सुरजावल के चप्पे-चप्पे पर सफेदपोश सी. आई. डी. है। सशस्त्र पुलिस चारों नाकों पर है। पूरन गुरु और उसके पट्ठे लट्ठ लिये

घूम रहे हैं। रिसाल और उसका गिरोह शराब चढ़ाए हुए चक्कर मार रहा है।"

"और ?"

"दादा, तुम्हारी इस और ने तंग कर दिया।" कामरेड ने कहा। "किसी भेदिये ने सूचना दे दी है।" यह कहकर कामरेड ने अविश्वास भरी दृष्टि से विजय को देखा।

विजय कामरेड की इस दृष्टि से एक दम सहम गया। उसे महसूस हुआ कि उसे यह वह लांछन लगेगा, जो छुड़ाये न छूटेगा। वह सफाई में कुछ कहना ही चाहता था, शंकर ने कहा, "कामरेड घबराते काहे को हो ? गिरफ़्तारी शंकर की नहीं होगी, विजय की होगी।" और शंकर ने विजय से कहा, "विजय भाई, मेरे कपड़े तुम पहन लो और मेरा जैसा वेष बना लो, और फिर बाहर चले जाओ। पुलिस तुम्हें पकड़कर ले जायगी। मैं बच जाऊँगा। ठीक है न ?"

विजय की जान में जान आई। उसे सन्तोष हुआ कि ऐसी तोहमत से तो जेल लाख दर्जा बेहतर। उसने जल्दी-जल्दी वेष बदल लिया। शंकर ने विजय के कपड़े पहन लिये। कामरेड सीताराम मन ही मन खुश हुआ कि दादा ने क्या तुरुप मारी है ? ऊपरी गम्भीरता से बोला— "बिलकुल ठीक है। क्यों, कामरेड विजय।"

विजय ने कहा, "हाँ कामरेड, हमें तो सब कुछ मंजूर है। हमें तो गाँधी जी ने अविश्वास को विश्वास में परिवर्तित करने के ढंग बताए हैं। तुम कहो, तुम्हारा मार्क्सी नज़रिया क्या कहता है ?" कह कर वह हँस पड़ा।

शंकर भी इस हँसी में शामिल हो गया। कामरेड सीताराम ने कहा, "हम तुम्हारी दाद देते हैं, विजय। शंकर दादा जेल जाने से बच जायेंगे।"

शंकर ने कहा, "कामरेड, मुझे मालूम था कि सुरजावल में आज

दौड़ आयगी, क्योंकि मुझे सुबह ही किसी ने बता दिया था कि श्याम-किशन को मेरे यहाँ आने का पता चल गया है। इसलिये मैं ब्राह्मण वेष में जब आ रहा था तो मुझे शराब के नशे में दुत रिसाल मिला था। उससे मैंने कह दिया था कि ब्राह्मण के भेस में हूँ। आज खूब नावाँ मार लेना।"

विजय—"श्यामकिशन को कैसे पता चला हमारी भेंट का?"

शंकर—"यह मैं भी नहीं जान सका। कोई पक्का भेदिया मालूम पड़ता है। मैंने बहुत पता लगाया, सिर्फ इतना मालूम हुआ कि वह श्यामकिशन से बहुत रात गए मिलता है। है कोई सुलझा हुआ आदमी!"

कामरेड—"कोई संघर्ष कमिटी में से तो नहीं है?"

शंकर हंस पड़ा—"कामरेड, यों नहीं बोला करते।" आन्दोलन में फूट पड़ जाया करती है इस तरह। लक्ष्य से निगाह किसी समय नहीं चूकनी चाहिये। निगाह चूकी और निशाना गया। अच्छा, तुम विजय को लेकर छत-छत जाओ और यहाँ से दूर जाकर बाहर निकलो। अँधेरा हो चला है, इतना और हो जायगा। अगर विजय गिरफ्तार हो जाय तो मुझे यहाँ सूचना देना।"

शंकर ने विजय को छाती से लगा लिया और कहा, "चिन्ता न करना। तुम रिहा हो जाओगे। वारन्ट मेरा है, तुम्हारा नहीं!"

विजय बोला, "न भी रिहा होऊँ तो कोई बात नहीं। तुम्हारा बाहर रहना जरूरी है।"

कामरेड सीताराम और विजय चल दिए।

× × ×

धीरे-धीरे रात का सन्नाटा छाने लगा था। सुरजावल के औरत, मर्द और बच्चे, गुण्डों की रौल-धौल और पुलिस की सरगर्मी से हैफ़ में

थे। उन्हें यह पता न चल पा रहा था कि आखिर यह माजरा क्या है ? औरत और बच्चे घरों में थे और मर्द उझक-उझक कर देखते थे। जिनमें कुछ जीवट था, वे बाहर भी घूमते थे।

सफेद पोश पुलिस और सी० आई० डी० के लोग चक्कर पर चक्कर काट रहे थे। सशस्त्र पुलिस बस्ती के चारों कोनों पर थी। थानेदार पिस्तौल डाले कुछ सिपाहियों के साथ गश्त कर रहा था।

रिसाल और उसके साथी हाथ में डंडे लिये इधर-उधर सतर्कता से झाँकने का उपक्रम कर रहे थे। रिसाल नशे में बुरी तरह से धुत था और बहकने लगा था। अपने टोले के लोगों से कह रहा था, "देखो, किसी को बताना मत, आज शंकर ब्राह्मण के बाने में यहाँ आया है। श्यामकिशन और पुलिस दोनों से इनाम लूँगा। शंकर बेटा, क्या याद रखेगा ? देखना बे, अगर शंकर भागने की कोशिश करे तो पुटपुटी पर डंडा देना।"

उसी तरह से धुत उसके एक साथी ने कहा, "उस्ताद, सुना है कि उसे जापानी और अमरीकी दाँव आते हैं।"

"बड़े-बड़े दाँवगीर देखे हैं हमने। उस्ताद, एक बार मेरा पाला एक टामी गोरे से पड़ गया था। उसने ज्योंही विलायती दाँव मारा, जवानी की कसम, मैंने उसके धोबीपाट मारा और उस्ताद, फिर मैंने कमर से पेटी खोल जो उसे उधेड़ा है, तो मेरे कदमों में चिपट गया और बोला : मुझे काली गाय समझकर छोड़ दे।" रिसाल के एक नौजवान शागिर्द ने कहा।

"देखो बे, मैंने तुम्हें आज तक जितने दाँव रवाँ कराये हैं, सभी का इस्तेमाल कर देना, लेकिन शंकर भाग न पाए। मैंने एक बार·····

"शोर क्यों मचाता है ?" इतने में थानेदार गश्त करता हुआ इधर आ निकला था।

"हुज़ूर, लोगों को दाँव रवाँ करा रहा था। गुस्ताखी माफ़ हो, हुज़ूर, शंकर जापानी दाँवगीरा हैं।" रिसाल ने सफ़ाई दी।

"चुप रह। अपना काम देख। दाँवगीरा का बच्चा।" थानेदार ने झिड़क दिया और आगे बढ़ गया।

इतने में उधर से धोती पहिने और साफा बाँधे एक मजदूर गुजरा तो रिसाल के शागिर्द ने डंडा मार कर उसे गिरा दिया और जोर से चिल्लाया, "उस्ताद, मार लिया पापड़वाले को।"

रिसाल बोला, "रस्सी से बाँध ले, बे लौंडे. इसे।"

"मैं शंकर नहीं, मैं तो बुनता खाते का मजदूर हूँ।" वह मजदूर घिघियाने लगा।"

शोर सुनकर थानेदार दौड़कर आया, उसने सीटी बजाई, बहुत से सिपाही वहाँ आ गए, देखा तो एक मजदूर की छाती पर रिसाल का शागिर्द चढ़ा बैठा है। थानेदार ने टार्च से रोशनी डाली तो देखा कि वह तो मामूली मजदूर है। "क्यों बे रिसाल, तू तो कहता था कि वह ब्राह्मण के भेष में है। यह तो मामूली कारीगर है।"

"हुज़ूर, बदल लिया होगा भेस इसने। मेरा लौंडा दगा नहीं खा सकता।"

ब्राह्मण-वेष में विजय बस्ती की मुख्य सड़क पर आ गया था। उसने सिपाहियों की भीड़ देख कर धीरे-धीरे चलना शुरू कर दिया और एक बिजली के खम्भे के नीचे आकर और भी आहिस्ता-आहिस्ता चलने लगा। सफेद पोश पुलिसमैन ने उसे देखा तो पीछा किया। पास में जाकर वह जोर से बोलाः "कौन ?"

"मैं-मैं" विजय बनावटी तौर पर हकलाने लगा।

सफेद पोश पुलिस मैन ने उसके चपत मारा, "बोल, कौन है तू ?"

"मारो मत, बतलाता हूँ। मेरा नाम है शंकर।"

पुलिस मैन ने सीटी बजाई। थानेदार बमयसिपाहियों के इधर आया। रिसाल साथ था। शंकर के कपड़े देखे तो बोला—"बस यही है हुज़ूर। आज दोपहर में मिला था।"

थानेदार से सफेद पोश पुलिस मैन ने कहा कि हुज़ूर, "पहले तो नाम बतलाता न था, मैंने एक धौल जमाई तो सब कुछ उगल गया। चला बड़ा भारी लीडर बन कर।"

विजय के हथकड़ी डाल दी गई और पुलिस उसे अपनी गाड़ी में बैठा कर ले गई।

रिसाल कह रहा था, "हुजूर, मेरा इनाम याद रहे। मैंने ही पहचान बताई थी।"

× × ×

कामरेड सीताराम ने शंकर को विजय की गिरफ्तारी की सूचना दे दी। वह कुछ देर बाद वहाँ से चल निकला। अब सारा मैदान साफ़ था। कामरेड सीताराम कुछ कदम पीछे था, और उससे पीछे जनतासिंह।

शंकर बस्ती से निकल कर पीपल के वृक्ष के पास आया तो पूरन गुरु से उसके पट्ठे कह रहे थे, "गुरु, तुम तो यहाँ भाँग के नशे में धुत्त बने हुए हो, उधर रिसाल बाज़ी मार ले गया। शंकर आज ब्राह्मण के भेस में पकड़ा गया।"

"पट्ठे रहने दे। शंकर पकड़ा गया, वह भी रिसाल के हाथों। मैंने अपनी जिन्दगी में सैंकड़ों-हज़ारों दंगल देखे हैं। मुझे दाँवगीरे की पहचान है। शंकर दाँव नहीं खा सकता। मेरी बात लिख ले।"

"चलो, गुरु, हम तो मानते हैं तुम्हारी बात। बाक़ी, हमें तो ऐसे मामलों में लाया मत करो। हमारा काम अखाड़ों में कुश्ती लड़ना है, लाठी चलाना नहीं।" उसी पट्ठे ने कहा।

शंकर तेज़ी से मुस्कराता हुआ आगे बढ़ गया और कामरेड सीता-राम गुरु से उलझ गये : "कहो गुरु, तुमने तब शंकर दादा से क़सम उठाई थी कि हम मालिक मज़दूर के मामले में नहीं आयेंगे। अब क्यों आये ?"

"नहीं, कामरेड हम तो यों ही चले आये थे तमाशा देखने। अखाड़ों का शौक़ है न ?" पूरन गुरु ने कहा।

"तमाशा देखने या बादामों के लालच में ?" कामरेड ने पूछा।

"देख, कामरेड, पूछ पट्ठों से। मैंने कह दिया था कि चले चलो। सलाम के पीछे मियाँ को क्यों नाराज़ किया ? बाकी, यह साफ बात थी कि हम शंकर को न पकड़ेंगे और न हाथ छोड़ेंगे।" पूरन गुरु ने सफाई दी।

"तुमने यह बात कही या खुद पहलवान मज़दूरों ने कह दिया कि हम मजदूर और मज़दूर हमदर्द पर हाथ नहीं छोड़ेंगे।" कामरेड बोला।

"यों ही समझ लो, कामरेड, बाकी अपने को शंकर अच्छा लगता है। अगर वह पहलवानी करता तो सच, हनुमान की सौंह, गामा को पछाड़ता।"

कामरेड हँस पड़ा और आगे बढ़ गया।

"सुन तो सही"— पूरन गुरु ने आवाज़ लगाई।

"अब फिर मिलेंगे।" कामरेड आगे बढ़ गया, क्योंकि वह पूरन गुरु से जिस लिये उलझा था, काम हो चुका था। शंकर ओझल हो चुका था।

८

★★★★

मुख्य मन्त्री वाणीविलास गाड़ी से उतर कर अपनी कोठी के बरामदे में खड़े ही हुए थे, कि खद्दर के कुरते, गर्म जवाहरकट और पाजामे में एक सरल तेजस्वी व्यक्तित्व के दो हाथ उनके सामने जुड़ गये।

"ओहो, कहो भाई शंकर, कैसे ?"

"आपके दर्शनों के लिए, बड़े पुण्यों से प्राप्त होते हैं।"

"हमारे दर्शन भी क्या बद्रीविशाल के दर्शन हैं ?" मुख्य मन्त्री मुस्करा दिये।

"जी हाँ ! हमारे लिए तो ऐसा ही है।" शंकर ने हँसते हुए उत्तर दिया।

"बहुत देर हो गई क्या प्रतीक्षा करते-करते ?"

"जी हाँ, कुल एक घंटे पहले आया था।"

"आज एक जगह 'डिनर' था। देर होगई। अच्छा, आओ बैठेंगे।"

अन्दर कमरे में सोफ़ासेट पर मुख्यमंत्री ने शंकर को अपनी बराबर में बैठाते हुए कहा—"कहो, तुम्हारी राजनीति के क्या हाल-चाल हैं ?"

"वह तो आज भी पुलिस ने बजरिये वारन्ट थाने में बुलाई हुई है।" शंकर ने हँसते हुए कहा।

"क्या मतलब ?"

"यही कि बन्दे का वारन्ट है। पिछले २० दिन से पुलिस पीछे

है। मैंने सोचा कि मामूली पुलिस मैन के हाथों क्या गिरफ्तारी करायें, अपने पुराने साथी और अब राज्य के मुख्य मन्त्री वाणीविलास जी के हाथों ही क्यों न हथकड़ियाँ पहन लें ?" शंकर ने धीमे-धीमे मुस्कराते हुए कहा।

मुख्य मन्त्री की निगाह शंकर के चेहरे पर जम गई, उन्होंने देखा कि उसके प्रशस्त ललाट पर सैंकड़ों आन्दोलनों की रेखाएँ खिची हुई हैं। आँखों में सत्यमय सरल निश्छल ज्योति है, चेहरे पर त्याग-तपस्या के भाव हैं। उन्होंने अपना सर कोच के पृष्ठ भाग से लगा लिया और आँखें बन्द करलीं। उन्हें ध्यान आया कि इस व्यक्ति का अपने जीवन में अपना कुछ नहीं है। परार्थ की भावना से अभिभूत होकर जिन्दगी भर सच्चाई के लिए लड़ता रहा है ! आज़ादी की लड़ाई में इसने क्या कष्ट नहीं सहे ? उन्होंने आँखें खोलीं, शंकर मुख्य मन्त्री की ओर दृष्टि गड़ाये बैठा था। बोला, "कुछ थके मालूम पड़ते हैं। अपनी बात दो मिनट में ही कहे डालता हूँ। आप मुझसे यह नहीं पूछ पा रहे हैं कि वारन्ट क्यों जारी हुए ? आपको ध्यान होगा कि अभी कुछ दिन पहले अनोखेलाल सूती मिल में पुलिस की गोली से रघुनाथ शहीद हुआ। उसके बारे में आप जानते ही हैं। वह आपका सिपाही रहा है। मालिक मज़दूरों के बोनस का टालमटोल पिछले आठ महीने से कर रहा था। काफ़ी लिखा पढ़ी हुई। हमने भी, मज़दूर यूनियन ने भी, जद्दोजहद की। मालिक ने वायदा किया कि दीवाली पर बोनस दे दिया जाएगा। इस मौक़े पर हमारी मज़दूर सभा और मज़दूर यूनियन ने मैनेजर साहब को उनके अपने वायदे की याद दिलाई तो वे आग बबूला हो गए, और बोले : श्यामकिशन सेठ का दीवाली के अवसर पर दिवाला निकालने के लिए मैनेजर नहीं हुआ है।......

"अरे, पहले वायदा किया और फिर वायदा खिलाफ़ी" वाणी विलास ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"जी, हमने बड़ा अनुनय-विनय किया। मज़दूर यूनियन की ओर से विजय और रघुनाथ गये, लेकिन कुछ सुनवाई न हुई। आखिर हार झखमार कर शांत प्रदर्शन की ठहराई गई। दीवाली पर हर आदमी घर पर खिलौने, मिठाई और अन्य सामान लाना चाहता है। वह तो दीवाली पर हज़ारों रुपया रोशनी और मिठाई बाँटने में खर्च करें और मज़दूर, जिसकी मेहनत से वे रईस बने बैठे हैं, टुकुर-टुकुर देखे? श्यामकिशन जी ने पहले ही पुलिस बुला ली थी। इससे मज़दूरों में और भी जोश आ गया। फिर भी उन्होंने शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया।"

"होशियार हैं न? मालिक को अपनी वफ़ादारी दिखाकर तरक्की लेना चाहते होंगे।" मुख्य मन्त्री ने टिप्पणी की।

"जी हाँ, डायरेक्टर बनने के सपने हैं। खैर, बनें। हमें इससे क्या? लेकिन रघुनाथ को गोली से क्यों मारा गया? मज़दूर का घर क्यों उजाड़ा गया? इस मौत से मज़दूरों का पारा बड़ा चढ़ गया था, लेकिन हमने फिर भी शांति बरती। केवल एक दिन की सांकेतिक हड़ताल रखी। उत्पादन की हानि हम नहीं चाहते थे। मज़दूरों का जोश हमने जल्से करके थामा, लेकिन उन्होंने दीवाली बड़ी शान से मनाई। मिल पर पहले सालों से अधिक शानदार रोशनी की गई। शेर और हाथियों की लड़ाई दिखाई गई, मानों मिल प्रबन्धक शेर हैं और मज़दूर हाथी, जिन्हें वे पस्त कर डालेंगे। वाणीविलास जी, इस सब की इन्तिहा होती है। मज़दूरों में जोश था ही, इस दुर्भावना के विरोध स्वरूप प्रतीक रूप में दो छोटे-छोटे प्रदर्शन सहजभाव से हो गये। एक मिल पर, और दूसरा कोठी पर, जहाँ गुलछर्रे उड़ाये जा रहे थे।..."

"मुझे भी वह पार्टी वगैरा अच्छी न लगी। मैं इसीलिए नहीं गया।"

...

वाणीविलास ने कहा: "मज़दूरों को यह सब बुरा लगना ही था। आप खुद समझते हैं! पुलिस से मिलकर मेरे वारन्ट गिरफ्तारी करा दिए

गये, मुझे अन्डर ग्राउन्ड जाना पड़ा। बन्दा आपके हाथों गिरफ्तार होने को तैयार है। विजय आज ही, अभी दो घंटा पहिले गिरफ्तार किया जा चुका है। उसका कोई वारण्ट भी नहीं।"

"क्यों ? दिमाग़ खराब है पुलिस का। यों मालिकों के इशारे पर नाचेगी ?"

"हालत यह है कि रघुनाथ की मौत के दिन डिप्टी कमिश्नर और इलाका मजिस्ट्रेट जल्दी से जल्दी गोली-काण्ड की जाँच की बात कह कर आये थे। अब तक मामला ज्यों का त्यों है। मज़दूरों में दहशत बैठाई जा रही है। गुण्डों को शराब पिला-पिला कर मज़दूर बस्तियों में भेजा जा रहा है। पुलिस की खास गश्त होती है। न जाने क्या मर्ज़ी है मेरे सैयाद की ?"

"हकूमत श्यामकिशन की हो गई है क्या ?" मुख्य मन्त्री को ताव आया।

"सब लोगों में तो यही चर्चा है। उनका कहना है कि वाणी विलास जी ने अपना पुलिस विभाग श्यामकिशन को सौंप दिया है।" शंकर हँस पड़ा।

"बड़ा अजीब है।" वाणी विलास का आश्चर्य धीरे-धीरे क्रोध में परिवर्तित हो गया।

उन्होंने खुद इन्स्पेक्टर जनरल को टेलीफोन किया।

"यह तो बताइये कि प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री शंकर का आपने वारण्ट गिरफ्तारी क्यों जारी किया ? उन्होंने कत्ल किया था ? डाका डाला था ? क्या किया था उन्होंने ? मिल के मज़दूर पुलिस की गोली से मरें और घायल हों, और उनके नेताओं के वारण्ट गिरफ़्तारी निकलें। अभी जाँच हुई नहीं, उसके नतीजे नहीं आये, आप मज़दूर नेताओं की गिरफ्तारी कर रहे हैं। आज हमारी मज़दूर यूनियन का नेता

विजय भी गिरफ्तार कर लिया गया।······जी, मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। अमनोअमान गरीबों को पकड़कर आप कायम रखेंगे। आप इकतरफा कार्रवाई करते हैं। विजय की रिहाई कराइये और शंकर का वारण्ट वापस लीजिये।" मुख्य मन्त्री ने आदेश देकर टेली-फोन रिसीवर झटके से रख दिया।

"अच्छा, आधी रात हो गई। आप आराम करो, मैं चलता हूँ। आपका बड़ा धन्यवाद।" शंकर ने खड़े होकर हाथ जोड़े।

"यहीं आराम करो। तुम्हें देखकर मुझे पुराने आन्दोलनों के दिन याद हो आये। क्या दिन थे वे ? पुलिस इसी तरह तंग करती थी।"

"जी !" शंकर का चेहरा खिल उठा, बोला, "नौकर शाही उसी तरह आज भी जनता को तंग करती है। हम डिप्टी कमिश्नर और अधिकारियों की उपेक्षा के विरुद्ध, सेक्रिटेरियट पर एक प्रदर्शन करेंगे। चिट्ठी आप को मिल गई होगी। आप इस काम में सहायता करें। हम तो चाहते हैं कि मजदूर काम करते रहें और उनकी पगार मिलती रहे। मालिक किसी न किसी बहाने 'लाक-आउट' करना चाहता है। पुराने कारीगर निकाले जा रहे हैं। कारखाने में रुई कच्ची और घटिया इस्तेमाल हो रही है। कपड़ा टिकाऊ नहीं होता।"

"आप प्रदर्शन लाओ न लाओ। मैं कल अफ़सरों को खींचता हूँ। विजय घर न गया हो तो तुम थाने से ले जाना। मेरा ड्राइवर तुम्हें छोड़ कर आयगा।"

इतने में टेलिफोन की घंटी बजी। मुख्य मन्त्री ने फोन उठाया, "कहिये, तारा जी।··················जी··················जी······

जी हाँ, ठीक है, बिल्कुल ठीक है, पर तारा जी, सवाल यह है कि आखिर इन लोगों को क्यों गिरफ्तार किया जाय ?

"अच्छा दीजिये सेठ जी को, जी, नमस्कार जी, जी···, जी।

"मिल की कोई हानि नहीं होगी। पुलिस का विभाग मेरे ही पास है। आप निश्चित रहिये।"

"जी हाँ, शंकर जी का वारण्ट भी वापस हो गया। ······जी,

"ठीक है, स्थिति का ध्यान रखेंगे।"

रिसीवर रखकर वाणी विलास ने कहा—देखा, कितना काबू है इन लोगों का। इधर कोई बात हो तो उधर ये जान जाते हैं।

"जी, हाँ, देख लीजिये। माया, सब तरह की माया, बड़ी प्रभावशालिनी होती है।"

"अच्छा, कोई बात नहीं। तुम चलो।"

शंकर मुख्य मन्त्री की गाड़ी में सीधा थाने पहुँचा। आशा के अनुरूप सैकड़ों मज़दूर थाने के बाहर जमा थे। इतने में विजय भी बाहर आगया। मज़दूरों ने उसे घेर लिया और जोर शोर से नारे लगाने लगे। कामरेड सीताराम और जनतासिंह ने नारे लगाये—मज़दूर एकता : ज़िन्दाबाद। संयुक्त मोर्चा : ज़िन्दाबाद।

शंकर भी जलूस में शामिल हो गया और सबने बड़े आश्चर्य-मिश्रित हर्ष से देखा कि वह नारे लगा रहा है—मज़दूर एकता : जिन्दाबाद। विजय भाई : ज़िन्दाबाद।

विजय शंकर को चिपट गया और बोला—"तुम क्यों खतरा मोल लेते हो।" शंकर बोला : मेरा वारण्ट गिरफ्तारी दफ्तर दाखिल हो गया।

मज़दूरों के हर्ष का पारावार न रहा। वे हाथ उठा-उठा कर नाचने लगे।

शंकर ने भाषण किया और बताया कि किस तरह मिल प्रबन्धकों की पहली मोर्चाबन्दी नष्ट-भ्रष्ट हो गई है। विजय ने भी मज़दूरों की संघर्ष-शक्ति को बधाई दी।

सारी रात मज़दूर बस्तियों में जागरण रहा और गाने बजाने होते रहे।

९

★★★★

"चलो यार हम भी जलूस में शामिल होंगे और नारे लगायेंगे। पहले व्यक्ति ने कहा और फिर वे दोनों मजदूरों के जलूस में शामिल हो गये।

इसी तरह सैकड़ों-हजारों लोग जलूस में शामिल होते गये। जलूस था कि पूर्णिमा की रात में समुद्र की भांति उफनता जा रहा था। जलूस को जो देखता वही रुक जाता और अधिकांश लोग इसमें शामिल हो जाते।

एक कवि और एक कहानीकार, जो कि एक क़हवेखाने से निकले थे, इस जलूस को देखने खड़े हो गये। कहानीकार ने कहा : "यह तो तुम्हारे लिये कविता का विषय है।" कवि ने अपने मुँह पर परेशानी के भाव लाते हुए कहा : "इस विपुल में से कुछ सूक्ष्म ढूँढ़ रहा हूँ। पर अभी तक कुछ मिल नहीं पाया। मिलती है तो सिर्फ कालिख और दीनता। काले-कलूटे दीन-हीन जन। कविता में मैं सौंदर्य का कायल हूँ और वास्तव में सौंदर्य ही कविता का प्राण है।"

"सौंदर्य से तात्पर्य—नारी का सौंदर्य और वह भी धनिक वर्ग की नारी का सौंदर्य या धन का सौंदर्य, चाँदी सा उज्ज्वल और सोने सा चमकदार" कहानीकार ने व्यंग्य किया।

"अब आप प्रगतिवादी क्षेत्र में उतर आये। मित्र, मैं तो हृदय के सौंदर्य और उसी की समृद्धि चाहता हूँ।" कवि ने पलटकर कहा।

"कितना सौंदर्य है यह। मानव-समुद्र लहरा रहा है, एक एक इन्सान जोश खाती हुई लहर है। इससे अधिक सौंदर्य आप और कहाँ पाइयेगा। आपने हृदय के सौंदर्य और समृद्धि की बात कही। इन लोगों के हृदय माखन जैसे मुलायम हैं, पर हाथ पैर लोहे जैसे, इनमें जाओ तो वहाँ मानवता का समुद्र मिलेगा और रचना का साक्षात्कार। ये स्वयं सुन्दर हैं, और सौंदर्य को जन्म देते हैं।"

एक सेठ दूसरे सेठ से कह रहे थे, "भय्या, अब तो जिसकी लाठी, उसकी भैंस। उस दिन मिल पर हमला कर दिया, और आज सरकार के दफ्तर पर जा रहे हैं।"

दूसरे ने कहा, "जमाना खराब आ गया, छोटे लोग बड़ों के मुँह आने लगे।"

ये बात ही कर रहे थे कि इतने में इनके एक परिचित मौलाना आ गये। सेठ लोगों ने मौलाना के सामने जलूस पर अपनी प्रतिक्रियाएँ कहीं। मौलाना बोले, "सेठ जी आपका कहना एक दम दुरुस्त है, मियाँ अब तो जगह-जगह झल्ली वालों की हूकमत होती जा रही हैं। पहले राजा महाराजा होते थे, बादशाह नवाब होते थे। पता नहीं, क्या होकर रहेगा ?"

वहाँ एक झल्ली वाला खड़ा बात सुन रहा था—वह मुँह बिचका कर आगे बढ़ गया और जल्दी से जलूस में शामिल हो गया।

छोटे-मोटे दुकानदार और मध्यवित्त श्रेणी के राहगीर अधिकांश तया मज़दूरों के हक़ में बोलते थे। जितने मुँह थे, उतनी बातें। गर्ज़ यह है कि जलूस का चर्चा बहुत था।

शंकर इस जलूस की अगुवाई कर रहा था, साथ में विजय था। उनके पीछे संघर्ष कमेटी के सदस्य थे। कामरेड सीताराम और जनतासिंह के जिम्मे जलूस की तंज़ीम का काम था। और उन्होंने अपने इस दायित्व

के निर्वाह में साथ देने के लिये अच्छे-अच्छे पचास कार्यकर्त्ता ले लिये थे।

असेंबली भवन के सामने जिस समय जलूस पहुँचा तो उसकी एक अजीब शान थी। रोटी, फटे हुए कपड़े और फूँस के झण्डे के अलावा और अनगिनत लाल झण्डे थे, जिन पर तरह-तरह के निशान थे। ये निशान विभिन्न राजनैतिक मतवादों से प्रभावित युनियनों की उपस्थिति को जतला रहे थे। तिरंगे झण्डे भी काफी संख्या में मौजूद थे।

इस जलूस के नेताओं का हृदय असीम रूप से उद्वेलित था। ये इस समय मानवीय भावनाओं के स्वामी थे और इन भावनाओं की खातिर फाँसी के तख्ते को भी चूम सकते थे। इतने बड़े समूह का नेतृत्व करते हुए यदि मौत भी आये तो कौन इन्कार करे?

इन की खुशी का अन्दाजा वे ही लोग लगा सकते हैं जिन्होंने ऐसा सपना देखा हो, जिसमें कुछेक व्यक्ति उफनते हुए समुद्र की लहरों को इशारों से उठा बैठा सकते हों।

ये लोग जब नारा लगाते तो ऐसा लगता जैसे कि तरंगों का उद्घोष हो। ये उद्घोष स्वयं आवाज़ों की प्रबल बाढ़ का रूप धारण कर रहे थे। इस बाढ़ में तीव्रतम प्रवाह था—यह प्रवाह मज़दूरों के जोश से बल पाकर बड़ा कटीला हो गया था। इस बाढ़ में घायल सीनों के ज़ख्म रिस-रिस कर आ रहे थे। इससे इस बाढ़ में जहाँ क्रोध था, वहाँ हूक थी, टीस थी और क्षोभ था।

नारा लगता "मुख्य मंत्री बाहर आओ" तो जैसे जनता की शासन के नाम चुनौती जाती। "मज़दूर आंदोलन, जिंदाबाद" का नारा लगता तो ऐसा ज्ञात होता कि समस्याएँ उन्हीं लोगों की हल होती हैं, जो अपने पैरों पर खड़े होते हैं।

प्रदर्शन में अनुशासन था, व्यवस्था थी, क्रम था।

का० सीताराम की खुशी का वार-पार न था। खुशी की खुमारियों

में बेसुध हुआ सेक्रिटेरियट की बाहरी दीवार पर खड़े शंकर के पास गया और बोला—"देखो तूफान बंधा खड़ा है। आदमी मीलों तक सरों के ऊपर से जा सकता है।"

शंकर भी मुस्कराया और उसने अत्यन्त जोश में नारा दिया "मुख्य मंत्री" जनता ने कहा: "बाहर आओ।" नारा वायु में बह कर हज़ारों कानों में जा कर कई गुनी शक्ति के साथ हज़ारों मुंहों से निकल आया। उसने फिर नारा दिया: "रघुनाथ की शहादत", जनता ने जवाब दिया "जिन्दाबाद।"

सैकड़ों महिलाओं के आगे खड़ी सत्या और उसकी सास की आँखें भीगी हुई थीं। "रघुनाथ की शहादत: जिन्दाबाद" का नारा उन्हें अजीब हालत में ले जाता। उनमें खुशी जगती, हलास पैदा होता, फिर रंज जगता और दर्द पैदा होता। आँखों के कोरों में चार मोती आकर चमकने लगते। वे सिर्फ भावना रह गई थीं, जिन में न स्वयं शब्द थे और दूसरों को भी उन्हें शब्द देना कठिन था। मज़दूर कार्यकर्ता उन्हें देखकर जोश में उबल जाते। विजय के भी आँसू आज सूख गये थे; जहाँ से आँसू बनते हैं, वहाँ सिर्फ आग की तपन थी। इसीलिये उसका चेहरा लाल सुर्ख था। वह न नारा देने की स्थिति में था, न लगाने की। हजारों व्यक्तियों के जलूस में शायद सास-बहू और विजय ही थे, जिन्होंने एक भी नारा नहीं लगाया था।

जलूस में दो ग्रामीण सबसे अधिक उतावले थे। वे जब नारा लगाते तो उनकी गलों में पड़ी चादरें लुढ़क कर पैरों पर आ जातीं। एक ने दूसरे से कहा—"भैया, ऐसे नारे जीवन में पहली बार लगा रहा हूँ। शहरों के लोग बड़े मजे में हैं कि उन्हें ऐसे-ऐसे अच्छे अवसर मिलते रहते हैं।"

दूसरे ने उत्तर दिया—"हमने सन् ३० में नारे लगाये थे, लेकिन इन नारों के सामने वे नारे पासंग भी न थे।"

कुछ समय बाद मुख्य मन्त्री बाहर आये तो नारे और भी तेज हुए।

बल्लू दादा ने कहा—"बड़ी जल्दी आ गया मुख्य मन्त्री। अभी तो नारे लगाने का मज़ा ही आया था।"

"जल्दी कहाँ, एक घण्टा हो गया चीख़ते-चीख़ते।" जनता सिंह ने कहा।

"बहुत मजा आया आज, जनता बेटा, घर चल कर पेड़ा खिलाऊँगा, बड़ी मेहनत की है तूने।" हँसते हुए बल्लू दादा ने कहा।

"तुमने कौन कम मेहनत की है, दादा। हर मज़दूर ने मेहनत की है। सब की मेहनत से इस जलूस में यह शान आई है, यह असर आया है।" जनता सिंह ने कहा।

बल्लू ने जनतासिंह को पीछे की ओर सुनने के लिये इशारा किया। एक मज़दूर, जिसके सिर पर बहुत मोटी चोटी थी, एक दूसरे मज़दूर से कह रहा था—"दो वर्ष पहले जब परम आदरणीय गुरु जी आये थे, तब इतनी भीड़ हुई थी या आज।"

दूसरे ने कहा—"हाँ।"

एक गांधी टोपी पहने हुए एक मज़दूर ने यह सुना तो झट बोला—"जवाहरलाल अब भी ज्यादा से ज्यादा भीड़ खींचता है।"

जनतासिंह मुस्कराया। चौथा मज़दूर, जो इनकी बात सुन रहा था, बोला—"हमारे लिये तो खुशी आज है, जब मजदूरों की मज़दूरों के लिये इतनी भीड़ हुई है।"

गगनभेदी नारों से आकाश गूँज रहा था, लगता था कि यह धरती की आकाश को चुनौती है। मेहनतकश अपनी मेहनत का मुआवज़ा माँग रहे थे। आज उनके तेवर चढ़े थे।

इसके बाद शंकर ने ज़ोर से कहा, सब चुप हो जाने की मेहरबानी करें। मुख्य मंत्री आप लोगों के बुलाने से आ गये। उनका कहना है

कि कुछ प्रतिनिधि उनसे अन्दर बात कर लें। अगर आप लोग कहें तो अन्दर अकेले में उनसे मिल लें और अगर आप कहें तो उनसे आपके सामने ही बात करें।

जनता से आवाज आई—"दादा, जैसा मुनासिब समझो करो।"

शंकर ने कहा—"मुख्य मन्त्री कहते हैं कि एकान्त में बात करना ठीक होगा। फिर भी वह दो शब्द यहाँ कहेंगे।"

मुख्य मन्त्री वाणी विलास इस मानव समुदाय को देखकर अचरज में थे। बोले—"आप लोगों के जोश को मैं देखकर बड़ा खुश हुआ। जिस देश के लोग इतने जीवट भरे हों, वहाँ मुसीबतें मिनटों में आसान होती हैं (जनता के एक वर्ग से तालियाँ)। मैं इन्साफ का आश्वासन देता हूँ और साथ में आप लोगों की माँगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का भी। मैं चाहूँगा कि आपके प्रतिनिधियों से मैं एकान्त में बात करूँ, क्योंकि वहाँ चीजों के समझने समझाने का अवसर होगा। जय हिन्द।"

एक ने कहा—"भाषण तो अच्छा दिया है।"

दूसरे ने कहा—"नाम ही वाणी विलास है।"

तीसरे ने टिप्पणी की—"मुँह में राम, बगल में छुरी।"

इसी समय शंकर ने कहा—"आपके प्रतिनिधि अब मुख्य मन्त्री के साथ जाएँगे, आपको लौटकर बातचीत का नतीजा बतायेंगे। इस प्रतिनिधि मण्डल में सभी विचारधाराओं के मजदूरों की नुमाइंदगी है। मैं नहीं जा रहा हूँ।"

मजदूरों का नारा आया—"शंकर तुम भी जाओ। शंकर तुम भी जाओ।"

"मैं चला जाऊँगा तो तुम्हारे पास कौन रहेगा।" सब हँस पड़े। इसके बाद एक के बाद दूसरा वक्ता आता रहा और जनता के कष्टों पर भाषण होते रहे।

जनता का समुद्र ज्यों का त्यों बँधा खड़ा था, उसमें हिलोरें उठ रही थीं।

असेम्बली भवन की चहारदीवारी पर पुलिस का कड़ा पहरा था, लेकिन सिपाही भी उचक-उचक कर भाषण सुन रहे थे। एक पत्रकार असेम्बली भवन से निकलकर बाहर आया तो एक सिपाही ने पूछा—"बाबूजी ! ये लोग क्या लेक्चर दे रहे हैं ?"

"ये कहते हैं कि गरीबों की रोटी, रोज़ी और रिहायश का प्रबन्ध करो। बेकारी को खत्म करो और गरीबों पर गोली मत चलाओ।"

"बात तो ठीक कहते हैं।"

"फिर गोली क्यों चलाते हो ?"

"अफसरों के हुक्म से, पेट के लिये बाबू जी सब कुछ करना पड़ता है।"

पत्रकार आगे आया तो शंकर ने तपाक से हाथ मिलाया : "बहुत शानदार खबर दी थी आपने। पत्रकारों की यूनियन ने भी अच्छा प्रस्ताव पास किया। बहुत-बहुत धन्यवाद।"

पत्रकार ने पूछा—"मज़दूरों पर क्या असर पड़ा ?"

"असर तो सामने ठाठें मार रहा है।" शंकर ने हँस कर कहा।

थोड़ी देर बाद शंकर की आवाज़ गूँज गई : "प्रतिनिधि लौट आये हैं। अब आपको कोहेनूर सूती मिल के मज़दूरों की संघर्ष कमिटी के सेक्रेट्री वहाँ की चर्चाओं का सार बता देंगे।"

पूरी खामोशी छा गई। इसी घड़ी के लिये तो यह तमाम जोर-शोर था।

विजय माइक्रोफ़ोन पर आया और उसने कहना शुरू किया, "बुजुर्गों और दोस्तो ! हम लोग जो यहाँ से आपकी तरफ़ से बात करने गये थे, उनके नाम तो शंकर ने आपको सुना दिये थे : दादा दूसरे पक्ष में थे—मुख्यमंत्री वाणीविलास, श्रममंत्री लक्ष्मीदास, चीफ़ कमिश्नर और

डिप्टी-कमिश्नर। यह तय हो गया है कि एक बड़े मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में जाँच कमेटी बनेगी जिसमें से तीन सरकारी अफ़सर होंगे और तीन हमारे आदमी! हमने अपनी ओर से ये नाम दे दिये हैं—शंकर, कामरेड सीताराम और मैं (तालियाँ)। यह कमेटी गोली कांड की परिस्थितियों की जाँच करेगी। रघुनाथ की मौत और घायल मज़दूर के मुआवजे के लिये उन्होंने आश्वासन दिया है कि वे मिल पर दबाव डालेंगे। बेकारी, मिलबन्दी तथा अन्य शिकायतों के बारे में श्रम मन्त्री ने दिलासा दिलाया है कि वह स्वयं इस मामले में दिलचस्पी लेंगे। यह जो कुछ हुआ है, आपकी मेहनत, हिम्मत दानिशमन्दी तथा सबसे ज्यादा एकता के कारण हुआ है, अगर आगे भी ऐसी ही एकता रहेगी तो मज़दूरों का बेड़ा ज़रूर पार होगा (तालियों की गड़गड़ाहट)। मज़दूर आन्दोलन :

जनता ने असीम जोश से जवाब दिया—"जिन्दाबाद !" सत्या के मुँह से भी निकल गया "ज़िन्दाबाद।"

सत्या का बच्चा भी मा की देखा देखी पुकार उठा : "जिन्दाबाद।" बल्लू भी इस चीज को देख रहा था। उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलछला आये।

× × ×

शहर के विभिन्न भागों तथा विशेषकर मजदूर बस्तियों में आज के प्रदर्शन की खूब चर्चा थी। शाम को निकलने वाले अखबारों में प्रदर्शन की खबर के साथ चित्र भी छपे थे। यद्यपि खबरों में कुछ हेर-फेर था, फिर भी आज की रिपोर्ट काफी संतोषजनक थी। जगह-जगह लोग अखबार लेकर वैसे ही बातचीत कर रहे थे।

मजदूर इलाकों में बने छोटे-छोटे होटलों में आज गर्म-गर्म चाय के साथ साथ गर्म गर्म चर्चा का विशेष जोर था—विशेष इसलिए गर्म

चाय के साथ गर्म चर्चा तो इन होटलों की रोजमर्राओं में से है।

काले और मैले कपड़ों से लैस मजदूर अपने मन का सारा आक्रोश निकाल रहे थे। जो मजदूर आमतौर पर चुप रहते हैं और मालिक की ताकत से डरते रहते हैं, वे भी निश्शंक भाव से आज बात कर रहे थे। मिल गेट की बराबर में बने खोखे में बैठे एक ऐसे ही मज़दूर ने कहा—भैया अब तो श्यामकिशन के दिन नज़दीक आ गये। शंकर दादा आज शेर की माफ़िक लगते थे। दूसरे ने कहा—अब समय ने पलटा खाया है। शंकर बड़ा बहादुर है। जनतासिंह अब तक चुपचाप सुन रहा था। उसने कहा—यार, शंकर शेर और बहादुर नहीं, शेर बबर और महाबहादुर है। शेर तो और भी बहुत हैं।

इतने में यहाँ कामरेड सीताराम आया। आज उसने अपने इलाके के सभी होटलों में पन्द्रह-पन्द्रह मिनट दिये थे।

"चाय पियो कामरेड" एक मज़दूर ने कहा।

"कोई हर्ज़ नही मँगाओ, आज तो जीत का दिन है। मैंने कामरेड, अब तक १६ कप पिये हैं और सोने तक कम से कम ४० कप और पीऊँगा।"

"शाबाश बेटा, ज़रूर इन्कलाब लाओगे फिर तो।" बल्लू दादा ने घुसते हुए कहा। उसने सीताराम की बात सुन ली थी।

"दादा, चाय और इन्कलाब का क्या साथ ?" सीताराम ने गम्भीरता से कहा। उसकी इच्छा तो हुई कि वह भी कोई जली-कटी बात कह दे, लेकिन पिछले दस-पन्द्रह दिन से वह काफी संयम से काम ले रहा है। शंकर की बात का उस पर अच्छा प्रभाव पड़ा था, और वह देखता भी था कि गंभीरता का नतीजा अच्छा ही होता है।

"चाय और इन्कलाब का सम्बन्ध कैसे नहीं ? तुम्हारा कौल तो

यह है कि चाय और बीड़ी पिये जाओ, कामरेड बन जाओगे और जब कामरेड बन जाओगे तो इन्कलाब आ जायगा।" बल्लू दादा ने कहा।

"दादा, आज खुशी का दिन है। तकरार मत करो।" सीताराम ने ऐसे ढंग से बात कही कि बल्लू सहित सब हँस पड़े।

बल्लू दादा ने काफी देर तक मज़दूरों को पिछले संघर्षों की गाथा अपनी शैली में सुनाई। मज़दूर उसकी बात का रस लेते रहे। एक मज़दूर ने कहा—"दादा, तुम तो गांधीवादी हो।"

"देखो भाई हम तो कांग्रेसी हैं। कम्युनिस्टों से पटरी नहीं बैठती, हालाँकि काम अब तक कम्युनिस्टों के साथ मिलकर ही किया है।"

"वाह दादा यह भी एक ही रही" जनतासिह ने कहा।

रात के नौ-दस बजे तक यही वातावरण रहा। उधर बस्तियों में भी यही हाल था। कारीगर हुक्का, बीड़ी और चाय के सहारे लम्बी-लम्बी चर्चायें कर रहे थे। उन्हें कल की ड्यूटी का जैसे फिक्र ही नहीं रहा था, मानो आज वह बिल्कुल आज़ाद हो गये हैं। ऐसे मज़दूर जो घर पर किसी की या अपनी बीमारी या अन्य किन्हीं कारणों से प्रदर्शन में नहीं जा सके थे, वे उन्हें चैन न लेने देते थे जो प्रदर्शन में गये थे। मचल मचल कर, पलट पलट कर बात पूछते। सुनाने वाले जब देखते कि सुनने वालों की इतने से संतुष्टि नहीं होती, तो वे नमक मिर्च लगाकर कहते और इसीलिये रात के ग्यारह बजे तक प्रदर्शन की अनेक किंवदंतियाँ भी बन गईं।

बापू नगर में यह बात फैली कि शंकर जब लौटने लगा तो पुलिस के बड़े अफसर ने कहा कि मैं तुझे कैद करता हूँ, लेकिन शंकर ने कहा—मुझे कैद करेगा, यह तेरी मजाल। अब मज़दूर राज कायम होने ही वाला है और शंकर ने उसके चपत मारा।

बारह बजते-बजते ठंड और नींद ने मज़दूरों की गर्मी को, उस गर्मी को, जो उन्होंने जी तोड़ मेहनत करके पाई थी, अपने में समा लिया।

१०

★★★★

श्यामकिशन को सारी रात नींद न ग्राई थी। उसने अपने सब साथियों से बातें कीं, पर किसी से कोई ऐसा नुक़्ता न मिला, जो उस हार को किसी भी तरह जीत में बदलने का रास्ता सुझा देता। कंटक, गिरीश ग्रौर मिस्त्री जालिमसिंह से लेकर पूरन गुरु ग्रौर रिसाल तक से उसने बातें कीं। उधर पुलिस ग्रौर उच्च राजनैतिक क्षेत्रों के दर्वाज़े तक खटखटा डाले, पर सब जगह से निराशाजनक उत्तर मिल रहे थे। जिसको उसने हाथी समझा था, वह शेर निकला ग्रौर शेर भी ऐसा जो वातावरण पर हावी हो गया। उसने मुक्का ताना, दाँत पिसपिसाये : "शंकर, तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। मेरा नाम भी श्याम किशन है।"

रात भर ह्विस्की के दौर चले, पर ह्विस्की के पास ही कौन-से सूक्त ग्रौर सूत्र थे, जो सफलता के मार्ग पर डाल देते। शराब तो केवल नशा दे सकती है, मदहोशी दे सकती है। वह तो विफलता का दूसरा नाम है, सफलता का उससे क्या वास्ता ?

सुबह को बिस्तर से उठा तो उसका समूचा शरीर ग्रकड़ा हुग्रा था। सर भारी था, ग्रौर दिल जैसे शरीर से निकल कर भागने को तैयार। सिगरेट जलाई, पी न गई, फेंक दी। श्रीमती श्यामकिशन, उसकी 'प्रिया', चाय लेकर ग्राई तो उसने इंकार कर दिया। उन्होंने उसे काफी देर तक तसल्ली दी, सर पर हाथ फेरा, बच्चों की तरह गोद

में ले लिया; पर उसे चैन नहीं था। किस्मत ने उसे कहाँ चौराहे में कच्चे घड़े की तरह पटका है ? वह कहीं का न रहा। उसके स्वप्न धूल में मिल गये। 'प्रिया' ने कहा, "उठो, बाथरूम हो आओ।" श्याम किशन ने सिर्फ 'आह' में जवाब दिया। उसकी 'वाह' न जाने कहाँ तिरोहित हो गई थी। उसे लगा, वह तो मामूली परकैंच कबूतर है, जिसे बिल्ली किसी वक्त भी खा सकती है और फिर उसके सामने शंकर की आकृति आ गई। वह पहली बार काँपा। 'प्रिया' ने उसे अपने बाहुपाशों में जकड़ लिया। उसने कहा, "प्रिया, जाओ। मुझे एकान्त चाहिए, एक दम एकान्त। मुझ पर रहम करो।"

इतने में नौकर ने दर्वाज़े पर दस्तक दी और कहा कि तारा जी का टेलीफोन है। श्याम किशन ने अपनी 'प्रिया' से कहा कि कह दो कि बाहर गये हैं। 'प्रिया' टेलीफोन पर गई तो मिस तारा ने जाते ही कहा कि मैनेजर साहब अफ़सोस में होंगे। 'प्रिया' झूठ न बोल सकी। उसने सब कैफियत बता दी। मिस तारा ने कहा, "भेजो उन्हें। यों काम न चलेगा।"

श्यामकिशन बड़ी मुश्किल से टेलीफोन पर आया। मिस तारा ने कहा, "क्यों, क्या बात है ? मर्द होकर घबराते हो ?"

"अफसोस तो हो ही आता है, और तब और भी ज्यादा, जब कि अपनी आस्तीन में ही साँप बैठे हों, और सुरक्षित बैठे हों।" श्यामकिशन ने आह भर कर कहा।

"मैं जानती हूँ। अच्छा, तुम यहाँ आ जाओ। फौरन आओ।"

श्यामकिशन तैयार हुआ और छोटा-सा पैग लगा सेठ जी की कोठी पर चला गया।

मिस तारा लान में कुर्सी पर बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। श्याम किशन ने नमस्ते की तो उसका ध्यान टूटा। उठी और उसे कमरे में ले गई। नाश्ते का हुक्म हुआ। बातचीत चली तो तारा ने कहा,

"श्यामकिशन साहब, जहाँ मर्द के सारे दाँव पेंच असफल होते हैं, वहाँ औरत सफल होती है।" कह कर वह मुस्कराई, और इस कदर मुस्कराई कि श्यामकिशन ने पहली बार उसके आकर्षण को देखा। शरद की उस प्रातः वेला में नीली साड़ी और लाल ब्लाऊज में उसका ललाईपूर्ण गौर वर्ण यों चमका जैसे शारदीय चाँद निरभ्र नीलाकाश में चमचमाता हो। बाब्ड हेयर, माथे पर छोटी-सी बेंदी, बड़ी-बड़ी शरबती आँखें, लाल लाल पतले ओठ, लम्बी गर्दन, कैसे उच्च वक्ष, क्षीण कटि, एक-एक अंग में आकर्षण के सागर लहरा रहे हैं। श्यामकिशन ने अपने जीवन में पद और धन को महत्व दिया था, नारी के महत्व का वह कायल न था। नारी-विलास उसके मन में विष था, और कंटक को भी वह कई बार यह समझा चुका था। मिस तारा मिल की राजनीति में उसका साथ दे रही थी, वह इस सहयोग को सहर्ष लेता भी था, पर उसके नारीत्व को कोई महत्व नहीं देता था। मिस तारा के कटाक्ष और हास्य-लास्य ने नारी-सुषमा की शक्ति का परिचय दिया। उसके मन में विलास बिल्कुल न जागा। पर यह भावना अवश्य जागी कि यह सौंदर्य सफलता के फूल निश्चित खिला देगा। वह तारा की ओर देखता-देखता विचार निमग्न हो गया। तारा यह सब कुछ बड़े ग़ौर से देख रही थी, और समझ भी रही थी। उसे अपनी सौन्दर्य-शक्ति का गर्व हो आया था।

"श्यामकिशन साहब, क्या सोच रहे हो। माँ के रूप में, बहिन के रूप में, पत्नी के रूप में, प्रेमिका के रूप में किसने पुरुष को बाँधा है? जीवन-समर की निर्णायक घड़ियों में नारी का साहस और कौशल ही काम आया है।" मिस तारा ने अपने सूत्र को और बढ़ाया।

श्यामकिशन को ध्यान आया कि वह जिस लक्ष्मी की भावनापूर्ण अर्चना करता है, वह भी तो नारी है। उसके लम्बे चेहरे पर मुस्कराहट खेल गई। उसमें हौसला हो आया। उसका मानसिक तनाव ढीला हुआ और उसके दिल दिमाग ने कुछ काम करना शुरू किया। बोला: "बनाइये फिर कोई योजना?"

"ज़रूर बनेगी। मैं अपने पिता की अकेली पुत्री हूँ। मिल मेरा है। मुझे उसे कायम रखना है, बढ़ाना है। मेरी उसमें दिलचस्पी है। पापा की कौन जाने ? न करे परमात्मा ! जब तक हाथ-पैर चल रहे हैं, चल रहे हैं।"

मिस तारा ने श्यामकिशन को महसूस कराया कि वह अपने 'बास' (मालिक) से बात कर रहा है। लक्ष्मी के साथ-साथ इस नारी में उसे गणेश के भी दर्शन हुए और उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा, "जो आज्ञा देंगी, करूँगा।"

मिस तारा अपनी इस विजय से विभोर हो गई। वह सुस्थिर अपनी कुर्सी में बैठी रही। खिड़कियों से सुहावनी धूप कमरे में आई तो श्यामकिशन को सूझा कि उसने तारा की उपमा शारदीय चाँद से गलत दी थी। यह तो सूर्य है जो अपनी जगह टिका रहता है, चाँद सितारे और धरती हैं जो घूमते रहते हैं। उसने तारा की ओर देखा कि वह शारदीय सूर्य जैसी सुन्दर और सुखद लग रही थी। उसका मन इस प्रेरणादायक वातावरण से खिल उठा, फिर उसे ध्यान आया मैं तो सिंह हूँ, शेर हूँ, मुझे किसी के सामने नहीं झुकना है। किन्तु न झुकने वाला भी खता खाता है। बिल्ली ने शेर को सब दाँव सिखा दिये थे, किन्तु पेड़ पर चढ़ना न सिखाया था, इसी एक दाँव पर शेर ख़ता खा गया था। आदमी को सीखना चाहिये। मिस तारा आज बिल्ली मौसी की स्थिति में है, वह सम्मान उसे मिलना ही चाहिये। वह बोला, "मिस तारा तुम्हारे सुकोमल व्यवहार से स्वस्थ हो गया हूँ। मुझ में नये साहस और नये ज्ञान का उदय हुआ है। मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।"

मिस तारा ने कहा, "देखो, मैं शुरू से ही तुम्हारे रवैये को पसन्द नहीं करती थी। पापा से भी मैंने उसकी चर्चा की थी। लेकिन जब

आपने कुछ कदम उठा लिये तो हमें उनका समर्थन करना ही चाहिये था। गोलियों की परिस्थिति पैदा करना एक दम अनुचित था। फिर गिरफ्तारियों और शंकर के वारण्ट आदि का वातावरण पैदा करना और भी गलत हुआ। उसने कटे पर नमक का काम किया। इसके अतिरिक्त अपने लोगों के साथ भी ढंग से बर्ताव न हुआ। महेन्द्रसेन को निकाले जाने का प्रस्ताव उस दौर में ठीक न था। आप एक कुशल और साहसी प्रशासक हैं, लेकिन आपके तरीके तनिक पुराने हैं। वे आज काम नहीं देते। पुराने अस्त्रों से आज के युग में कैसे लड़ा जा सकेगा ? आज ज़माना बदल चुका है, मजदूरों का आन्दोलन आगे आया है। हम यह भुलाकर तो मुकाबला नहीं कर सकते।···दूसरे आप मि० श्यामकिशन, हारे नहीं हैं, जीते हैं। हारता तो वह है जो गलती को समझकर उसे ठीक नहीं करता, जो लड़खड़ाते कदम सम्भल जायँ और राहेरास्त पर चलने लगें, तो वे कदम ऐतिहासिक मंजिलें पूरी करते हैं। मेरे खयाल से आप एक दौरा अमरीका का जरूर कर आइये। मालिक मुलाजिम के नये सम्बन्धों की जानकारी का प्रयोग आप हिन्दुस्तान आकर कर सकेंगे, और मैं समझता हूँ कि आप देश के श्रेष्ठ मैनेजरों में माने जायेंगे। इस सम्बन्ध में भी मैंने रात पापा से बात कर ली थी। मिल आपको खर्च देगी।"

श्यामकिशन बड़े ग़ौर से इन बातों को सुन रहा था। उसकी समस्त आत्म-ग्लानि तिरोहित हो गई थी, और उसे नये सुनहरे भविष्य की झलक दिखाई देने लगी थी। धूप कमरे में और आ गई थी। उसने बाहर लान पर नज़र डाली तो क्यारी में लगे फूल उसे झूमते-झूलते दिखाई दिये। मिस तारा पर नजर गई तो उसकी मुस्कराहट से वह कृतकृत्य हो गया। इस मुस्कराहट में माँ का ममतामय स्वरूप था।

मिस तारा ने कहा, "अब तो मैं पापा के साथ मिल मालिक एसोसियेशन की बैठक में जाऊँगी। आज हमारी मिल के बारे में चर्चा

होंगी। आप शाम को आइयेगा और साथ में सुकन्या को भी लाना न भूलियेगा।"

श्यामकिशन उठा, नमस्ते हुई और वह अपनी गाड़ी में मिल की ओर चल पड़ा। मौसम बड़ा सुहावना था। एक पार्क में एक सैलानी बैठा गा रहा था।

जिन्दगी जिंदा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं॥

श्यामकिशन ने इन पंक्तियों को मन ही मन कई बार दोहराया। वह खुश था, वह ज़िन्दादिल था। पस्ती और मायूसी का दौर बीती रात के साथ ही बीत गया था। आज की नई सुबह जिन्दगी के नये दौर की सुबह थी।

× × ×

सेक्रेट्री खाना खाकर और कुछ घूमकर अपनी कोमल शय्या पर लेटे थे और महेन्द्रसेन और वीरभानु उनके सामने आराम कुर्सियों पर बैठे थे। कहकहों से कमरा गूँज रहा था। बात-बात में हँसी, बात-बात में कहकहे। श्यामकिशन के खूब खाके खींचे जा रहे थे।

वीरभानु ने कहा कि श्यामकिशन जी के सामने अब आत्म-हत्या के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह गया है।

सेक्रेट्री ने मुस्कराकर कहा—बाल-बच्चेदार और इज्जतदार आदमी के बारे में ऐसी अशुभ कल्पनाएँ नहीं करनी चाहिये।

महेन्द्रसेन ने कहा—मैं सेक्रेट्री साहब से सहमत हूँ। उस बेचारे को और मौका मिलना चाहिए। क्या हुआ यदि चौबेजी छब्बेजी न हो पायें, दूबे तो हैं ही।

वीरभानु श्यामकिशन की पराजय से उत्फुल्ल हो बड़ा हँसा और बोला : वाह, क्या कार्टून का 'आइडिया' (विचार) दिया है। सेन

साहब, मुँह माँगी मिठाई खिलाऊं अगर यह कार्टून कल अखबारों में छपवा दो।

सेक्रेट्री ने कहा—"वीरभानु, तुम्हारा लड़कपन नहीं गया।" वह गंभीर होकर बोले, "अच्छा, वीरभानु तुम एक बात बताओ कि यदि तुम्हें मैनेजर बना दिया जाय तो तुम क्या करोगे ?"

वीरभानु ने मुस्कराकर कहा—"मैं तो आपके श्री चरणों में आकर बैठ जाऊँगा, और जैसा निर्देश करते रहोगे, वैसा ही करता रहूँगा।"

महेन्द्रसेन हँस पड़ा, किन्तु सेक्रेट्री गंभीर ही रहा। फिर उसी गंभीर-भाव से कहा : "प्रश्न का उत्तर नहीं आया।"

वीरभानु चुप रहा। वह सोचने लगा। उसका दिमाग चक्कर काटने लगा। किसी के प्रयत्नों को कारगर न होने देना और मजाक करना बात और है, और किसी काम को खुद संभालना और संवारना बात और है; उसने सर को खुजलाते हुए कहा, "सच, मैं आपके निर्देश और परामर्श लेकर चलूंगा। आपका विशाल अनुभव सचमुच मेरे कितने काम का होगा। आपने बीसों आन्दोलन देखे हैं, क़ाबू पाया है, और आपके प्रति मजदूरों तथा अन्य कर्मचारियों में बड़ी श्रद्धा है।"

"वह तो तुम्हारा धन्यवाद ! मेरे निर्देश संभवतः क्या होंगे ?" सेक्रेटरी ने पुनः प्रश्न किया।

"मजदूरों और कर्मचारियों से स्नेहपूर्ण बर्ताव। सोच-समझकर वायदा करना और फिर उसे निभाना। व्यक्तिगत अहंभाव को दबाकर रखना।"

"और"

वीरभानु फिर सोचने लगा। वे कहानियाँ याद करने लगा जो सेक्रेट्री के बारे में आमतौर पर कर्मचारियों में प्रसिद्ध हैं। बोला : "अच्छी संगति रहना, और भौंड़े हथकंडे कभी न अपनाना। खुद अनु-शासन में रहना और दूसरों को अनुशासन में रखना।"

"ठीक। ये तो एक अच्छे प्रशासक तथा साथ में एक अच्छे कार्यकर्ता के गुण होने ही चाहिएं। पर संघर्षों के समय और भी चीजें ज़रूरी हैं। वे क्या हो सकती हैं ?" सेक्रेटरी ने कहा।

"परिस्थितियों को बारीकी से देखना, कानों में आई हर बात पर ध्यान देना और जुस्तजू के साथ मौके के हथियार को काम में लाना।"

"बिल्कुल ठीक। और ?" सेक्रेटरी ने पुनः प्रश्न किया।

महेन्द्रसेन ने मुस्करा कर वीरभानु की ओर देखा और बहुत धीमे से कहा : "बाकी पर्दे पर।"

वीरभानु ने कहा, "मज़ाक न करो, यार। सेक्रेटरी साहब, आप ही बताइये। अभी तो आपसे सीखना ही सीखना है।"

बात मजे में कही गई थी। सेक्रेटरी हँस पड़ा। बोला, "केवल मुझ से ही नहीं सीखना, बल्कि श्यामकिशन जी से भी। उनमें कई असाधारण गुण हैं। वह साहसी हैं, वीर हैं, पहाड़ से भी टकरा जाने की क्षमता है। उनमें आदमी और उसकी बातों को भांप जाने और उनसे काम लेने की भी बड़ी शक्ति है। भेद निकालने में बड़े पटु हैं। वफ़ादार हैं। औरत की कमज़ोरी उनमें बिल्कुल नहीं। दोष दो हैं। पद और धन की वांछा उनमें लोलुपता की सीमा तक पहुँच गई है, और दूसरे इसी से उनमें शराब की आदत पड़ गई है। दूसरा दोष व्यक्तिवाद का है। इसी से अनेक बार नीचता पर उतर आते हैं।"

"श्री श्यामकिशन का यह विश्लेषण आपने खूब किया।" महेन्द्र सेन ने कहा।

"बड़े पते की बातें आपने बताईं।" वीरभानु ने सेक्रेटरी के पैर छू लिये। फिर कुर्सी पर बैठा और बोला—"मेरे गुण-दोषों का भी विवेचन कर दीजिये।"

"यह काम तो महेन्द्रसेन ही काफी करते रहते हैं।" सेक्रेटरी ने हँसकर कहा, और इस हँसी में महेन्द्रसेन भी शामिल हो गया। महेन्द्र-सेन ने कहा, "भाई वीरभानु जी, मुक़ाबला शंकर से है, शंकर से।"

"काँटा है, काँटा। चुस्त, चालाक होशियार।" सेक्रेटरी ने कहा। फिर थोड़ी देर बाद बोला, "आज रात को ८ बजे श्रीमान् सेठजी की कोठी पर फिर बैठक है। आप दोनों जा रहे होंगे।"

"जी। पर आप क्या अब भी न जायेंगे?" दोनों ने प्रश्न किया।

"क्या मतलब? मेरा श्यामकिशन जी की जय पराजय से कोई राग द्वेष नहीं। मैं तो बीमार हूँ। इसलिये कहीं नहीं आता जाता। श्रीमान् सेठजी दो-तीन बार कृपा करके मिस तारा के साथ आये है।" सेक्रेटरी ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

वह फिर अपने सामने ही टंगे, शीशे में जड़े, उस कलात्मक ढंग से लिखे उस वाक्य को पढ़ने लगा: मनुष्य आयु से बूढ़ा नहीं होता, विचारों से बूढ़ा होता है। जिसका सम्यक् चिन्तन नहीं और उस चितन के अनुकूल सम्यक् कर्म नहीं, वह जीवित भी मृतक के समान है।

सेक्रेटरी सोचता रहा कि मैं तो इस साधना-पथ पर चलता रहा हूँ और इसके सहारे ही मैं आज इस पद पर हूँ और आगे के रास्ते खुले हैं। व्यक्ति को दूसरों की ज्यादा मजाक में न पड़ कर अपने काम को देखना चाहिये। जीवन में सार-तत्व संग्रहणीय है। उसकी दृष्टि सुन्दर चौखटे में एक और सूक्ति पर पड़ी:

साधु ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय॥

सूप जैसा स्वभाव ही ठीक होता है। दूसरों के गुणों को ग्रहण कर ले और अवगुणों को फेंक दे, उपेक्षित कर दे। जीवन को निस्सार बातों मे पड़ कर खराब नही करना चाहिए। अमूल्य जीवन हीरे को कौड़ियों के बदले नहीं दे डालना चाहिये।

सेक्रेटरी चिन्तन की स्थिति मे था। वीरभानु और महेन्द्रसेन नमस्ते करके चल दिये।

× × ×

श्यामकिशन अपनी पुत्री सुकन्या के साथ बैठक के नियत समय से

एक घण्टा पहले ही सेठजी की कोठी पर आ गया था। सुकन्या का सुकुमार सौन्दर्य अपनी एक अलग ही चीज थी। हावभावों में कलात्मकता की गहरी पुट थी। दुग्ध-धवल श्वेत वस्त्रों में उसका गौर वर्ण यों शोभित था, ज्यों जलाशय के तट पर मनोरम संध्या में कोई राजहंसिनी सौन्दर्य का विस्तार करती हो। लम्बी काली कजरारी केश राशि का जूड़ा बंधा हुआ था, जिसमें पीछे की ओर मोतिया का गजरा संवारा गया था, और इन बालों की पृष्ठभूमि में ललितांगी धवल वसना सुकन्या की छटा यों महसूस होती थी, जैसे उसी शाम का शुक्ल पक्षीय चाँद रात की कालिमा को सौन्दर्य-दान करता हुआ धरा पर चाँदनी बरसा रहा था।

मिस तारा को सुकन्या की बड़ी प्रतीक्षा थी। इन प्रतीक्षा की घड़ियों में जब सुकन्या रंगीन जवानी से सजी बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ी तो मिस तारा के मुँह से एक दम निकल पड़ा, "यु आर वेरी लवली, (तुम बहुत ही सुन्दर हो) सुकन्या!" इस प्रिय साधुवाद से नौजवानी और भी मुस्करा उठी। श्यामकिशन का रोमरोम भी प्रफुल्लित हो गया। अपनी आत्मजा की प्रशंसा किसे अच्छी नहीं लगती?

मिस तारा पिता पुत्री को अपने निजी कमरे में ले गई। यूरोपीय और भारतीय प्राकृतिक दृश्य छवियों से कमरा सुसज्जित था। बीच-बीच में संसार की श्रेष्ठ नारियों के चित्र लगे थे। कमरे की साज-सज्जा से तारा के रमणीय और उच्च मानसिक धरातल का पता चलता था। तीनों बैठे, चाय हुई, गपशप चली और इस दौर में सुकन्या तारा से अच्छी तरह खुल गई। इस बीच सेठ जी आ गये तो श्यामकिशन उनके हुजूर में चला गया। और अब रह गईं मिस तारा और सुकन्या। तारा इस अवसर की प्रतीक्षा में थी। उसने सुकन्या से कहा, "और सुनाओ! क्या हालचाल हैं?"

"सब ठीक हैं।" सुकन्या ने मुस्करा कर कहा।

"और संगीत का अभ्यास कैसा चल रहा है ?"

" सुबह और शाम तो जरूर ही रियाज़ करती हूँ।"

"संगीत और प्यार का बड़ा गहरा सम्बन्ध है।" मिस तारा अपने विषय पर आ गई।

सुकन्या चुप रही। मिस तारा बोली—"चुप क्यों हो गईं ? क्या दिल में गुदगुदी होने लगी ?"

"मैं समझी नहीं। संगीत तो तन्मयता का विषय है। उसमें डूबकर पाना होता है। संगीत से जिसे प्यार हो, उसे किसी बाहरी प्यार की दरकार नहीं ?" सुकन्या ने उत्तर दिया।

"बातों में बड़ी चतुर हो। आखिर श्यामकिशन जी की बेटी हो न ?" मिस तारा हंसी। "सच बोलो, मि० वीरभानु से कैसा चल रहा है ?"

"मालूम नहीं, क्या हुआ है लोगों को ? एक दिन ममी भी पूछ रही थीं ? आप भी कहती हैं। सौगंध से, यह सब क्या है, मुझे पता नहीं।" सुकन्या ने सरल भाव से कहा।

"सुना है कि वह तो प्रेम-रोग में बुरी तरह ग्रस्त हैं।" मिस तारा बोली।

"हुआ करें ? अजीब आदमी हैं। खैर, मुझे क्या ? मैं किसी रोग में ग्रस्त नहीं हूँ। कला-प्रेमी को तो केवल कला का रोग ही चाहिये, और वह भी रोग के रूप में नहीं, शौक़ के रूप में।" सुकन्या ने सहज साधारण भाव से कहा। मिस तारा ने देखा, समझा और जाना कि वह प्रेम-पीड़ित नहीं है। यह बीमारी इकतरफा है। वह मन ही मन हंसी : पुरुष नारी के सामने कितना मजबूर है।

"बहुत अच्छे सुकन्या, मैं स्वयं इस प्रेम नामक चीज की क़ायल नहीं हूँ। मैंने अपना देश भी घूमा है, और विदेशों में भी घूमी हूँ। मैंने सब जगह देखा है कि उन्नति पथ पर वे ही नारियाँ बढ़ी हैं, जिन्होंने

अपने को पुरुषों के कामोद्वेगों से बचाया है। प्यार की निगाह औरतों की सार्वकालिक कमज़ोरी रही है। और मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ। क्या तुम्हें मालूम है मिल में अब क्या हो रहा है?" मिस तारा ने प्रश्न किया।

"मुझे ज़्यादा मालूम नहीं। पापा भी घर पर मिल की बात नहीं करते।" सुकन्या ने संक्षेप में उत्तर दिया।

"मज़दूरों की जीत से तुम्हारे पापा कल से बड़े दुखी हैं, और सुबह जब यहाँ आये थे, तब तो बड़े निराश थे।" मिस तारा ने पुत्री की भावनाओं को उभारा।

"हाँ, सुबह थे तो बड़े सुस्त।" सुकन्या बोली।

"देखो, अब यहाँ वीरभानु आयेंगे। मैं उनसे मिल की जब बात करूँ तो तुम ध्यान से सुनना। फिर कह देना कि वीरभानु जी, आप तो हार गये।" सुकन्या ने सुझाव दिया।

"मैं अब उनके सामने नहीं आऊँगी। बड़ी बुरी नीयत है उनकी। मैंने तो कभी ध्यान नहीं दिया, और न पापा ने कभी उधर सोचा। वह तो उन्हें हमारे साथ कई बार अपनी मोटर में भी ले गये।" सुकन्या ने रोष में कहा।

"वह सब ठीक है। मैं तो यही कहती हूँ तुम उन्हें सुनाना तो सही। बड़े क़ाबिल बनते हैं, और क़ाबिल ऐसे हैं कि घर में सेंध लगाते हैं।" मिस तारा ने दुमायना बात कही।

सुकन्या चुप रही। मिस तारा उससे मिल की राजनीति पर रोचक ढंग से चर्चा करती रही। सुकन्या को भी दिलचस्पी हो आई। उसे पहले इस सम्बन्ध में कुछ बताया ही नहीं गया था। उसके लिये यह नया विषय था, और फिर रोचक शैली में प्रस्तुत किया जा रहा था, इसलिये उसे वह कहानी जैसा लगा।

इसी बीच संदेश आया कि वीरभानु आ गया है। मिस तारा ने

उसे बुला भेजा और सुकन्या से कहा, "उनके सामने न बैठी रह सको तो ममी के पास चली जाओ।"

सुकन्या का नारीत्व जाग आया। बोली, "मुझे उनसे कोई भय नहीं लगता। मैं कह दूँगी कि हार कर बातें बनाते हैं।" तारा हँस पड़ी, "बहुत अच्छे।"

वीरभानु आया। चाय आई, बातचीत शुरू हुई। वीरभानु इस समय अपने भाग्य को सराह रहा था। सुकन्या से ऐसे संक्षिप्त वातावरण में उसकी कभी भेंट न हुई थी। मिस तारा उसके चेहरे पर आने-जाने वाले हावभावों को ध्यान-पूर्वक देख रही थी। वीरभानु की वाचालता उभर आई थी। अपनी विद्वत्ता, अपना पांडित्य, अपनी योग्यता की धाक जमा देने के लिये वह आतुर था। बात-बात में मिस तारा ने कहा—"मिल में क्या चल रहा है ?"

"सब ठीक है। और भी ठीक हो जायगा। आपका नेतृत्व भी तो है।" वीरभानु को यह विषय रुचिकर न लगा, सुकन्या के सामने एक तो वह वैसे ही श्यामकिशन की आलोचना नहीं कर सकता था, दूसरे यह समय गपशप का था, और वह भी रोमानियत के लहज़े में।

"सब ठीक क्या है ? हार कर ठीक बताते हैं।" सुकन्या ने तीर छोड़ दिया।

वीरभानु झेंप गया। जहाँ उसका वीरत्व उभरना चाहिये था, वहाँ उसके प्रति वह प्रतिकूल भावना ! वह बोला, बहुत कुछ बोला, लेकिन लगता था कि जैसे शराबी बोल रहा हो, कभी विषय पर, कभी विषय से दूर। मिस तारा ने उस दृश्य का बड़ा आनन्द लिया, और जब उसने जान लिया कि वीरभानु का दिल अच्छी तरह चोट खा चुका है, तो उसने प्रसंग बदलते हुए कहा, "वीरभानु जी, आप हमारे मिल की आशा हैं। हमें आप पर गर्व है। अब तो बैठक का समय हो गया। मैं फिर कभी आपसे विस्तार से बातें करूँगी।"

वीरभानु वास्तव में जाना ही चाहता था। सुकन्या का वह वाक्य और उससे अधिक मिस तारा का मौन व्यंग्य हास्य उसके लिये क़हर थे। औरतों के सामने उसकी पहले कभी इतनी बुरी हालत न हुई थी। उसने 'नमस्ते' की और चला गया।

मिस तारा अपनी विजय पर बड़ी प्रसन्न थी। उसे मालूम था कि अब वीरभानु ढंग से चलेगा, रही सही कसर आज की बैठक में पूरी होगी। अब श्यामकिशन भी सेक्रेट्री को पदोचित सम्मान देगा, साथ में मजदूरों के प्रति भी सदाशयता से चलेगा। महेन्द्रसेन इंजीनियर का वैसे तो काम 'टेक्नीकल' है, लेकिन उसकी दुरंगी राजनीति भेद का लाभ उठा लेती है। वह अब न होगा। इसके अलावा मिल की नीति भी पहले से उदार होगी। मज़दूर-मंगल-कार्यों की गति बढ़ाई जायगी। पुराना अनुदार भाव मिल मालिकों के लिये कल्याण परक नहीं है, यह सब उद्योगपति अपनी एसोसियेशन की बैठक में स्वीकार कर चुके हैं। उसने यह निर्णय कर लिया था कि वह मिल प्रवन्ध और साथ ही मज़दूर-महिलाओं के मंगल-कार्यों में भी रुचि लेगी।

कुछ समय बाद वह उठी, और सुकन्या को अपनी माँ के कमरे में ले गई। उसकी माँ बैठी हुई रामायण का पाठ कर रही थी। बोली, "सुकन्या तुम तो बड़ा अच्छा गाती हो। रामायण सुनाओ !" मिस तारा ने कहा—सुकन्या तुम ममी को रामायण सुनाओ, मैं बैठक में शरीक होती हूँ। फिर तुमसे आकर बात करूँगी। मेरी अच्छी सुकन्या।"

सुकन्या माँजी को रामायण सुनाती रही। फिर उसने पद और गीत सुनाये।

चाँद आकाश में चढ़ आया था। चाँदनी खूब खिल आई थी। बड़ा मनोरम दृश्य था। सुकन्या माँजी के साथ आकर अंगनाई में बैठ गई और फिर मौज में आकर गाने लगी :

सभी ओर छल की कपट कूटनीतिक।
ग्रहण ग्रासकी सांपिन्नी विश्व छाया॥

पिये जा रही प्राण का मंद कंपन।
निगलती चली जा रही है बुद्धि काया ॥

इतने में सेठ जी अन्दर आ गये। श्यामकिशन और मिस तारा भी साथ में थे। सेठ जी ने कहा—सुना, सुकन्या के गीत। छल-कपट की राजनीति को कोस रही है।

श्यामकिशन हँस पड़ा और मिस तारा भी।

सेठ जी बोले—श्यामकिशन खाना खा लो।

"नहीं, घर पर इन्तज़ार होगा। चलता हूँ। चलो सुकन्या।" श्यामकिशन दोनों हाथ जोड़ कर बोला।

वे चलने लगे, तो मिस तारा बोली, "विश यू बेस्ट आफ लक (आपके सौभाग्य की कामना करती हूँ)। आज के निर्णय ठीक हो गये। मिल के इतिहास में नये अध्याय का सूत्रपात हो गया है।"

"जी, मैं आपका कृतज्ञ हूँ, तारा जी।" श्यामकिशन ने नमस्ते की और गाड़ी में सुकन्या के साथ चला गया।

आज धरती चाँदनी से भरी-पूरी थी, ख़ुशी का एक आलम छाया हुआ था। सब अच्छा ही अच्छा लग रहा था। श्यामकिशन ने आस्मान की ओर देखा तो चाँद हँस रहा था। वह भी मुस्करा पड़ा, और उसने फिर सुकन्या की ओर देखा ; वह भी हासविलास से समुत्फुल्ल थी।

११

★★★★

जादू वह, जो सर पर चढ़ कर बोले; और वास्तव में मजदूरों के संगठन, आन्दोलन और प्रदर्शन का जादू न केवल आम लोगों के सर पर चढ़ कर बोलता था, बल्कि उसके प्रभाव में मज़दूरों के शत्रु भी आ गये थे।

यों तो मज़दूरों ने अनेक आन्दोलन और प्रदर्शन किये थे और उनमें सफलता भी पाई थी, किन्तु इस आन्दोलन और प्रदर्शन का अन्दाज़ ही निराला था। "चांडाल चौकड़ी" की राय में मज़दूरों ने इस सफलता को इस तरह ले लिया था जैसा कि जनतासिंह ने एक बार रिसाल के लौंडों और पूरन के पट्ठों को पहली झपट में ही अपने डंडे से भगा दिया था। पूरन गुरु ने शंकर को मज़दूरों की इस जीत पर बधाई देते हुए कहा था, "गुरु ! तुमने श्यामकिशन को पहली पकड़ में ही आस्मान दिया।" रिसाल ने शंकर से हँसकर कहा, "प्यारे, श्यामकिशन की पुटपुटी पर जो लकड़ी पड़ी तो वह धूल चाटने लगा।"

लाला प्रवीण राम ने एक-दो नहीं, सैकड़ों मजदूरों के सामने इस जीत के बारे में कहा था, "मगर नहीं। मैंने कमिश्नर साहब से कहा कि हुज़ूर, जुर्माना तो एक लाख रुपया तक दे सकता हूँ, पर बाजार में मेरी इज्ज़त का क्या होगा ? भैय्या, मेरी भरपूर जवानी थी। मसें भीगी ही भीगी थीं। उस दिन मेरे सर में असली चमेली का तेल लगा था, जिसकी खुशबू से सारा कमरा महक रहा था। तंजेब की दुकलिया

टोपी बाँकेपन के साथ पहनी हुई थी। आँखों में काजल लगा हुआ था। तंजेब का साफ धुला बुर्राक अंगरखा मैं पहने हुआ था। मख़मली किनारी की महीन धोती थी। ज़रा मुस्करा कर कमिश्नर साहब से मैंने बात की तो वह बोले, "लाला जी ! तुम्हारी काबलियत पर खुश होकर हम तुमसे अपनी दोस्ती का ऐलान करते हैं। भैया, जुर्माना तो क्या देता, कमिश्नर साहब की मेहरबानी से मेरी शहर के रईसों में गिनती होने लगी। वही बात शंकर की भी है। तहरीक की एक अदा से ही उसने सारी सरकार अपने हक़ में करली।"

गिरीश ने शंकर से कहा था : "दोस्त तुम्हारी शानदार जीत पर बधाई।"

कंटक जी की टिप्पणी थी, "इस जीत का सेहरा शंकर को ही बंधेगा। आखिर है तो मेरा शिष्य ही। जब वह शुरू शुरू में सार्वजनिक जीवन में आया था, तो मैंने उसे दो चार नुक़्ते बताये थे। उसने इस आंदोलन में भी उन पर पूरी तरह अमल करके कामयाबी ले ली है।" इस पर बल्लू दादा ने हँस कर कहा, "तो कंटक जी ! गुरु गुड़ ही रह गये और चेले शक्कर हो गये। बाक़ी इस जीत में विजय का भी तो हिस्सा है।" कंटक को विजय का नाम सहन न हुआ। बोला "विजय की तो यह बात है की जैसे कुत्ता युधिष्ठिर के साथ स्वर्ग में पहुँच गया था, इसी तरह इस आंदोलन की सफलता के साथ इस का भी नाम नत्थी हो गया।" कंटक विजय को लांछित करते हुए यह भूल गया कि वह शंकर को बहुत महत्व दे रहा है।

लड़ाका मजदूर तो अपने सीने फैलाये फिरते ही थे, आम मज़दूरों के हौसले भी इस क़दर बुलंद थे कि वे अनोखे मिल और सेठ जी की कोठी से भी दसियों गुना बढ़िया रोशनी करना चाहते थे, पर रघुनाथ की मौत के कारण उन्होंने अपने बुलंद इरादों को किसी और समय के लिए अपने दिलों में सुरक्षित रख लिया था।

कामरेड सीताराम के जोश का ठिकाना न था। हर बस्ती में जाकर उसने इस जीत के राजनीतिक पहलू को अच्छी तरह समझाया था, और इस बात का विश्वास दिलाया था कि हिन्दुस्तान भी बहुत जल्दी रूस और चीन की तरह आज़ाद हो जायगा। कामरेड की आँखों में खुमारियाँ थीं, सर में दर्द था, शरीर का एक-एक अंग दुख रहा था, किन्तु उसके अपने शब्दों में, "यह आराम का वक्त नहीं था। इन्कलाबी तक़ाजों और सियासी फरायज़ का वक्त था।" वह मिशनरी भावनाओं की ज्वलंत मशाल बना हुआ था। विजय ने जब उससे यह कहा कि कामरेड जोश में होश तो नहीं खोना चाहिए, तो उसने पलट कर कहा था कि गाँधीवाद ने हमेशा राष्ट्रीय आन्दोलन के जोश भरे माहौल को नेस्त करने का काम किया है। हम अब धोखा खाने वाले नहीं हैं।

जनतासिंह, जो इस दौर में हर समय उसके साथ घूमता था; बोला, "कामरेड, मैं तो थक कर चकनाचूर हो गया हूँ। अब एक दो दिन आराम करलें। अपने घर-बार भी साफ़ कर लेंगे और कपड़े भी धो लेंगे।"

कामरेड सीताराम ने कहा, "तुम लड़ाका मज़दूर लीडर ज़रूर हो, लेकिन तुममें मार्क्सी नज़रिया पूरी तरह से उभर कर नहीं आया। मार्क्सवादी न कभी थकता है, और न कभी बूढ़ा होता है। कामरेड, हमारी मंज़िल नज़दीक है, और पूरी जद्दोजहद के साथ हमें उस तक पहुँचना है और जल्दी पहुँचना है।"

विजय थोड़ा बहुत आराम करने के बाद अन्य मज़दूरों की तरह काम पर जाने लगा था और अपने खाते के लोगों का तथा अपने प्रभाव के अन्य मज़दूरों का मनोबल बढ़ाने में लगा हुआ था। अपनी मज़दूर यूनियन के काम के साथ साथ वह शंकर से मिल जुलकर संघर्ष कमेटी के नये कार्यक्रमों पर भी विचार कर रहा था। श्यामकिशन के साथ ताल-मेल करके कंटक ने जो थोड़ा बहुत असर बनाया था,

एक तो वह आन्दोलन और प्रदर्शनी की सफलता से क़रीब क़रीब टूट ही चुका था, बाक़ी रहा सहा प्रभाव भी विजय ने तोड़ दिया था।

शंकर भी इस सफलता पर बड़ा प्रसन्न था, लेकिन वह बड़े मनोयोग से मिल प्रबन्धकों की नई प्रवृत्तियों और गति-विधियों पर नजर लगाये हुये था। वह इस बात पर लगातार चिन्तन मनन कर रहा था कि मालिक के नये प्रगतिशील रुझान कहाँ-कहाँ क्या असर डालेंगे। अन्य यूनियनों और राजनीतिक दलों के विभिन्न मजदूर गुटों की अन्दरूनी प्रतिक्रियाओं का भी वह चुपचाप अध्ययन कर रहा था। वह अपने को उन जिम्मेदारियों के लिये तैयार कर रहा था, जिन्हें आने वाला दौर अपने आंचल में बाँधे ला रहा था। उसने इंजीनियर महेन्द्र सेन की मारफत और भी मिल अधिकारियों से अपने सम्बन्ध बढ़ाने शुरू कर दिये थे। श्यामकिशन यद्यपि हारा था फिर भी वह उसकी शक्ति को कम करके नहीं आँक रहा था। उसका यह विश्वास था कि दुश्मन चून का भी बुरा होता है और फिर श्यामकिशन को तो मिस तारा की कृपा प्राप्त थी। वह यह भी जानता था कि सेक्रेट्री की मैनेजर पर नाराजी थोड़े वक्त की ही थी, जिसका मजदूर आंदोलन के लिये उसने भरपूर लाभ उठा लिया था। उसे मालूम था कि आने वाले दौर का अधिक गंभीरता के साथ सामना करना होगा। इस बीच वह मुख्य मन्त्री वाणीविलास से भी मिला और अन्य सरकारी अधिकारियों से भी।

मज़दूर आन्दोलन की जिन्दगी के शंकर ने कई मोड़ देखे थे। उसे वे भी दिन याद थे, जब मज़दूरों को सतरह-सतरह, अठारह-अठारह घण्टे काम करना पड़ता था, और इतनी सख्त पाबन्दियों में काम करना पड़ता था कि जब वे पेशाब करने के लिये भी जाते तो उन्हें पाँच-पाँच सेर वजन का लोहा उठाकर अपने साथ लाना पड़ता था। उस दौर में मज़दूरों की हालत गुलामों जैसी थी, लेकिन फिर भी वे खुश थे, क्योंकि अपने गाँवों से वे लोग तबाह होकर आये थे। वे खुशी-खुशी सस्ते दामों

में अपनी अधिक से अधिक मेहनत मालिक को बेचते थे, लेकिन ज्यों-ज्यों उन्होंने मालिक के मुनाफा कमाने का ढंग देखा, जाना और समझा, त्यों-त्यों वे ज़्यादा सावधान, सतर्क और संगठित होते गये। यही कारण है कि आज आठ घण्टे की ड्यूटी होने पर भी और अपेक्षाकृत अधिक सुविधाएं मिलने पर भी मजदूर वर्ग कहीं अधिक चेतन है। वह मालिक की दौलत के रहम पर न रह कर अपनी मेहनत के महत्व को पहचान गया है। मालिक के साथ उसका संघर्ष तब तक जारी है जब तक मालिक अपनी मुनाफाखोरी नहीं छोड़ता। यहीं तक नहीं, वह किसान-मजदूर-राज की कल्पना को साकार करने के लिये कमर कसे बिल्कुल तैयार है। लेकिन शंकर को यह पूरी तरह अहसास है कि उस मंजिल पर पहुंचना अभी टेढ़ी खीर है।

शंकर के सामने मज़दूर आन्दोलन का चित्र यों आ गया जैसे छोटे-छोटे कीड़े मकोड़ों ने अपनी मेहनत और जद्दोजहद के जादू से नये ज़माने के देवदूतों में अपने को परिवर्तित कर लिया हो, और ये देवदूत दुनिया के नरक को अपने उसी जादू से छू-मंतर करके ऐसी सृष्टि का निर्माण करना चाहते हों, जिसमें हर ज़िन्दगी स्वर्गिक उल्लास से थिरक-थिरक कर नाचेगी। इस चित्र-छवि से वह आत्मविभोर हो गया और उसे अपना क़द भी बल्लियों बढ़ता हुआ नज़र आया। उस वक्त वह कितना छोटा था, कितना नगण्य, जब अपने घर की खेती-बाड़ी बरबाद होने पर वह शहर में बेपनाह होकर आया था, लेकिन जुल्मों की दुनिया को पीस डालने की उसकी आकांक्षा, गरीब की मर्मांतक पीड़ा और सच्चाई के लिये निस्सीम प्यार को पाकर शक्ति का अजस्र स्रोत बन गई थी। मजदूर आंदोलन में उसका आना स्वाभाविक था, और उसके माध्यम से उसका निजी विकास भी एक दम स्वाभाविक, दरअसल उसका व्यक्तित्व गन्ने के रस की मिठास की तरह था, जो हर सूरत में मजदूरों के लिये मीठा ही मीठा था।

शंकर ने जीवन में अथाह विष पाया था, किन्तु भगवान शंकर की तरह उसे अपने कंठ में रख कर अपने बर्ग जीवन तक उसकी कालिमा और कड़वाहट को नहीं पहुँचने दिया था। उसे अपना यह आत्म-विश्लेषण बड़ा अच्छा लगा और उसमें वह खो गया; लेकिन उसके सामने ज्यों ही मिल प्रबन्धकों का नया चमकता स्वरूप आया, उसने अपने गालों पर चपत लगा लिया; अभी गर्व के लिये अवकाश कहाँ ? लम्बी चौड़ी लड़ाई सर करने के लिये बाकी है।

उसे आत्म-विश्लेषण और आत्म-परिष्कार का अभ्यास है। अपनी प्रवृत्ति की गहराई में जाना उसका स्वभाव बन गया है। इसी प्रकार बाहरी परिस्थितियों का आकलन और विश्लेषण करते रहना उसकी आदत है। शंकर व्यष्टि और समष्टि के संतुलन में विश्वास रखता है।

इस दौर में भी वह अपनी परिस्थितियों के प्रति पूरी तरह सजग था।

× × ×

अपने घर को लीप पोत कर और नहा धोकर कामरेड सीताराम कपड़े पहन कर बाहर गली में आकर खड़ा ही हुआ था कि इसके अचरज का ठिकाना न रहा। उसे अपनी आँखों पर यकीन न होता था। उसे महसूस हुआ कि कहीं वह दिन में ही तो सपना नहीं देख रहा है। वह असमंजस में ही था कि वे सबके सब उसके सामने आकर खड़े हो गये। कामरेड हक्का-बक्का था, कोई लाइन आफ एक्शन, कोई रास्ता समझ में न आया था। आखिर यह माजरा क्या है ? मानसिक जिच की इस दुस्सह स्थिति में मिस तारा ने बड़े कोमल स्वर में उससे कहा, "क्यों भाई साहब, यहाँ के लोगों को क्या-क्या दिक्कत हैं ?" समान्य स्थिति में तो कामरेड इस एक प्रश्न के उत्तर में लम्बा-चौड़ा भाषण कर डालता, लेकिन यहाँ तो हालात ही और थे। मिस तारा के पीछे सेक्रेट्री, फिर श्यामकिशन, उसकी पुत्री सुकन्या, शहीद रघुनाथ की विधवा सत्या, वीरभानु, महेन्द्रसेन और अनेक मिल अधिकारी तथा

अन्य सजे-धजे लोग थे। पीछे मजदूरों का एक बड़ा जमघट था, ये वे ही जाने पहिचाने चेहरे थे, जो इसी पिछले मजदूर आंदोलन में दिन-रात जुटे हुए थे। जनतासिंह की भी सूरत कामरेड को दिखाई दी। उसने उसकी ओर देखा कि उसी से कुछ पता चले, पर जनतासिंह खुद गुम-सुम था। उसके चेहरे से परेशानी साफ झलक रही थी। कामरेड को मन ही मन बड़ी झुंझलाहट हुई : दुश्मन और दोस्त सब साथ ही साथ चले आ रहे हैं। यह चक्कर क्या है ?

कामरेड सीताराम को एक दम सुन्न देखकर श्यामकिशन ने समझाकर कहा, "भय्या, तारा जी यह पूछ रही हैं कि यहाँ के लोगों को क्या कठिनाइयाँ हैं ? पानी, बिजली, सड़क, नाली बच्चों और औरतों की पढ़ाई लिखाई की—इनमें से क्या क्या चाहिये ? तारा जी इस बस्ती के सुधार की कोशिश करेंगी। उनके साथ आज इंजीनियर और ओवरसियर आदि हैं···भय्या, मिल की बात अलग, यहाँ की बात अलग।"

"मुझे नहीं मालूम कि क्या कठिनाइयाँ हैं।" कामरेड ने चिढ़न के साथ कहा। वह वास्तव में, चकरा गया था : यह श्यामकिशन बोल रहा है या कोई और है। इसकी वाणी में इतना मिठास कहाँ से आया ?

जनतासिंह कामरेड भी बराबर आगया। दोनों ने अर्थभरी दृष्टि से एक दूसरे को देखा। इस सम्बन्ध में पार्टी-लाइन (पार्टी का नीति) या मजदूर सभा की नीति के बारे में दोनों में से किसी को भी न मालूम था। मानसिक जिच की स्थिति में कामरेड किसी भी तरफ देखे बिना झपट कर गली से बाहर चला गया। जनतासिंह उसके पीछे पीछे था। जब दोनों काफी दूर निकल गये तो जनतासिंह ने आवाज़ दी, "कामरेड सुनो तो।" सीताराम रुका और जनतासिंह की तरफ देखने लगा, फिर गंभीरता से बोला, "कामरेड, मामला बड़ा कुतार हो गया है। दुश्मन बड़े गंदे इरादों से हमारी सफ़ों में घुस आया है। इस बारे में पार्टी और मजदूर सभा की, लाइन एक दम साफ होनी

चाहिए, और फिर दुश्मन के नापाक इरादों का पर्दाफाश किया जाना चाहिए।

जनतासिंह ने भी उसी चिन्ता से कहा, "मैं तो, कामरेड, खुद बड़ा परेशान हूँ। सेठ की लड़की तारा मिल-अफसरों के साथ नेहरू बस्ती में सत्या के घर गई तो मेरा माथा तो तभी ठनक गया था कि दुश्मन अब हमारी पांतों में बड़ी दरार डालने लगा है। तुमने सत्या को इन के साथ साथ आने से रोका क्यों नहीं ?" कामरेड ने रोष से आंखें तरेरते हुए कहा—"मैं कैसे रोकता, कामरेड। मिस तारा ने उसे उलटा सीधा पढ़ाया और बाहर निकाल लाई। सत्या की सास बाद को तो रोई कि मेरी बहू को रांड बहका कर ले गई, और हमारे यहाँ तो मौत के बाद यों घूमना बड़ा बुरा समझा जाता है, पर उस वक्त उस की ज़ुबान भी पत्थर हो गई।"

"कुछ नहीं कामरेड, तुम्हारी सियासी समझ अभी बनी नहीं। वहीं रोकना चाहिए था। दूसरे मजदूरों को भी रोकते।" कामरेड ने फिर रोष प्रकट किया।

"यार, कमाल है। मैं कहता हूँ कि कोई रुका नहीं। वह तो विजय को भी बुला रहे थे, लेकिन खुशकिस्मती से वह मिला नहीं।" जनतासिंह तुनुक गया।

"तुम्हें मजदूरों में जोशीली तक़रीर करनी चाहिये थी।" कामरेड ने जोर देकर कहा।

"तुमने ही क्यों नहीं तक़रीर की ? खुद तो पत्थर हो गये, मुझ पर रुवाब झाड़ते हैं।" जनतासिंह को क्रोध आ गया, और उसने बाहें ऊपर कर लीं।

"बस, अब कुश्ती लड़ने को आमादा हो गये। मालूम नहीं सियासी शऊर कब आयेगा ? अच्छा मुझे जाने दो। मैं पार्टी आफिस जा रहा हूँ। तुम शंकर दादा को तलाश करके उसे इस हादसे की रिपोर्ट दो।" कामरेड यह कह कर रूपक लिया।

जनतासिंह मज़दूर सभा के दफ्तर की ओर चला गया ।

इधर मिस तारा और उसके ग्रुप ने पूरी अनोखे लाइन का सर्वेक्षण किया । उसने ज्यादा से ज्यादा मज़दूर-परिवारों से बात चीत की । इस लाइन के रहने वालों ने उसे बताया कि यह बस्ती निचली सतह पर बसी होने के कारण बरसात में क़रीब-क़रीब डूब जाती है । बहुत से लोग यहाँ से भाग जाने को मजबूर हो जाते हैं । वर्षा पड़ने पर यह पता नहीं चलता कि कौन मरता है, कौन जीता है । गलियों और मैदानों में पानी ही पानी हो जाता है । लोग यह जतलाने के लिये कि वे जिंदा और सुरक्षित हैं, अपनी छतों पर थालियाँ, ढोलक और छन्ने बजाते हैं । जिस छत से ऐसी आवाज नहीं आती, उसके घर के सम्बन्ध में अशुभ कल्पनाएं की जाने लगती हैं । पानी की निकासी तक का यहाँ कोई प्रबन्ध नहीं । रोशनी, पीने का पानी, सड़कें, नालियाँ, टट्टी, पेशाब घर तथा सफाई-सुथराई की सुविधाओं की तो यहाँ क्या बात की जाय ?

किन्तु मिस तारा और श्यामकिशन का यह दौरा उनके लिए फूलों की क्यारी न रहा । पग-पग पर उनके काँटे लगे । जिस मज़दूर से वे मिलते, उसकी ही निगाह में उन्हें नफ़रत, शक और गुस्सा मिलता, और जुबान में काँटा । मज़दूर परिवारों ने कहने लायक और न कहने लायक सभी बातें कह दी थीं ।

बापू नगर से बल्लू अपने एक रिश्तेदार को यहाँ देखने आया हुआ था । सीलन भरे घर में उस बीमार की चारपाई पड़ी हुई थी । वहीं पर उसके बच्चे खेल रहे थे और घर की मालकिन उसी घर में बीमार के लिए चाय और बच्चों के लिए खाना तैयार कर रही थी । मिस तारा और श्यामकिशन के काफ़िले ने जब उस घर में झाँका, तो सबके सब हक्के-बक्के हो गये । बीमार मज़दूर की आँखें श्यामकिशन को देखकर झुक गईं और उसने करवट बदल ली । मालकिन अस-

मंजस में हो आई—फ़ैशन के पुतले और पुतलियाँ यहाँ आज क्या करने आये हैं ? क्या कुछ और क़हर ढाया जाने वाला है ?

श्यामकिशन ने उस मातमी खामोशी को तोड़ते हुए कहा, "कहो भय्या, कैसी तबीयत है ?"

रोगी मज़दूर चुपचाप लेटा रहा। श्यामकिशन ने मज़दूर की बीवी से पूछा—"क्या रोग है तुम्हारे पति को ?" वह भी चुप रही, बच्चे अपना खेल छोड़ कर सिटपिटा कर एक तरफ इकट्ठा हो गए। मिस तारा ने सुकन्या से कहा कि तुम इन्हें टाफ़ी दो। सुकन्या ने प्यार से बच्चों को टाफ़ी दीं, लेकिन बहुत अनुनय के बाद भी वे लेने को तैयार न हुए।

वीरभानु को सुकन्या के यहाँ टाफी बाँटने के उपक्रम का दृश्य बहुत ही अच्छा लगा। वह महेन्द्रसेन की ओर देख कर मुस्कराया।

बल्लू बैठा-बैठा यह तमाशा देख रहा था। उसे किसी ने न देखा था, और देखता भी क्या ? घर एकदम "असूर्यम्पश्या" था, जहाँ सूरज ने कभी झाँका तक न था, छोटा सा घर, जिसमें बमुश्किल तमाम ढाई चारपाइयों की जगह थी। कुछ चारपाइयों के ऊपर और कुछ चारपाइयों के नीचे लेटकर रात की कालिमा पूरी की जाती थी।

सुकन्या जब बच्चों को टाफ़ी देने की कोशिश में लग्न थी, तभी एक बड़े से मकोड़े को देखकर वह डर गई और पीछे हटी। बल्लू हँस पड़ा, अँधेरे में उसकी हँसी गूंज गई। उसने कहा, "बिटिया, यह अनोखे लाइन है, अनोखे लाइन।" सुकन्या अन्धकार में से इस व्यंग्य भरी वाणी को सुनकर और भी डर गई। वीरभानु को यह स्थिति अच्छी न लगी। वह सुकन्या को सँभालने के लिये बढ़ना ही चाहता था, लेकिन महेन्द्रसेन ने उसे रोक लिया।

मिस तारा के दिल को बड़ा धक्का लगा। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि उसके पिता का नाम इस तरह अपमानित और

लांछित हो रहा है। श्यामकिशन ने इस भावना को मिस तारा के चेहरे पर पढ़ा, और वह क्रोध से अभिभूत हो गया। उसने दाँत पिस-पिसाये : दो दो कौड़ी के आदमी कैसी बातें करते हैं ? लोगों की व्यंग्योक्तियाँ, फ़ब्तियां और ग्लानिमय नेत्र देखते देखते मज़दूर-दुश्मनी के भाव उसके मन में पक्के और गहरे होते जा रहे थे : गू के कीड़े गू में ही राज़ी रहते हैं। मिस तारा को इनके और इनकी बस्तियों के सुधार की बात सूझी है ! हिन्दुस्तान को अमरीका बनाने चली हैं। वह झुंझला गया। वह बल्लू को डाँटने ही वाला था कि सेक्रेट्री ने बात सँभाली : "अच्छा, बल्लू बैठा है ? कहो भाई, क्या हाल-चाल हैं ?"

"सेठ की किरपा हो रई। आपके राज में न्याव ही न्याव है। बूढ़ी गाय को भी घास फूँस डाल देते हैं, लेकिन आदमी की क़दर तो उससे भी गई बीती है।"

सेक्रेट्री स्थिति भाँप गया और बोला : "भय्या, कल मुझ से मिलना।" और उसने मिस तारा से चलने का सादर संकेत किया।

मिस तारा के दिल को बात लग चुकी थी। उसने बल्लू को बाहर बुलाया और पूछा : "इस बस्ती का नाम अनोखे लाइन कैसे पड़ा ?"

बल्लू बोला, "रहने दो बिटिया। यह बात अपने अफ़सरों से पूछो तो अच्छा।"

"नहीं, तुम्हीं बताओ। मैं बुरा नहीं मानूँगी।"

"अच्छा, सुनना है तो सुनो। यह बस्ती सब से गंदी और सब से बुरी है। इसलिये कारीगरों ने इसका नाम 'अनोखे लाइन' रख दिया है।" बल्लू ने सूत्र रूप से बात कह दी।

मिस तारा का चेहरा एक बारगी बिल्कुल उतर गया। अफ़सरों के चेहरों की हवाइयाँ उड़ने लगीं। इस समय मिस तारा चाहती थी

कि उसे अकेला छोड़ दिया जाय। मज़दूरों में अपने मालिक के लिये इस क़दर नफ़रत है, उसे इस बात का स्वप्न में भी ध्यान न था। उसका मन विक्षोभ से भर गया। श्यामकिशन ने वक्त की नज़ाकत को समझा। बोला: "यह ज़मीन मोल लेकर इसे आदर्श मज़दूर बस्ती बना देंगे। इसका नाम अगर अनोखे लाइन है, तो यह फिर अनोखे लाइन ही होगी।" मिस तारा का इस बात से मन कुछ हल्का हुआ।

इतने में शंकर जनतासिंह के साथ अनोखे लाइन में आ गया। टिड्डी दल की तरह मजदूर उसके इर्द गिर्द जमा हो गये। मिस तारा ने पूछा—"यह क्या है ?"

श्यामकिशन ने मुँह बनाकर कहा, "यही है शंकर।"

मिस तारा उस ओर बढ़ी और शंकर के सामने जा खड़ी हुई। शंकर को बड़ा अचरज हुआ, लेकिन उसने जल्दी ही संभल कर 'नमस्ते' की। मिस तारा ने शंकर को संबोधित करते हुए कहा, "हम इस बस्ती को एकदम आमूल चूल बदल देना चाहते हैं। आपकी मदद की ज़रूरत पड़ेगी।"

"जी, बातचीत कर लेंगे।" शंकर ने बात को संक्षिप्त करना चाहा।

श्यामकिशन मिस तारा के पीछे-पीछे आ गया। उसने शंकर के उत्तर में गर्व का भाव देखा, और उसने उसे कठोर निगाहों से देखा। इन निगाहों को देखकर शंकर मुस्कराने लगा, मानों उसने कहा हो कि निष्क्रिय क्रोध का क्या लाभ ? शंकर को याद आया कि दिवाली की रात को मज़दूर-गेट पर श्यामकिशन ने मज़दूरों को हाथी और अपने को शेर चित्रित कराया था। वह बात याद आई तो उसकी मुस्कराहट और गहरी हो आई। श्यामकिशन झेंप गया, पर उसे अपनी झेंप बहुत बुरी लगी, और उसने तारा से कहा, "अब चलिये।"

मिस तारा ने पुनः शंकर से कहा, "मैं चाहती हूँ कि इस सिलसिले में जल्दी से जल्दी बात चीत हो जायें।"

शंकर : "आप चिट्ठी भिजवा दीजिये। साथियों से बातचीत करके मैं उत्तर भेज दूंगा।"

"चिट्ठी की क्या जरूरत है ?" मिस तारा ने प्रश्न किया।

"देखिये, हमारी बाक़ायदा कमिटी है। उसके सामने सारे सवाल विचार के लिये आते हैं। और फिर आज कल तो वैसे भी संघर्षमय स्थिति है.........।" शंकर ने अपना दृष्टिकोण विशद किया।

"मैं समझ गई। अच्छी बात।" मिस तारा ने चलने का उपक्रम किया और दोनों हाथ जोड़ दिये।

श्यामकिशन ने चलती बार कनखियों से शंकर को घूरा। शंकर फिर मुस्करा दिया। लेकिन शंकर की यह मुस्कराहट न जाने कहाँ चली गई, जब श्यामकिशन ने सत्या से कहा, "चलो बहन।" शंकर को उदास देखकर श्यामकिशन की मुस्कराहट गहरी हो गई। यह नहले पर दहला था।

मिस तारा का जब क़ाफिला चला गया, तो बस्ती में चर्चाओं के सागर लहराने लगे। कोई किसी रंग में बात करता और कोई किसी रंग में। जितने मुँह उतनी बात। कामरेड सीताराम तो रहता ही इसी बस्ती में था। शाम को जब वह पार्टी-आफिस से लौटा तो उसने बगैर खाये पिये बीड़ी के कशों तथा मजदूरों के घरों में मिली चाय के सहारे ही तमाम बस्ती को इस दौरे की "सियासी अहमियत" अच्छी तरह समझाई।

शहीद रघुनाथ की पत्नी सत्या की मिस तारा के साथ आने की चर्चा बड़े जोर पर थी। मजदूर इस सिलसिले में जब कामरेड से पूछते तो वह कह देता कि मिस तारा उसे यह कह कर लाई थी कि संघर्ष कमिटी वाले बुला रहे हैं। लोग कहते—बड़ी ज़ालिम है यह मिस,

कैसा बड़ा धोखा दिया ? कामरेड कहता "सरमायदार होता ही है दगाबाज़।" कामरेड मिस तारा की होशियारी का लोहा मान रहा था कि उसने इस आन्दोलन के मूलाधार शहीद रघुनाथ की बीवी को अपने साथ लाकर आन्दोलनकारियों के कस कर चपत मार दिया है।

सुरजावल की 'चांडाल चौकड़ी' भी अनोखे लाइन में मिस तारा के पीछे-पीछे थी।

जब कामरेड 'चांडाल चौकड़ी' को मिला तो रसिया मज़दूर बोला, "कामरेड, तुम बस हो यों ही। तुम्हारे घर पर वह चल कर आये, और तुम खड़े हो गये मुँह फुलाकर। मेरे घर आते तो सच स्वागत में आँखें बिछा देता।"

कामरेड ने हँस कर कहा, "तुम्हें आँखें बिछानी ही चाहियें थीं, और मेरे लिये मुंह फुलाना ही मुनासिब था।"

"क्यों ?" रसिया ने पूछा।

"तुम सेठ अनोखे लाल का बेटी का स्वागत थोड़े ही करते, तुम तो हुस्न के परवाने हो। मैंने तो सेठ की बेटी या भावी मिल मालकिन की मुखालफ़त की थी।" कामरेड ने हंस कर रसिया मज़दूर के हल्का सा चपत लगा कर कहा।

सब हंस पड़े।

× × ×

संघर्ष कमिटी की बैठक छः घण्टे तक चलती रही। मिस तारा की चिट्ठी पर ही बहस हुई। चिट्ठी में तीन ख़ास मुद्दे थे : पहला, मज़दूर-बस्तियों के सुधार के काम और विशेषकर अनोखे लाइन के सुधार में सरकारी और म्युनिसिपल सहायता लेने के लिए मज़दूरों के सहयोग की माँग, दूसरा, बोनस की अदायगी पर सहमति, और तीसरा, रघुनाथ की बीवी और घायल मज़दूरों की सहायता। गोलीकांड की जाँच

में मिस तारा ने मिल प्रबन्धकों की तरफ़ से पूरे सहयोग का दिलासा दिलाया था। साथ में यह भी लिखा था कि यह चिट्ठी सेक्रेट्री, और मैनेजर श्यामकिशन की पूरी सहमति से लिखी गई है।

विभिन्न राजनीतिक रंगों के मज़दूर प्रतिनिधियों की इस सम्बंध में विभिन्न राय थीं। किसी का कहना था कि मिल-मालिक का इस नई चाल में फंसना ही सरासर वेवकूफ़ी है, कोई कहता था कि ज़ालिम मालिक से किसी क़िस्म का समझौता नहीं हो सकता, क़िसी की राय थी कि मिस तारा की चिट्ठी को बहस का आधार ही नहीं बनाया ज़ाना चाहिए, क्योंकि उसे यह चिट्ठी लिखने का अधिकार ही नहीं है ; किसी का कथन था कि बस्ती-सुधार की बात इन्क़लाबी भावनाओं को गुमराह करने के लिए है, और कोई कहता था कि मिस तारा ने शहीद रघुनाथ की पत्नी तथा अन्य लड़ाका मज़दूरों को अपने साय अनोखे लाइन में लेजाकर मज़दूरों की पांत में फूट डाली है, इसलिये उसे मज़दूर-दुश्मन नं० १ करार देकर ज्यादा से ज्यादा लांछित किया जाना चाहिए। इस बहस में मार्क्सवाद, लेनिनवाद स्टालिनवाद, खुश्चेववाद, समाजवाद, गांधीवाद, विनोबा मार्ग, भारतीय साम्यवाद और जनतन्त्र-पद्धति आदि अनेक राजनीतिक मान्यताओं के हवाले दिये गए। देश-विदेश के अनेक मजदूर आन्दोलनों के इतिहास भी सामने लाये गये। जिन लोगों का यह खयाल है कि मजदूरों को राजनीति की क्या तमीज हो सकती है, वे यदि इस बहस को सुन लेते, तो उनकी आँखें खुल जातीं।

काफ़ी वहस के वाद इस तमाम प्रश्न को हल करने की जिम्मेदारी शंकर, विजय और कामरेड सीताराम पर डाली गई। बैठक की वरखास्तगी के बाद ये तीनों ही मजदूर यूनियन के दफ्तर में रह गये। कामरेड सीताराम ने तीन चाय मंगाईं। चाय की चुस्कियों के साथ तीनों नेता इस प्रश्न की ओर ध्यानस्थ हुए। कामरेड

ने कहा, "दादा, मालिक के इस क़दम को हम तरक्की पसंद नहीं मान सकते। पूंजीपति कैसे तरक्की पसंद हो सकता है ? वह अगर तरक्की पसंद हो जाय तो वर्ग-संघर्ष का उसूल ही खत्म हो जाय।"

विजय चुप न रह सका। बोला : "कामरेड, तुम हर वक्त वर्ग-संघर्ष और मार्क्सी नज़रिये की बात करते हो। इनके अलावा और भी तो शब्द हैं। इसके अलावा जिंदगी से उसूल निकलते हैं या उसूलों से जिन्दगी ?"

"विजय, तुम इस क़दर प्रतिक्रियावादी हो कि तुम्हें ये शब्द तक बर्दाश्त नहीं। हम यह आन्दोलन खुद भी चला सकते थे, तुम्हें शामिल कर लिया तो तुम समझते हो कि तहरीक की किस्मत का फ़ैसला तुम्हारे ही हाथों होना चाहिए। ग़ैर-कम्युनिस्टों का हमेशा यही रवैया रहता है कि वे कम्युनिस्टों को, उनके अच्छे सिद्धान्तों को आगे न आने दें।" कामरेड ने बीड़ी में कश मारा, लेकिन वह बातचीत के चक्कर में बुझ गई थी। कामरेड ने उसे फेंक दिया, और कहा, "मैं आगे से बीड़ी नहीं पिऊँगा।"

विजय ने कहा, "बड़ा अच्छा व्रत लिया है।"

कामरेड : "व्रत तो आप लोग ही लेते हैं। मैं तो बीड़ी छोड़ कर सिगरेट शुरू करूंगा।" और उसने दूसरे कमरे में बैठे हुए जनतासिंह को आवाज दी और यह कहते हुए "कामरेड, कैप्स्टन का एक पैकट ले आओ" जनतासिंह को एक रुपये का नोट दिया। कनखियों से विजय को देखते हुए फिर कहा : "श्यामकिशन दस रुपये रोज़ की और सेक्रेट्री पंद्रह रुपये रोज़ की सिगरेट पीते हैं। और सेठ अनोखेलाल ने तो अब बुढ़ापे के कारण सिगरेट छोड़ दी, वरना ३० रुपये रोज़ का सिगरेट पीता था। उसने हमेशा एक सिगरेट से दूसरी सिगरेट जलाई : चेन स्मोकर था।"

विजय हँस पड़ा, बोला, "कामरेड सब किस्म के आँकड़े रखते हैं।"

कामरेड ने कहा, "कम्युनिस्ट पढ़ते हैं। चीज़ों को जानते हैं। ये तो गांधीवादी और कांग्रेसी हैं कि जो बिना पढ़े ही, बिना जाने ही सर्वज्ञ होते हैं। उन्हें तो इल्हाम होते हैं।"

कामरेड यह चोट करके मुस्कराया। शंकर चुपाचाप दोनों की बात सुन रहा था। उसने आहिस्ता से कहा: "अगर पुनर्जन्म का सिद्धान्त ठीक है तो आप दोनों पिछले जन्म में सास-बहू थे।"

इस पर उन दोनों को हँसी आ गई। वातावरण फिर स्निग्ध हो गया।

फिर शंकर बोला, "सवाल दर पेश यह है कि मालिक कुछ सुधार करना चाहता है, बोनस देना चाहता है, मुआवज़ा देना चाहता है। लिया जाय या न लिया जाय? हमारी लड़ाई बेहतर जिन्दगी के लिये है। मालिक से हम माँग करते हैं, पहले वह देता नहीं, संघर्ष होता है, वह झुकता है। फिर कभी हम झुकते हैं, कभी वह झुकता है। पूँजी और श्रम की यह लड़ाई बड़ी पुरानी है। औद्योगिक दौर में यह संघर्ष खूब उभरा है। मिल-मालिक से सहूलियत लेकर हमें चुप थोड़े ही बैठना है, और अगर हम चुप बैठेंगे तो मजदूर तो चुप नहीं बैठ सकते। आज हर मज़दूर शंकर, सीताराम और विजय है। उसकी नज़र में मालिक का मुनाफा है। कच्चा माल, पक्का माल और बाज़ार जहाँ मालिक की निगाहों में है, वहाँ मजदूरों के भी। वह इतना अर्थशास्त्र समझता है। अनुभव ने, संघर्ष ने उसे काफ़ी समझ दी है, और रही-सही तुम पूरी करो।"

"दादा, बिल्कुल ठीक मार्क्सी नज़रिया है। हमारी मंज़िल इन्क़लाब है। हम इसीलिये मज़दूरों में सियासी समझ देते हैं।" कामरेड ने कहा।

"यह ठीक है, पर अब तो सियासी समझ के साथ-साथ तुम्हें अपनी भी सामाजिक और नागरिक समझ बनानी है।"

"ना दादा, यह तो बस सियासी समझ पर जिन्दा रहेंगे। इनका

जवाब नहीं। जब कुली का बेटा तेनसिंह माउंट एवरेस्ट पर चढ़ा था और अखबारों में उसके फोटो आ रहे थे, तब कामरेड का कहना था कि अखबार वाले इन्कलाब के जोश को पीछे डालने के लिये तेनसिंह को बढ़ावा दे रहे हैं। इनका इन्कलाब क्या हुआ, सनातन धर्मियों का धर्म हो गया। उसे फौरन आँच आ जाती है।" विजय ने कहा और हँस पड़ा।

शंकर ने कहा, "विजय भाई, कुछ देर ठहर जाओ। हमें मालिक से ये चीज़ें लेनी हैं। मज़दूरों की अच्छी रिहायश के लिए उसकी कोशिशों में मदद देनी है, क्योंकि उससे फायदा मज़दूरों का है। अच्छे हालात में मज़दूर आगे बढ़ता है। वह उस समाज की ओर क़दम बढ़ा रहा है, जहाँ सब काम तो शक्ति भर करेंगे और पायेंगे ज़रूरत भर।"

"गांधी जी का रामराज" विजय मुस्कराया।

"रामराज नहीं, समाजवादी व्यवस्था।" कामरेड ने तुरन्त उत्तर दिया।

"गांधी जी का रामराज यदि यही है, तो हम उसे मंजूर करते हैं।" शंकर ने हँसकर कहा।

कामरेड ने भी 'हाँ' में गर्दन हिला दी।

"फिर क्या फैसला है ? तुम बोलो, विजय।" शंकर ने गंभीरता से प्रश्न किया।

"मैं तो कहता हूँ कि मालिक की करुण भावना को मान लो और उसके पूर्ण हृदय-परिवर्तन के लिए तैयारी करो।" विजय ने गंभीर भाव से उत्तर दिया।

"और कामरेड तुम्हारा क्या कहना है ?" शंकर ने कामरेड से प्रश्न किया।

"मैंने तुम्हारा विश्लेषण बैठक में भी सुना था। उसका सारांश तुमने यहाँ भी कहा। यह पूरा वैज्ञानिक मार्क्सी नज़रिया है। मैं

महसूस करता हूँ कि हमें सियासी समझ के साथ सामाजिक और नागरिक समझ को भी साफ़ करना होगा। लेकिन सत्या के बारे में क्या सोचा ? दुश्मन तो हमारे आधार को ही ले उड़ा, और उसने हमारी खाट ही खड़ी कर दी।" कामरेड ने कहा।

"हमसे ज्यादा यह जिम्मेदारी विजय की है।" शंकर ने विजय की ओर देखा।

विजय ने कहा, "वह बेचारी नासमझ है। उसे जिन्दगी के रंगों का पता नहीं, धोखा खा गई। अब वह बग़ैर पूछे कहीं नहीं जायगी। इतना मुझे विश्वास है कि वह ऐसा जरूर करेगी।"

"बस यही चाहिए। मैंने भी उससे कहा था कि बिना पूछे किसी के साथ जाना ठीक नहीं। तुम शायद मुग्रावजे के लालच से चली गईं। इस पर वह रोने लगी। फिर बोली कि मैं आगे से धोखा नहीं खाऊंगी।" शंकर ने कहा।

"ठीक है, हमें उस पर नजर रखनी चाहिए। कई बार तहरीक डूब जाती हैं, ज़रा-ज़रा सी ग़ल्तियों से।" कामरेड ने कहा।

इस बात से सबने सहमति ज़ाहिर की। जनतासिंह सिगरेट ले आया था। कामरेड ने सिगरेट जलाई और तबीयत से पीना शुरू कर दिया।

"कहो कामरेड, बात मज़दूरों की करते हो; और सिगरेट बुर्जुवा लोगों वाली पीते हो।" विजय ने हँसकर कहा।

"तुम क्या जानो विजय। हमें समझने के लिए मार्क्सवादी साहित्य पढ़ो। लेकिन हाँ, पढ़ने पढ़ाने में तुम्हारा विश्वास कहाँ ? ज्यादा से ज्यादा पढ़ोगे तो बस गांधी जी की सत्य-अहिंसा और उनका ब्रह्मचर्य व्रत।" कामरेड ने हँस कर कहा।

शंकर अन्दर चला गया था, और जनतासिंह विजय और कामरेड की 'चोंचबाज़ी' का लुत्फ़ ले रहा था।

१२

★★★★

"जी, हाँ ! मुआवजा और बोनस बाँट दिया गया। मजदूर बड़े खुश थे।............जी, जी, जी, सब कुछ ठीक है।.........जी, कवि सम्मेलन खूब जमा।............जी, अमरीका के लिये पासपोर्ट बन गया है।........आपकी बड़ी कृपा।.........मैं आपका आभारी हूँ, श्रीमान् सेठजी।"

श्यामकिशन सेठ अनोखेलाल से टेलिफ़ोन पर बातचीत करने के बाद अन्दर के कमरे में गया और पैग लगाकर घूमने लगा, फिर धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा :

बोसे मेरी निगाह के हूरों ने ले लिये।
देखा था इक यतीम को कल मैंने ख्वाब में !!

शेर पढ़ कर हँस पड़ा। जिन्दगी में दृष्टिकोण कैसे बदल जाते हैं ! कल तक मुझे मजदूरों से घृणा थी। मैं उन्हें शत्रु मान कर चलता था। किन्तु मिस तारा ने वह बात न रहने दी ! मजदूर-उद्योग रथ का एक महत्त्वपूर्ण पहिया है। उसे भुला कर, उसकी उपेक्षा करके नहीं चला जा सकता। मजदूर खुश होगा तो काम भी अच्छा करेगा।

श्यामकिशन ने अनोखे लाइन का नक्शा उठाया और गौर से देखा : क्या खूब है ! बस्ती की काया पलट हो जायगी और वास्तव में अनोखे लाइन ही बन जायगी। कवि-सम्मेलन में उस दिन उस शायर ने गन्दी बस्तियों का ठीक ही खाका खींचा था !

नक्शा देखते-देखते, सोचते-सोचते उसके मन में एक शंका उभर

आई : मजदूरों की यदि दशा में सुधार भी हुआ, तो भी ये लड़ना तो न छोड़ेंगे ? उसका क्या इलाज ? संघर्ष तो चलेगा, अब तक जो चला है। पहले से आज मज़दूर अच्छी हालत में है, लेकिन भगवान् का धन्यवाद न करके तृष्णा का शिकार बनता ही जाता है। वह सोचता रहा, पर चिन्तन-दिशा में आगे न बढ़ सका। उसे लगा कि वह नदी के कगार पर खड़ा है, यदि एक कदम भी आगे बढ़ा तो नदी में गिर जायगा।.........नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। पैसे वाला घाटे का सौदा नहीं कर सकता। वह मजदूरों को आस्तीन का साँप नहीं बना सकता !!

इसी समय चपरासी ने आकर दो चिट दीं। आदेश हुआ कि अन्दर भेज दो। वह कुर्सी पर बैठ गया और अतिथि ज्यों ही अन्दर आये तो वह चेहरे पर मुस्कराहट ले आया।

गिरीश ने कहा—बास, क्या हाल-चाल हैं ?

श्यामकिशन प्रसन्न भाव से बोला—कृपा है।

कंटक ने कहा—यहाँ तो अन्नपूर्णा के भंडार हैं। यहाँ किस बात की कमी। इस देहली पर भाग्य फलता है, खलता नहीं।

श्यामकिशन हँस पड़ा, बोला—ये वाक्य किस पंडित से सीख आये ?

गिरीश भी हँस पड़ा, और कंटक ने भी इस हँसी में साथ दिया। कंटक में अब झेंपने की आदत न रही थी। वह अपनी उस कमज़ोरी पर विजय पा चुका था। बोला : अपने को तो पंडित और शूद्र सब की ही वाणी सीखनी पड़ती है।

गिरीश ने कहा, "लीडर जो हो।"

और इस पर फिर एक ज़ोरदार क़हक़हा लगा।

गिरीश ने श्यामकिशन से कहा, "अच्छा, आज की खबर ?"

श्यामकिशन ने एक टाइप शुदा कागज दिया, गिरीश ने उसे गौर से देख कर कहा, "मजदूरों की सब माँगें ही मान ली गईं। शानदार जीत।"

"जी, हाँ।" श्यामकिशन ने हँस कर कहा।

गिरीश को इस हँसी में व्यंग्य लगा, वह पलट कर बोला, "यह सब कैसे हुआ?"

"पैसे वाला सब खेल खेलता है। उल्टा-सीधा सब चलता है। पर एक चीज़ है, जो वह हमेशा ध्यान में रखता है कि वह जो कुछ दे रहा है, उसकी एवज में उसने लिया कितना है?" श्यामकिशन ने अहंभाव के साथ कहा।

गिरीश ने उसकी बातों पर विशेष ध्यान दिया। कंटक भी इस दर्शन को समझने की चेष्टा करने लगा और फिर दोनों ने एक साथ ही कहा, "जी!"

श्यामकिशन ने फिर कहा, "मजदूरों ने जितना खून दिया, उतना पा लिया। मालिक मजदूर के खून की कीमत देता है, मजदूर सोचता है कि मैंने लड़कर पाया है, मालिक सोचता है कि मैंने कीमत कम से कम लगाई है, और होता वास्तव में यही है कि मालिक का पासा ही सबल रहता है।" कहते-कहते वह खुद सोच में पड़ गया, पर उसके चेहरे पर धीरे-धीरे मुस्कराहट फैल गई। थोड़ी देर पहले उसके मन में जो शंका उत्पन्न हुई थी, उसका उसने अब स्वयं ही उत्तर दे दिया था: पैसे वाला जो कुछ प्रगतिशील क़दम उठाता रहा है, वह मजदूरों की कुर्बानियों का कम से कम मूल्य दे रहा है। आगे भी वह ऐसा ही करेगा। सेठ अनोखेलाल की कई बार की बात चीत से वह यह निष्कर्ष निकाल चुका था, पर नई परिस्थितियों में यह बात कुछ समय के लिये उसके दिमाग से निकल गई थी। गिरीश के प्रश्न ने उस बात को फिर स्पष्ट कर दिया। जब दिमाग में सफाई हो गई तो वह पुनः आश्वस्त

हो गया और हँसकर कहने लगा, "देखिये, मैंने बताई न मर्म की बात ?"

पत्रकार गिरीश ने पूंजीपति की इस प्रवृत्ति को बड़ी गम्भीरता से भावी संदर्भों के लिये नोट किया और नेता कंटक ने इस 'पते की बात' को अपने दिमाग में बैठा लिया : आखिर उसकी भी तो किसी दिन मिलें चलनी हैं !!

गिरीश ने हँस कर कंटक से कहा, "कंटक जी, तुम्हारी योजना तो गई खटाई में।"

"देखो, कोई रास्ता निकालेंगे। श्यामकिशन जी से गुरु-मंत्र लेंगे।" कंटक ने हँसी में ही उत्तर दिया।

श्यामकिशन ने प्रश्न किया, "क्या बात है ?"

गिरीश ने हँसते हुए कहा, "कंटक जी फरमा रहे थे कि मैं जल्दी ही पैसे वालों की यूनियन बनाऊँगा। उनका एक दिन शानदार जलूस निकालूँगा। बढ़िया-बढ़िया लिबासों में दूल्हों जैसे सुसज्जित सेठ गलों में सोने के आभूषण पहने हाथियों और खुली मोटरों में निकलेंगे, साथ बड बाजे होंगे, प्रसिद्ध गायक-गायिकाओं की मंडलियाँ होंगी, उस जलूस में हिन्दुस्तान भर के हर क्षेत्र के प्रतिनिधि होंगे, तन, मन और धन का सौन्दर्य-सागर लहरा उठेगा, और उस जलूस का नेतृत्व मैं करूँगा।......विजय के मुकाबले में नक्शा जमा रहे हैं।......लेकिन आपने जो नक्शा खींचा, उससे मामला ही उलटा हो गया। यह कुर्बानी के लिये खून किसका लायेंगे ? सेठ लोग तो बिना खून लिये धन देंगे नहीं।"

श्यामकिशन ने हंसते हुए कहा, "वैसे तो सेठों का तो हर रोज जलूस निकलता है। एसोसियेशन भी उनकी हैं। पर कंटक जी के लिये फिर भी निराशा का कोई कारण नहीं। पैसे वाला खून अपने मजदूर का माँगता है, ग्राहक का माँगता है ; पर अपनी प्रशस्ति के लिये पैसा

वह बिन खून लिये ही देता है। ये बड़े-बड़े दान-गृह, मन्दिर और धर्मशाला क्या हैं ?"

"इसका अर्थ यह हुआ कि कंटक जी को इनकी खुशामद का मुआवजा मिलेगा।" गिरीश ने हँसकर कहा।

"जी हाँ, वह तो मिलेगा। हरेक को मिलता है।" श्यामकिशन ने तीखी मुस्कराहट से कहा।

यह मुस्कराहट गिरीश के लिये व्यंग्य हो गई। वह भी खुशामदियों की सूची में है। उस के अन्दर बैठा पत्रकार जाग उठा, वह तपाक से बोला; "इसका अर्थ यह हुआ कि पैसे वाला खून भी चूसता है और सलाम भी लेता है।"

"जी, विल्कुल। पैसे की यही प्रवृत्ति है। अपने जन्म से ही पैसा खून और खुशामद से मोटा होता जा रहा हैं, श्रम उससे टकराया है पर अभी तक उसकी पार नहीं बसाई और न आगे पार बसायेगी।" श्यामकिशन नें ठहाका लगाया।

यह गिरीश पर दूसरी चोट थी। वह तिलमिला गया। उसे लगा कि आज श्यामकिशन उसे लांछित कर रहा है। श्यामकिशन उसके मनोभावों को ताड़ रहा था, वह चाहता था कि यह सब कुछ न कहा जाय, पर प्रश्न गिरीश के ही थे, जिनका सफाई के साथ वह उत्तर देने के लिये मजबूर था। उसने फिर ठहर कर स्वयं ही प्रसंग बदला, बोला, "गिरीश जी, मेरे अमरीका जाने से पहले आप सपरिवार आइयेगा, और आप भी, कंटक जी!"

गिरीश चुप रहा, कंटक ने कहा, "जरूर, अब कब जा रहे हैं ?"

"इसी महीने। इंग्लैंड और पश्चिमी योरुप भी जाऊँगा। मिस तारा का कहना है कि पूर्वी योरुप भी जाऊं। सेठ जी का अभी टेलिफोन आया था कि पैसे की परवाह न करना। मिल सारा खर्च देगा। मैं सेठ जी का बड़ा आभारी हूँ।" श्यामकिशन ने मुस्करा कर अपने सामने रखी सेठ जी की तस्वीर को देखा।

गिरीश को बात चीत में अब रस न आ रहा था। उसे लगा कि जैसे उसका दम घुटा जा रहा है। वह उठ खड़ा हुआ, बोला, "अच्छा श्यामकिशन जी, मैं चलूं। आपकी खबर भी देनी है और भी कुछ काम करना है।"

श्यामकिशन खड़ा हो गया और उसे बाहर छोड़ने आया। हाथ मिलाते समय गिरीश के हाथों में गरमी आई, किन्तु उसने उसे झटका देकर ज़मीन पर गिरा दिया और हँसता हुआ बोला, "हमें ठंड में रहने की आदत है, श्यामकिशन जी।"

श्यामकिशन हतप्रभ हो गया। यह पत्रकार का अहम् था, जिसके सामने उसको ताब न आई। उसने अपनी झेंप को मिटाकर पहलू बदला, "गिरीश जी, पैसा पत्रकारिता के सामने, विद्या के सामने, झुका है। मुझे अफ़सोस नहीं है। मैं आपकी इज्ज़त करता हूँ। आप यक़ीन मानिये कि मेरा इरादा आपको अपमानित करना नहीं था। आपने कुछ प्रश्न किये और मैंने एक मित्र के नाते सफ़ाई के साथ आपको उत्तर दिये। आपने उन्हें अपने ऊपर ले लिया। क्या मेरे साथ यह अन्याय नहीं है?" यह बात श्यामकिशन ने बड़ी विनम्रता से अपनी सब कोमल भावनाओं को समेट कर कही।

गिरीश का रुख कुछ नर्म हुआ, बोला, "खबर आपकी छपेगी, ज़रूर छपेगी। यह तो हमारा धर्म-कर्म है। पर मेरी आँखें आपने खोल दी हैं। हमारी भी अपनी यूनियन है। इसमें हमारे भाई काम करते हैं। मैंने आपसे पैसे लेकर धर्म-विरोध किया है। अब यह काम न कर सकूँगा, माफ़ करें श्यामकिशन जी। मैं आपका कृतज्ञ हूँ कि आपने अत्यन्त सरल शब्दों में पूँजीवाद का मर्म समझा दिया, उसकी खुराक बता दी : खून और खुशामद। सरमायेदारी ज़लालत का दूसरा नाम है।" अन्तिम वाक्य पूरा करते-करते गिरीश में गर्मी आ गई।

श्यामकिशन ने गिरीश के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, "भाई,

गुस्सा करने लगे। मेरा हवाला देकर वह सब कुछ लिख न देना। मैंने जो मर्म की बात बताई है, वह अपने तक ही रखना।"

"वह सब कुछ मैं लिखूँगा नहीं, आप निश्चिन्त रहें।" गिरीश ने उत्तर दिया और हाथ जोड़ कर जल्दी से चला गया।

श्यामकिशन ने उसे जाते हुए देख कर मन ही मन कहा कि ये पत्रकार कितने भावुक होते हैं! तभी इन्हें लक्ष्मी का प्रसाद नहीं मिलता। धन कमाना कठिन काम है और उसका संग्रह और भी कठिन।

उसे फिर ध्यान आया: ग़ल्ती कर गया। पत्रकारों और पढ़े-लिखे लोगों के साथ व्यवहार में भी रीति बदलनी होगी। होशियार वह, जो ज़माने के साथ पलटे। तू भी पलट 'ख़लक' कि ज़माना पलट गया।

वह कमरे में वापस आया और मुस्कराहट के साथ बोला, "कंटक जी, देर हो गई, माफ़ करना।"

"नहीं, कोई बात नहीं। मैं इस समय में जिला कमिटी को क़ाबू करने की अपनी योजना पर ग़ौर कर रहा था।" कंटक ने जवाब दिया और फिर वह काफ़ी देर तक अपनी योजना समझाता रहा। श्यामकिशन ने उसकी योजना-मीमांसा ग़ौर से सुनी और कहा, "वाह, कुछ बात हुई न? कंटक जी, कल सेक्रेट्री साहब के पास बैठकर आपकी योजना के अमली पहलू पर ग़ौर करेंगे।"

कंटक खुश हो गया और खुशी के इस दौर में ही उसने कहा, "श्यामकिशन जी, मैं आपके कहने के अनुसार वाणी विलास जी से मिला था, कहते थे कि अपनी यूनियन का अस्तित्व समाप्त करके एकता यूनियन बनाना ठीक नहीं।"

श्यामकिशन ने प्रश्न किया "फिर वह कर क्या रहे हैं, इसके लिये? 'एकता युनियन' तो नदी की तरह पहाड़ की घाटियों से निकल कर मैदान में भी आ गई है।"

कंटक ने कहा, "वह कहते थे कि विजय को बुलाऊँगा।"

"और ?" श्यामकिशन ने फिर प्रश्न किया।

"श्यामकिशन जी, यदि वह कुछ नहीं करेंगे तो हम कहीं थोड़े ही चले गये हैं। आखिर हम भी तो सियासत में ही हैं। संन्यासी तो नहीं। कुछ और लोग भी हैं, जो मज़दूरों के संगठन को देश के आर्थिक हित में नहीं समझते। एक ताक़त बनेगी, मैनेजर साहब।" कंटक ने ज़रा तेज़ी से कहा।

"हाँ, साम्यवाद और जनतंत्र को टकराना तो है ही।" श्यामकिशन ने कमर सीधी कर ली।

"बिल्कुल, तेल देखिये, तेल की धार देखिये।" कंटक ने नेता भाव से टिप्पणी की, फिर बोला, "अच्छा, मैं चलूँ। श्रममंत्री से मिलने का समय हो गया।" कंटक ने घड़ी की ओर देख कर कहा।

"जी हाँ, आप जाइये। ज़रा उनके दिमाग़ में खूब बैठा आइयेगा।" श्यामकिशन ने कहा।

कंटक गया तो श्यामकिशन ने अन्दर के कमरे में जाकर एक पैग लगाया। वह फिर घूमने लगा और अपने आगामी जीवन की कल्पनाओं में विभोर हो गया।

लक्ष्मी और गणेश दोनों की उसे कृपा मिल रही है। वह अब अमरीका और यूरोप जायगा, जहाँ नई दुनिया के शानदार नक़्शे उसके सामने आयेंगे। नये अनुभव और नये ज्ञान से संबलित होकर वह कितना अच्छा प्रशासन कर सकेगा।

वह इन कल्पनाओं से विहँस उठा और उसने कहा, "शंकर, कल तेरा नहीं, मेरा है।"

× × ×

ललितांगी सुकन्या ने क़द्दे आदम आइने के सामने अपने केश

सवारे, सौंदर्य-प्रसाधन किया और सुरुचिपूर्ण वस्त्र पहने। उसका रूप, मनोरम रूप खिल उठा। पिता श्यामकिशन ने ग़ौर से देखा: वह देवी लग रही थी।

उसने अपनी वीणा उठाई और पीछे बगीचे में आम के वृक्ष के नीचे बने सीमेंट के चबूतरे पर बैठकर वीणा-वादन प्रारम्भ कर दिया। उसने वीणावादिनी सरस्वती की वंदना गाई। पिता ने गीत को ध्यान से सुना: स्वर दिव्य भावनाओं से ओत-प्रोत थे।

श्यामकिशन चहलक़दमी करने लगा। सूर्य पूर्व दिशा में धीरे-धीरे ऊपर आने लगा। भास्कर की किरणें सुकन्या पर भी पड़ीं और वह दिवा-विभा से विभूषित हो निश्छल सरल सौन्दर्यमयी भावनाओं की प्रतिमा लगने लगी। पिता की अनुभवी आँखों ने उसे पुनः देखा, ग़ौर से देखा—कोई भी लक्षण प्रेम-राग से रंजित नहीं था।

वह अपने टेलीफोन वाले कमरे में आया और वीरभानु से उसने टेलीफ़ोन मिलाया। प्रार्थना की कि वह आज सुबह की चाय उनके यहाँ ही पिये।

वीरभानु पूरी टीम-टाम के साथ श्यामकिशन की कोठी पर पूरे ८॥ बजे उपस्थित हो गया। श्यामकिशन ने बड़ी आवभगत के साथ उसे बैठाया और हँस-हँसकर उससे बात करने लगा। फिर उसने आदेश दिया कि डाइनिंग रूम में चाय सजाई जाय।

श्यामकिशन और वीरभानु चाय पर गये तो वहाँ सुकन्या, हेमा और श्यामाकिशन की 'प्रिया' भी थीं। श्यामकिशन इस वातावरण से सदा की भाँति विभोर हो गया। यह निजता ही उसकी जीवन प्रेरणा और स्फूर्ति रही है। वह कुछ क्षणों को यह भी भूल गया कि वीरभानु को उसने किस मन्तव्य से बुलाया है। चाय का दौर चल ही रहा था कि 'प्रिया' के लिये रसोईघर से बुलावा आ गया और श्यामकिशन भी टेलीफोन पर एक जरूरी संदेश देने के लिये उठ खड़ा हुआ और चलते-

चलते उसने हेमा को बुला लिया। उसने हेमा से कहा : बेटी, हमारी डायरी ढूँढ दो। मिल नहीं रही, ज़रूरी सूचनाएँ लिखी थीं उसमें।"

वीरभानु ने इस एकांत वातावरण में पहल की। उसने अपने ठीक से संवरे हुए बालों पर हाथ फेरते हुए कहा : "सुकन्या जी, आप तो कुछ ले ही नहीं रही हैं। टोस्ट तो आपने छुए ही नहीं, बहुत अच्छे बने हैं। आपने ही तैयार किये हैं न ?" और फिर बड़े पुरतकल्लुफ़ अन्दाज़ उसने सुकन्या के सामने टोस्ट पेश कर दिये।

इस सब महफिली कौशल का दूसरे पक्ष की ओर से बहुत ही ठंडे लहज़े में उत्तर आया। लेकिन वीरभानु सुकन्या के सौंदर्य से अभिभूत हो रहा था। यह सौंदर्य, यह प्रसाधन और फिर वस्त्र-चयन, बस गजब था। सुकन्या की वेणी में लगा गुलाब का फूल अपनी डाल से हटने के बाद भी मुस्करा रहा था। उसे सुकन्या के सुकेशों में आकर शायद डाल से हटने का गम न रहा था। वीरभानु की आँखों में नशा छा गया और उससे कहे बिन रहा न गया, "सुकन्या, यहाँ सब कितना अच्छा है।"

सुकन्या ने कनखियों से वीरभानु की ओर तनिक क्रोध से देखा, वीरभानु की आँखों से जो उसकी आँखें टकराईं, तो सुकन्या तमतमा उठी। औरत की निगाह कभी धोखा नहीं खातीं। वीरभानु को यह तमतमाहट भी अच्छी लगी, जैसे प्रभात का ताम्र सूर्य ! उसने कहा, "लीजिये, पकौड़े तो लीजिये।"

और सुकन्या झिड़की भरी दृष्टि से देखकर फौरन उठ खड़ी हुई।

श्यामकिशन डाइनिंग रूम के बराबर के पार्टीशन से अपनी कन्या की इस चारित्रिक महत्ता को देखकर प्रसन्न हो उठा और उसे अपनी वंश-परंपरा और अपने परिवार के चरित्र पर गर्व हो आया। जिस संदेह के साँप ने उसे डसा हुआ था, वह उससे एक दम मुक्त हो गया और सुकन्या कमरे से निकल भी न पाई थी कि वह आगया, बोला, "कहाँ चली बेटी ?" आओ, चाचा जी को और चाय नहीं दी ?"

"मैं तो तारा दीदी के साथ सामाजिक कार्य के लिये जा रही हूँ।" सुकन्या यह कह कर तीर की तरह चली गई।

वीरभानु झेंप गया। उसने चाहा कि नीचे की जमीन फट जाय और वह उसमें समा जाय। उधर सौंदर्य ने प्रेम का अपमान किया और इधर यह "चाचा जी" : कटे पर जैसे नमक छिड़क दिया गया। बड़ी मुश्किल से संभल कर बोला, "मैं चलूँ जनाब, मुझे कुछ जरूरी काम है।"

श्यामकिशन ने मुस्कराते हुए कहा, "काम तो रोज़ लगे रहते हैं। थोड़ी सी देर बैठो। ऐसी सुबह रोज थोड़े ही आती हैं। बड़े दिन बाद इतनी फुर्सत में मिले हैं।"

श्यामकिशन का एक एक वाक्य वीरभानु के हृदय को बेंध रहा था, हाँ ऐसी मनहूस सुबह हर रोज कहाँ आती है और ऐसी बदनुमा फुर्सत बड़े दिन बाद आई है। कितनी तमन्नाओं से वह आया था, सुबह को फूलों पर गिरने वाली शबनम की तरह पर जैसे सूरज अपनी नुकीली किरणों से उसे बींध डालता है, उसी तरह से उसकी तमन्नाएँ भी बींध दी गईं।

वह उठा, अन्यमनस्क भाव से प्रणाम किया और मैनेजर की तरफ बिन देखे ही चला गया। वह मन ही मन कह रहा था :

वह हँसी हैं तो हुआ करें,
वह नाजनी हैं तो क्या करें ?
मेरी हसरतों का किया है खूँ,
मेरे दिल से वह उतर गये।

लांछित, अपमानित वह सीधा घर गया और अपने कमरे को बन्द कर बिस्तर पर लेट गया, और बहुत देर तक न जाने क्या-क्या सोचता रहा। फिर उसे महेन्द्रसेन की बात याद आई : प्रेम का चक्कर जीवन-चक्र को अच्छी तरह चलने न देगा।

उसका मानस नये संकल्पों से भर गया और उसने अपनी महत्वा-कांक्षाओं को मूर्त करने के लिये नये सिरे से यत्न करने की ठान ली।

× × ×

बोनस और मुआवजा मिलने से मजदूरों में एकता और संगठन के भाव और खूब पनप आये थे। जीत ने सद्भावनाओं को उद्वेलित करके उन्हें आगे बढ़ा दिया था। मजदूर सभा और मजदूर यूनियन के नेता शंकर और विजय ने 'एकता यूनियन' की बुनियाद रख दी थी और उन्होंने अन्य राजनैतिक दलों के छोटे-मोटे गुटों को भी अपने साथ ले लिया था। मजदूरों में यह आम धारणा बन गई थी कि पक्के संगठन और एक यूनियन से ही मजदूरों की उन्नति संभव है। वे संयुक्त संघर्ष कमिटी द्वारा बनाये गये फौलादी संगठन का फल चख चुके थे। इसीलिये बाहर के प्रभाव और अन्दरूनी तोड़-फोड़परक तत्व इस एकता यूनियन की स्थापना में बाधक नहीं बन सके थे। बढ़ती हुई तूफानी धाराओं को कौन रोक सका है?

मज़दूरों की प्रगतिशील और क्रान्तकारी भावनाओं को शंकर ने अध्ययन-गोष्ठियों के द्वारा स्थायी उन्नतिपरक विचारों का रूप देना शुरू कर दिया था। अध्ययन गोष्ठियों में नागरिक शास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिक मतवादों पर अच्छे-अच्छे लोगों के भाषण होने लगे थे।

मिस तारा सुकन्या को लेकर मजदूरों के परिवारों में सफाई का महत्व समझा रही थी। उसके साथ और भी पढ़ी-लिखी महिलाएँ आ रही थीं। शंकर ने विजय की सहायता से सत्या को समाज सेवा के क्षेत्र में निकाल दिया था और अपने परिचय की पढ़ी-लिखी और सुलझी हुई महिलाओं को सत्या के साथ लगा दिया था। 'मजदूर महिला मंडल' नामक संस्था का उदय हो गया था, और इसकी कार्यकर्त्रियाँ मिस तारा

के साधनों का भी लाभ उठा लेती थीं। मजदूर परिवारों के नीरस जीवन में एक नई जोत जग गई थी।

इस नये वातावरण से कामरेड सीताराम की खुशियों का ठिकाना न रहा था। उसने 'एकता यूनियन' के दफ्तर में जनतासिंह की कमर थपथपाकर कहा, "अब परवाह न कर कामरेड, अपनी जिन्दगी में ही मजदूर हकूमत देख लेंगे।"

"शंकर दादा के कदम तो यही कहानी बनाते मालूम पड़ते हैं।" देखो न, सब खयाल के मजदूरों को एक लड़ी में पिरो लिया। मजदूर एकता का कितना खूबसूरत हार बनाया है कामरेड।" जनतासिंह ने कहा।

"इसमें कोई शक नहीं। उसकी इन्कलाबी समझ की दाद देनी पड़ती है। इसके अलावा उसमें एक सिफ्त और है कि उसने हर मजदूर की शक्ल में एक लीडर पैदा किया हुआ है। बाकी जनतासिंह तुम और हम क्या कम काम करते हैं। लेकिन लड़ती फौजें हैं, नाम जनरल का होता है।"कामरेड सीताराम ने मुस्कराते हुए कहा।

जनतासिंह हँस पड़ा, फिर बोला, "कामरेड, तुम भी अपने नाम के बस एक ही हो।"

"जयहिंद" विजय ने अभिवादन किया।

कामरेड ने फौरन जोर से जवाब दिया, "लालहिन्द।"

विजय ने कहा, "जयहिन्द बोलना चाहिए कामरेड। हर वक्त लालहिंद, लालहिन्द क्या किया करते हो?"

"भई, बात यह है कि हम तो हैं इन्कलाबी आदमी। हमें तो लालहिन्द ही भाता है।" कामरेड ने उत्तर दिया।

"जयहिन्द के नारे से सुभाष बाबू ने देश से बाहर मुट्ठी भर जवानों को अंग्रेजों की पलटनों से टकरवा दिया। 'जयहिन्द' तुम्हारे खयाल से इन्कलाबी नारा ही नहीं। बस यही तो तुम लोगों को बिदकाते हो।" विजय ने जरा गर्मी में कहा।

"पहले जब मैं लाल सलाम कहता था, तो तुम मजाक बनाते थे। फिर मैंने क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी वालों का यह 'लालहिन्द' नारा ले लिया तो भी तुम्हें चैन नहीं। भई, गाँधी के चेलों से तो हम तंग आ गये। कभी इन्कलाबी बनते हैं तो इतने बनते हैं कि कम्युनिस्ट भी मुँह ताकते रह जाते हैं और कभी प्रतिक्रियावादी बनते हैं तो इतने बनते हैं कि देश को हजारों साल पीछे ले चलने की बात करते हैं।" कामरेड ने हँसी में कहा।

"बस यही है तुम्हारा मार्क्सी नजरिया।" विजय ने हल्का व्यंग्य किया और हँस पड़ा। जनतासिंह भी इस पर हंस पड़ा।

कामरेड सीताराम ने कुछ रुष्ट होकर कहा, "विजय भाई ऐसी बात कहकर हँसे तो हंसे, पर जनतासिंह तुम मार्क्सवादी होकर ऐसी बात पर हँसते हो। यह गलत है और एकदम गैर-मार्क्सीहै।"

इतने में शंकर भी आ गया। जनतासिंह ने कहा, "दादा, आज यह फैसला कर दो कि जिन्दगी में क्या मार्क्सी है, क्या गैर मार्क्सी है?"

"यह तो बहुत मामूली बात है जिसे कामरेड सीताराम मार्क्सी मान लें, वह मार्क्सी और जिस पर यह गैरमार्क्सी होने का फतवा दें दें, वह गैरमार्क्सी।" शंकर ने मुस्कराते हुए कहा। इस पर जोरों का ठहाका लगा।

विजय ने हँसी बन्द होने के बाद शंकर से कहा, "दादा, मैं तुमसे अगर कहूँ जयहिन्द, तो तुम जवाब में क्या कहोगे?"

"लालहिन्द" शंकर ने कामरेड की ओर मुस्कराकर देखा। इन्कलाब तो बगैर 'लाल' के हो ही नहीं सकता। हमारे एक मित्र हैं हनुमान मन्दिर के महन्त। अक्सर हमें बर्फी खिलाते हैं मंगल के दिन, वह कहते हैं कि हनुमान का लंगोट लाल, उनका झंडा लाल, इसलिये वह भारत के सबसे पहले कम्युनिस्ट थे।

इस पर एक जोरदार क़हक़हा और लगा। कामरेड भी इस हँसी में शामिल हो गया।

यहाँ हंसी मजाक चल ही रही थी कि लाला प्रवीणराम जालिम सिंह मिस्त्री के साथ आया और आते ही बोलने लगा, "मगर नहीं। मैंने कहा कि मजाक मत कर, पर नहीं माना। हजार रुपैया उठाकर दे दिया तुम्हें, शंकर भैया। कुलीनराम की मजाक की आदत गई नहीं। मैंने उससे अभी कहा, मिस्त्री जालिमसिंह भी थे, तो कहने लगा, अच्छा जाओ, शंकर दादा से ले आओ, हजार रुपैया दे देंगे। मैंने हँसी में दे दिया था।"

मिस्त्री जालिमसिंह ने 'हाँ' में 'हाँ' मिलाई। कुलीनराम कह तो यही रहा था। शंकर, विजय, कामरेड जनतासिंह इस नाटक को देखने लगे। शंकर ने हँसकर कहा, "लालाजी, वह तो बिल्कुल मजाक थी। वरना तुम्हारा लड़का चन्दे में हजार रुपये दे दे।"

"बिल्कुल शंकर दादा, तुम बड़े समझदार हो।" लाला की जान में जान आई। फिर कुछ देर रुक आहिस्ता से बोला, "लाओ दे दो रुपैया, बड़े सेठ का मुनीम उगराई को आया है। दे दूँ उसे। उधार किसी का क्यों रोका जाय?"

"जरूर दो लालाजी, पर रुपैया तो तुम्हारा लड़का ले जा चुका। कहता था कि लालाजी को बताना मत। तंग करूँगा।" शंकर ने हंसी को दबाकर कहा।

"शंकर, यह भलमनसाहत नहीं। तुम यों डाका मारते हो। मैं पुलिस में इत्तिला कर दूँगा।" लाला प्रवीणराम को शंकर की इस बात पर गुस्सा आ गया।

"तुम्हारी क़सम, लाला, वह रुपये लेगया। पूछ लो उससे। बुलवाऊँ।" शंकर ने कहा और फिर जनतासिंह से बोला, "जाओ, बुला लाओ कामरेड कुलीनराम को।"

जनतासिंह जाने लगा तो लाला प्रवीणराम ने उसे रोकते हुए कहा,

"बस जाने लगा ? रुपया भी हड़प गये, और अब मुझे घर से भी निकलवायेंगे। देखा मिस्त्री जी।"

मिस्त्री जालिमसिंह ने कहा, "लाला जी, यह राग देखते देखते हमारी तो उम्र गुजर गई। ये तो योंही............"

"खाते हैं। तुम्हारा भी घर खागये।" जनतासिंह ने क्रोध में जालिमसिंह का अधूरा वाक्य पूरा किया और एक हमला कर दिया।

मिस्त्री चुप हो रहा। जनतासिंह तो वैसे ही तेज था, और फिर इस समय तो अपनी मांद में था।

लाला प्रवीणराम ने कहा, "चलो मिस्त्रीजी, ये तो खायें भी और गुर्रायें भी।"

जब दोनों चले गये तो हँसी का फुव्वारा फूट चला। हँसी थमने के बाद शंकर ने कहा, "लाला, देखो कैसा दांव मारने आये थे ?"

"पर दादा कैसे दाँव खाये। पूरन गुरु का कहना है कि शंकर दाँव नहीं खा सकता।" जनतासिंह ने हंसकर कहा।

इस पर फिर सब हँस पड़े।

शंकर ने कहा, "कुलीनराम ने हजार रु० 'एकता युनियन को देकर हमारे शहर के मज़दूर इतिहास में एक नई बात पैदा की है। उच्च मध्यम वर्ग से भी अब खूब हमदर्द आयेंगे।"

"दादा, तुम्हारा निशाना चूकता नहीं। श्यामकिशन अमरीका जाकर भी वह बात हासिल नहीं कर सकेगा, जो तुम में है।" विजय ने हँसकर कहा।

"शंकर दादा भी रूस, चीन और पूर्वी योरुप जा रहे हैं।" कामरेड ने कहा।

"कब ?" विजय बोला।

"थोड़े ही दिनों में। हिन्दुस्तान से ट्रेड युनियनवादियों का एक प्रतिनिधि मंडल इन देशों में जा रहा है। यहाँ की ट्रेड युनियन कांग्रेस ने शंकर दादा का नाम भेजा है।" कामरेड ने हँस कर कहा, "दुनिया

खेमों में बँटी है। श्यामकिशन अपने खेमे में जा रहा है, और दादा अपने में।"

शंकर हंस पड़ा। विजय सशंक हो गया। उसने कहा, "हम तो खेमों में, शिविरों में विश्वास नहीं करते। हम तो संघर्ष की बजाय समन्वय में विश्वास करते हैं।"

"परिस्थितियों से विश्वास बनते हैं, विजय भाई। आज की परिस्थितियों ने तुम्हें हमें एकत्र कर दिया। आगे जैसी परिस्थितियाँ होंगी, उनमें अपने अनुभवों और ज्ञान के बल पर रास्ता निकालेंगे।" शंकर ने गंभीरता से कहा, "जो कुछ आगे होगा, वह तुम्हारी सलाह से ही होगा। परिस्थितियाँ हमें बनायेंगी, हम परिस्थितियों को बनायेंगे।"

इतने में प्रजा समादवादी, समाजवादी, फारवर्डब्लाक, क्रांतिकारी समाजवादी, बोल्शेविक पार्टी तथा जनसंघ के असर के कर्मठ मजदूर कार्यकर्ता भी आ गये।

शंकर ने हँस कर कहा, प्रयाग में तो तीन नदियों का ही संगम है, आज 'एकता युनियन' महासंगम बन गई है। अनोखे सूती मिल के मजदूरों ने आज देश की तमाम राजनैतिक पार्टियों को रहनुमाई दी है।

सबके चेहरों पर मुस्कराहट खेल गई, कामरेड ने नारा दिया इन्क्लाब, सबने कहा जिन्दाबाद।

इन्क़लाब ज़िंदाबाद का यह नारा गूंजते ही और भी मज़दूर आ गये। शंकर ने मुस्कराते हुए कहा कि छोटी हस्ती और छोटी बस्ती के लोग नित नयी ज़िंदगी को सँवारते हुए आगे बढ़ रहे हैं। ज़िंदगी का यह तौर मुबारक हो, मज़दूरों का यह संगठन मुबारक हो।